तेज पाक्षिक, अंक-१३ वर्ष-१९ १५ जुलाई १९८३
दीवाना
2.50
रुपये
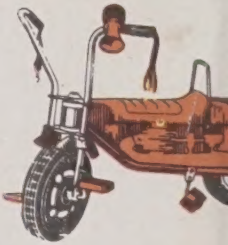
शौकिया जादूगर बनकर वाहवाही लूटिए!

101 मैजिक ट्रिक्स

आइवर यूशिएल
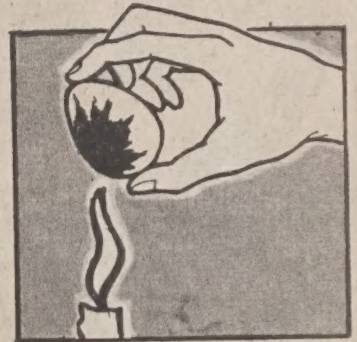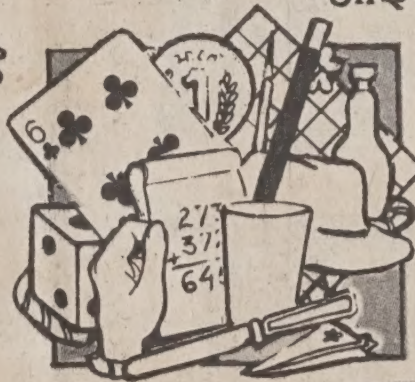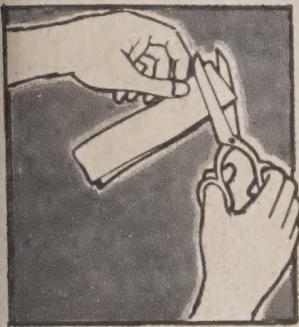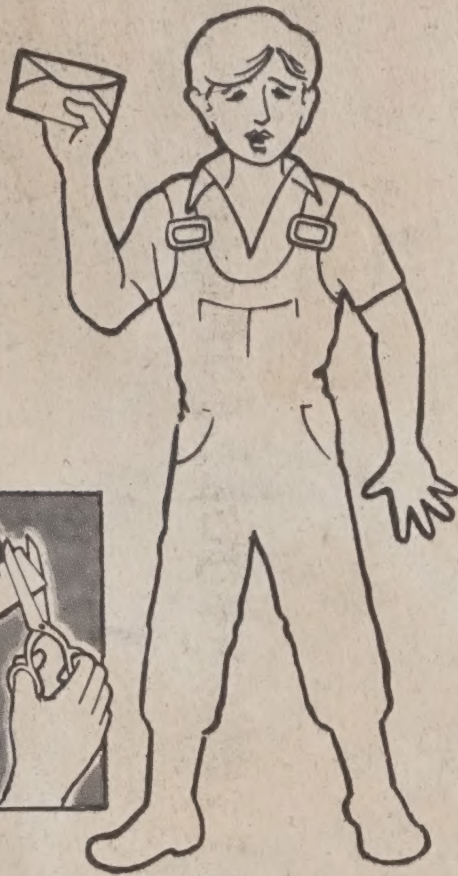
पिकनिक, पार्टी या जश्न में, या यार-दोस्तों की महफ़िल में हाथ की सफ़ाई के कमाल दिखाकर लोगों का मनोरंजन कीजिए और प्रशंसा पाइये!

इसके लिए किसी खास तामझाम की ज़रूरत नहीं- कैंची, ताश की गड्डी, डोरा, शीशे का गिलास और दो- चार सिक्के... ऐसी ही कुछ और मामूली चीज़ें जुटाइये और बस्स... शुरू हो जाइए!!

... न ज़्यादा तैयारी की ज़रूरत, न लम्बे अभ्यास की; इसकी सरल भाषा और दिये गये चित्रों की मदद से, दो-एक बार की ग़लतियों के बाद ही, आप पायेंगे कि आपने किसी पेशेवर जादूगर जैसी दक्षता प्राप्त कर ली है।...

Available in English also Price same.

प्रत्येक में बड़े साइज़ के 112 पृष्ठ

101 ट्रिक्स में से कुछ की झलक:

• स्वयं उछलने वाला हैट • टूटी माला—फिर तैयार! • खींचकर बढ़ाई गई सिगरेट • छोटे से बटुए में बड़ी सी छड़ी • वे पूछें—पेंसिल बताए • आज्ञाकारी गेंद • नोट पर सधा गिलास • गिलास पानी भरा—यहां धरा, वहां मिला • उल्टा गिलास—पानी भरा • दूध का दूध, पानी का पानी • पानी में घुलने वाला सिक्का • जादू के रंग—ताशों के संग • ख़ाली हाथ, फिर रेशमी रूमाल के साथ • कई बार तुड़ी पर जादू से जुड़ी • रस्सियों के बंधन से छुटकारा • रस्सी पर सधी गेंद • पंक्ति पढ़ना, बिना देखे ही

अपने निकट के बुक स्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुक स्टालों पर मांग करें अन्यथा वी० पी० पी० द्वारा मंगाने का पता।

पुस्तक महल® खारी बावली, दिल्ली - 110006

नया शो-रूम : 10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

प्रेम पत्र

प्रिय टोनीग्रेग,

तुम भी हैरान होगे कि कई सालों बाद तुम्हारे जैसे फटीचर अंग्रेज कप्तान को मैंने कैसा याद किया। बात ही कुछ ऐसी है जो तुम्हारे को ये प्रेम-पत्र लिखे बगैर रहा न गया। दुनिया में कौन ऐसा शख्स है जो तुम्हारी कला बाजियों से परिचित न हो। पर बी.बी.सी. टेलीविजन पर जब तुमने विलिस की टीम की धज्जियां उड़ने का हाल दर्शकों को सुनाया तो मुझे तुम्हारे पर बड़ा तरस आया। एम्पायर डेविड ईवान्स पर तो तुम नाहक ही यशपाल शर्मा को नॉट आऊट देने के लिये खफा हुये। शायद तुम नहीं जानते कि ईवान्स के पुर्खे जब भारत में थे उस समय वे पंडित यशपाल शर्मा के जिजमान थे।

तुम्हारे क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड वाले तो बहुत बड़े बेवकूफ हैं। अरे भाई ऐसे एम्पायर को वर्ल्ड कप क्रिकेट में रखकर अंग्रेजी टीम की मिट्टी पलीत कराना बेवकूफी नहीं तो और क्या है? और वह भी एक काले और गरीब देश की टीम से। लानत है उन पर।

अगर उनको अक्ल नहीं थी तो कम-से-कम याददाश्त तो उनकी अच्छी होनी चाहिये थी। जब उनके पास 'लीवर' की ग्लिसरीन का हथकण्डा इस्तेमाल करने वाला तुम्हारे जैसा कप्तान मौजूद था तो फिर उन्हों ने तुम से सलाह क्यों नहीं ली। बड़ा अफसोस है। शायद कैरी पैकर के पैसों ने तुम्हारी साख इतनी गिरा दी कि तुम्हारे अपने तुम से बेइमानी की शिक्षा लेने में भी हिचकिचाते हैं।

अब तो चिड़िया खेत चुग चुकी है। मैं तुम्हारी ज्यादा मदद नहीं कर सकता लेकिन अगले वर्ल्ड कप के लिये तुम्हें एक गुप्त सलाह भेज रहा हूं जिसे अपने बोर्ड को पहुंचा देना। उनका यकीनन भला हो जायेगा। उनसे कहना अगली बार पहले से ही दो पाकिस्तानी एम्पायरों को बुलवा लें। उनकी टीम अवश्य फाईनल जीत लेगी। यह मेरा दावा है।

सप्रेम तुम्हारा

चिल्ली

दीवाना

अंक : 13 वर्ष : 19 15 जुलाई 1983

सम्पादक ● विश्वबन्धु गुप्ता
सह सम्पादिका ● मंजुल गुप्ता
प्रोडक्शन सुपरवाईजर ● राधे लाल शर्मा
कला निदेशक ● सतीश गुप्ता
कलाकार ● नेगी, कुलदीप मथारू, उत्तरा भालेराव
जनरल मैनेजर ● रमेश गुप्ता

डिप्टी जनरल मैनेजर ● वाई. ए. शेट्टी
मार्केटिंग मैनेजर ● एम. आर. एस. मनी
प्रोडक्शन मैनेजर ● विनोद अग्रवाल
विज्ञापन मैनेजर ● जयप्रकाश गुप्ता
प्रकाशक ● पन्नालाल जैन
मुद्रक ● तेज प्रैस, नई दिल्ली
पता ● दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
फोन ● २७३७३७, २७३६१७, २७३६०७

वार्षिक चन्दा ५० रुपये
अर्द्ध वार्षिक २६ रुपये
एक प्रति २.५० रुपये

मुख पृष्ठ पर

मेजर हो या जनरल हो,
दिल है सबके सीने में।
बीवी की गुलामी की तो,
क्या रखा है जीने में।
मर्दों जैसे जीना सीखो,
रख लो लम्बी मूछें अब।
अपने आप ये पूछ लेंगी,
यहां के बाद मिलोगी कब?

महाराज ग्रापको उनकी कुछ मांगें माननी ही पड़ेंगी। जनता में उनका काफी प्रभाव फैल रहा है। लोग परांठे ग्रौर कचौरियों का ब्रेक फास्ट करते थे। ग्रब टोस्ट ग्रौर ग्रामलेट की बात करने लगे हैं।

आपका भविष्य

प. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण प. हंसराज शर्मा
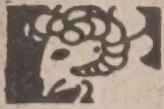
मेष : यात्रा छोड़ दें, परेशानी व्यर्थ की रहेगी, खर्चा बढ़ेगा, हालात में सुधार और कारोबार, भीआगेबढ़ेगा, लाभ अच्छा पर मिलेगा देर से।
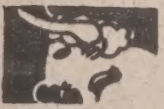
वृष : प्रगति की ओर बढ़ेंगे और सफलता भी मिलेगी लेकिन सावधानी से रहें, कठिनाइयां पेश आयेंगी, काम रूक कर बनेंगे, आय यथार्थ, कारोबार से लाभ बढ़ेगा।
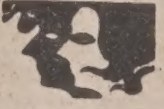
मिथुन : गुप्त शत्रु अधिक लेकिन कुछ बिगाड़ न सकेंगे, हालात सुधरेंगे, विशेष व्यय करना पड़ेगा लेकिन काम पूरे होते रहेंगे।

कर्क : कारोबार सामान्य, यात्रा सफल रहेगी—, साहस और मनोबल में कमों का अनुभव, लाभ अच्छा होने पर भी आर्थिक परेशानी होगी, यात्रा में सुख मिलेगा।
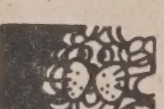
सिंह : परिश्रम बेकार, पूरा लाभ न उठा सकेंगे, कारोबार की स्थिति सुधरेगी और हालात भी आपके वश में आ जायेंगे, कठिन कामों में सफलता पाएंगे।
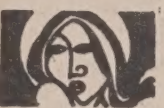
कन्या : प्रयासों में सफलता, काम बनते जायेंगे, दौड़ धूप ज्यादा और सफलता कम, व्यय अधिक, घरेलू समस्यायें भी रहेंगी।

तुला : विशेष व्यय होगा, काम बनने से खुशी, कामकाज का बोझ बढ़ेगा, लाभ भी अच्छा होगा, दौड़-धूप सफल रहेगी, व्यय यथार्थ, यात्रा लाभप्रद होगी।
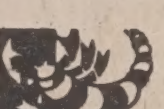
वृश्चिक : दिन संघर्षपूर्ण हैं फिर भी सफलता मिलती रहेगी, कारोबार से लाभ बढ़ने पर भी आर्थिक दशा ज्यों की त्यों रहेगी, बाधाओं पर विजय पाएंगे, यात्रा सफल होगी।
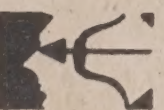
धनु : व्यर्थ की समस्याओं से परेशानी, लाभ सामान्य, आलस्य का प्रभाव रहेगा, यात्रा हो सकती है, सज्जन पुरुषों का आसरा रहेगा,
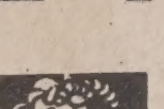
मकर : परिवार से सुख, नई वस्तुओं की खरीद, आर्थिक परेशानी रहने पर भी कामों में विशेष अड़चन नहीं पड़ेगी, कारोबार का बोझ बढ़ेगा। यात्रा छोड़ दें।

कुम्भ : विजय मिलेगी, लाभ भी आशा अनुसार होगा, संघर्ष काफी रहेगा, धार्मिक कामों में रुचि बनेगी, यात्रा अचानक।
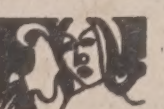
मीन : शुभ फलों की प्राप्ती होने पर भी परेशानी बनी रहेगी, खर्चा बढ़ेगा, नई योजना से व्यापार बढ़ेगा, सहयोगी अंगसंग रहेंगे, कोई खास खबर मिलेगी।
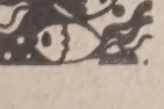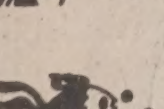
आपके पत्र

'दीवाना' पत्रिका का अंक 11 पहली बार मेरे हाथों में आया। मैंने ज्यों ही इस पत्रिका की पहली हास्य कहानी 'सुहाना सफर' पढ़ी तो हंसते-हंसते पेट फूल गया। इस पत्रिका में वह सभी सामग्रियाँ मौजूद हैं जो किसी अच्छी मैगजीन में होनी चाहियें। 'काका के कारतूस' पढ़कर बेहद आनन्द आया।

अरविन्द कुमार विश्वकर्मा—धनबाद

दीवाना का अंक 11 मिला। पढ़ने बैठा तो पता ही नहीं चला कि कब दो घण्टे बीत गए। हास्य कहानी 'सुहाना सफर' तथा 'वसीयत नामा नसीहत नामा' सटीक लगे। 'दीवाने बुत', 'चिपको आंदोलन,' 'सच्चे नाम,' व 'बदल गया सीन' बेहद पसंद आए।

धारावाहिक उपन्यास 'घर' भी अच्छा लगा। सभी स्थाई स्तंभ विशेषकर 'काका के कारतूस' व 'गरीबचन्द की डाक' तथा चना कुरमुरा' कुरमुरे थे। 'चिल्ली का प्रेमपत्र', 'चिल्ली लीला' व मुखपृष्ठ पर औरत रूपी चिल्ली को देख कर हंसी आ गई।

दिनेश कुमार चिटकारा—फरीदाबाद

दीवाना का अंक 11 मिला। मुखपृष्ठ देखते ही हम दीवाने हो गए। माचू-पीचू बोरी में लाश पढ़कर हंस-हंस कर पेट में बल पड़ गए। सिलबिल पिलपिल की छुट्टी और बदल गया सीन ने भी बहुत हंसाया। लल्लू और मदहोश पढ़कर हंसी के मारे बुरा हाल हो गया। गरीबचन्द की डाक और काका के कारतूस के जवाबों ने तो कमाल ही कर दिया। धारावाहिक उपन्यास 'घर' का भाग 5 बहुत ही ज्यादा पसंद आया इसके लिए लेखक को बधाई। रघुवीर सिंह साही—नई दिल्ली

दीवाना का नया अंक 1-15 जून बेहद इन्तजार के बाद मिला। परन्तु मुखपृष्ठ देखते ही हंसी आ गई। प्रेम-पत्र में वास्तविकता नजर आती है। धारावाहिक उपन्यास 'घर' मुझे बेहद पसन्द आया। मूवी मसाला पाठकों के लिए एक चटपटा मसाला है। जिसके बिना दीवाना फिकी-फीकी नजर आती है। गरीबचन्द की डाक रोचक होती है, काका जी के जवाब तो काबील-ए-तारीफ होते हैं।

श्याम कुमार 'झाका'—तिलक नगर

दीवाना का अंक 11 बेहद इन्तजार के बाद प्राप्त हुआ। 'माचू-पीचू और बोरी में लाश' चित्रकथा अच्छी लगी। 'बदल गया सीन' और 'सिलबिल पिलपिल' का दूसरा भाग मन को छू गया। क्यों और कैसे से हमारा ज्ञान बढ़ा। वसीयतनामा—नसीहतनामा कहानी अच्छी लगी। दीवाना को अगर आप रंगीन करदें तो उत्तम रहेगा। भले ही आप इसका मूल्य बढ़ा दें। आप 'दीवाना' में 'दीवाना-चिपकी दुबारा शुरू करें। दीपक गोदीका—तिलकनगर, जयपुर.

शीघ्र ही चिपकियां देकर आपकी इच्छा पूरी की जाएगी। सं०

दीवाना का अंक 11 मिला। मुखपृष्ठ बेहद खूबसूरत लगा। राजाजी और लल्लू ने खूब हंसाया। माचू-पीचू का नया कारनामा भी रोचक एवं हास्यप्रद लगा। चिपको आन्दोलन पढ़कर हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये। मूवी मसाला अच्छा लगा। धारावाहिक उपन्यास का पांचवां भाग भी रोचक एवं मर्मस्पर्शी रहा। हास्य कहानी 'सुहाना सफर' भी बेहद रुचिकर लगी। सुरेश मिश्रा झुनझु
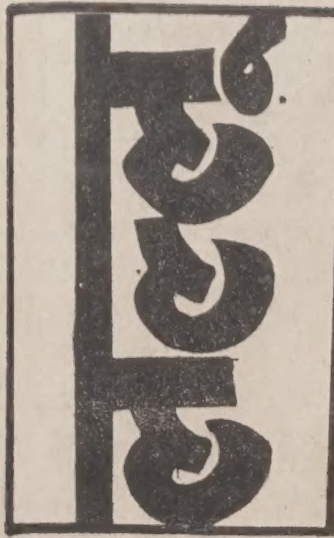
कल कालिज में प्रोफेसर साहब टेलीपैथी के बारे में जो बता रहे थे क्या वह सच हो सकता है। क्या मनुष्य बगैर मुंह खोले अपने विचार तरंगों द्वारा दूसरों तक पहुंचा सकता है? इस विषय पर पुस्तकें भी मिलती होंगी।
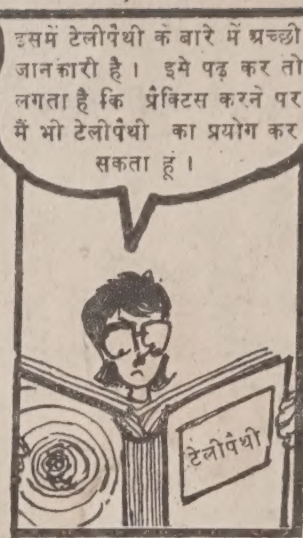
इसमें टेलीपैथी के बारे में अच्छी जानकारी है। इसे पढ़ कर तो लगता है कि प्रैक्टिस करने पर मैं भी टेलीपैथी का प्रयोग कर सकता हूं।
टेलीपैथी

धैर्य के साथ मस्तिष्क को एक बिन्दु पर केन्द्रित करने का अभ्यास करना होगा।

काफी दिन हो गए अभ्यास करते, आज जरा देखता हूं आजमा कर। मुझमें अपना संदेश विचार तरंगों द्वारा प्रेषित करने की शक्ति आ गयी है या नहीं। पहले छोटे जानवर पर करना चाहिए...वह डाल पर चिड़िया बैठी है।

उड़जा उड़जा उड़जा उड़जा उड़जा उड़जा उड़जा उड़जा

ओह। सचमुच चिड़िया उड़ गई...मेरी टेलीपैथी काम कर गयी...अब के बड़े जानवर पर ट्राई करता हूं।
TWEE TWE

कुत्ते मैं तेरी टांग तोड़ दूंगा। तेरी पूंछ जड़ से तेज कुल्हाड़ी से काट दूंगा—तेरे कान उखाड़ लूंगा।
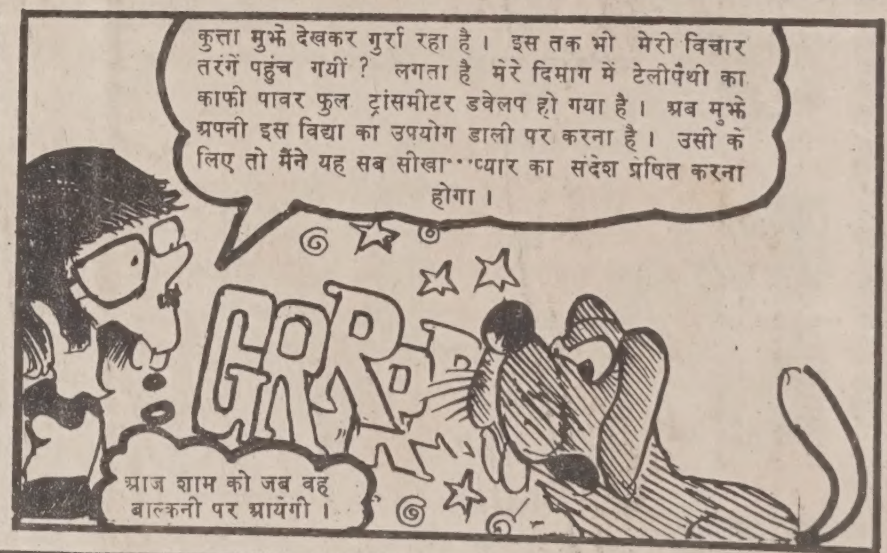
कुत्ता मुझे देखकर गुर्रा रहा है। इस तक भी मेरी विचार तरंगें पहुंच गयीं? लगता है मेरे दिमाग में टेलीपैथी का काफी पावर फुल ट्रांसमीटर डवेलप हो गया है। अब मुझे अपनी इस विद्या का उपयोग डाली पर करना है। उसी के लिए तो मैंने यह सब सीखा...प्यार का संदेश प्रेषित करना होगा।
GRRR
आज शाम को जब वह बालकनी पर आयेगी।
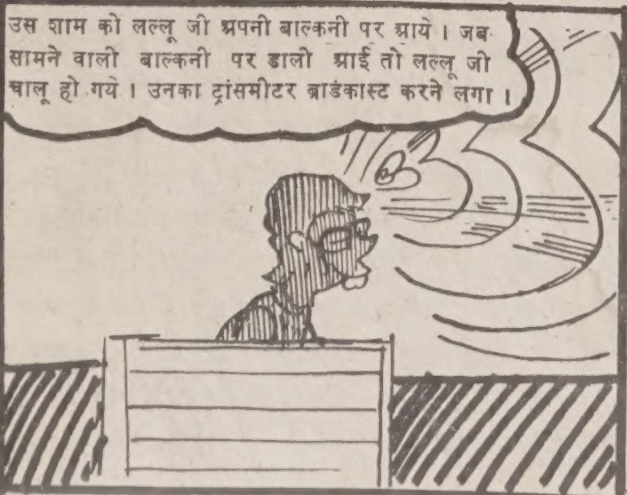
उस शाम को लल्लू जी अपनी बालकनी पर आये। जब सामने वाली बालकनी पर डाली आई तो लल्लू जी चालू हो गये। उनका ट्रांसमीटर ब्राडकास्ट करने लगा।

लेकिन लल्लू को लेने के देने पड़ जाते हैं...
डाली तो मुझसे भी ज्यादा पावरफुल टेलीपैथिक ट्रांसमिशन जानती है। मेरे प्रेम निवेदन के जवाब में विचार तरंगों द्वारा ही इतने जोर से सैंडल मार रही है कि सिर पर फुनगी निकल आई।
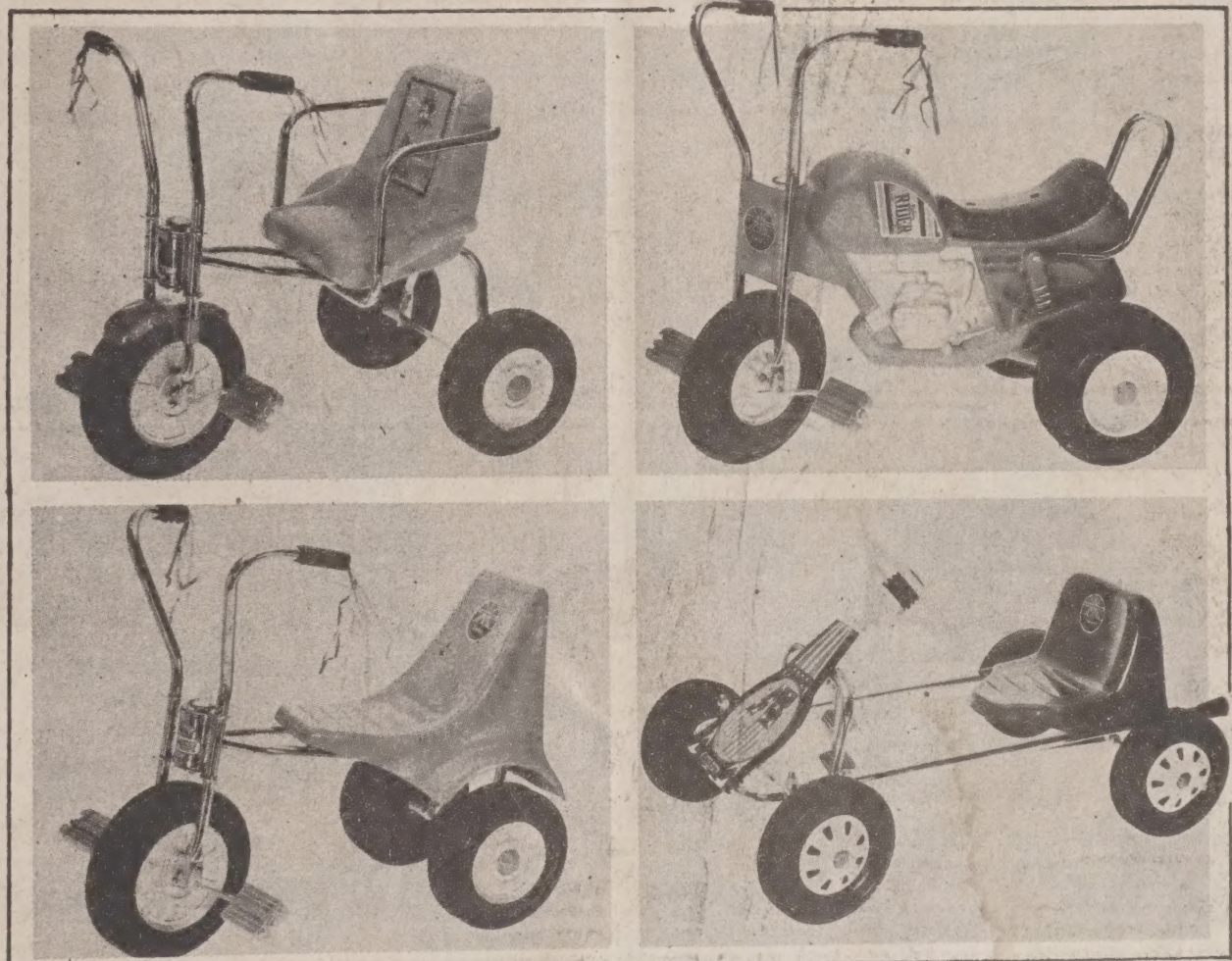
कुछ अनोखे वनमहोत्सव

फ्लर्ट वनमहोत्सव

एक फ्लर्ट लड़की का दोनों दोस्तों से मुहब्बत जताकर उनमें फूट का बीज बोना।

भाई भतीजावाद वनमहोत्सव

मंत्री का अपने किसी सगे सम्बन्धी के नाम किसी इंडस्ट्री का प्लांट लगाना।

चुगली वनमहोत्सव

बहन तुम्हारी लड़की मीना किसी लड़के के साथ कनाट प्लेस में घूम रही थी।
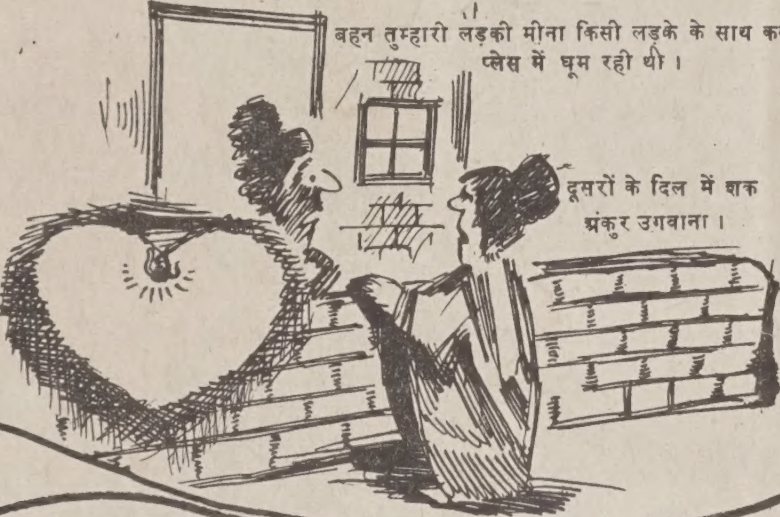
दूसरों के दिल में शक अंकुर उगवाना।

रोमान्टिक वनमहोत्सव

एक ही बस में रोज सफर करते-करते लड़के लड़की का परिचित होना और उनके दिल में प्रेम का पौधा पनपना।

अफवाह वनमहोत्सव

समाचार पत्रों में मनगढ़न्त अफवाह का आरोपण और दूसरे नेताओं से पुष्टि का पानी दिलवा-दिलवा कर सींचना।

मोहर वनमहोत्सव

कैशियर का कैश मीमोओं पर पेड लगाना।

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
खटपटे उत्तर काका हाथरसी के—

सुख चरन सिंह बेदी, कलकत्ता 37,

प्र० : दूकान का दरवाजा बाहर की ओर, घर का दरवाजा अन्दर की ओर खुलता है तो दिल का दरवाजा ?

उ० : सुन्दर सूरत देखकर, हियरा लेत हिलोर,
दिल का दरवाजा खुले, दिलवर हो जिस ओर।

भुवन कुमार जालोरी, पाली—मारवाड़

प्र० : पत्नी जब रूठ जाती है तो पति की क्या हालत होती है ?

उ० : चली जाती रूठ कर के जब कभी काकी हसीना,
बाल्टी भर लेते हैं काका, इतना आता है पसीना।
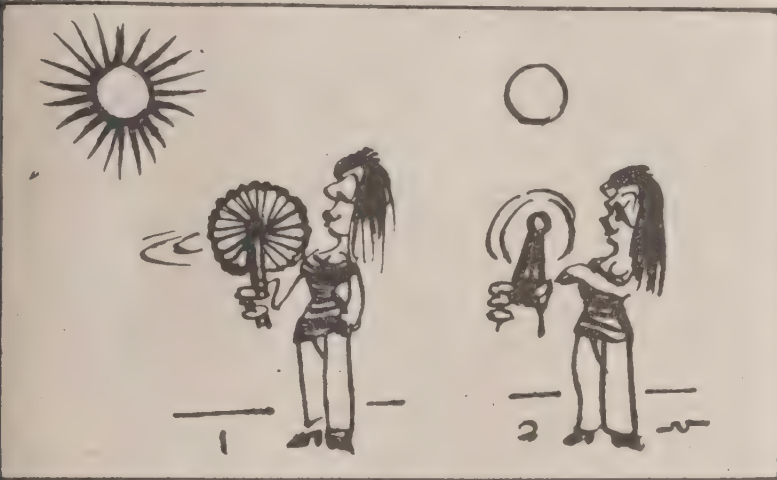
हरदीप गुलाटी, पहाड़ गंज—नई दिल्ली

प्र० : काका, कभी आपने पहलवानी करके कुश्ती लड़ी है।

उ० : उधर मिला आफर हमें, एशियाड के वक्त,
इधर बुढ़ापा आ गया, काया हुई अशक्त।

सुरेश कुमार मालवणकर, उल्हासनगर (बम्बई)

प्र० : मां अशक्त हो और बेटी सशक्त हो तो ?

उ० : पहलवान वर ढूंढ कर, करदे उसका ब्याह,
बेटी जी की शक्ति का हो जाए निर्वाह।

विनोदपुरी रंजू, लुधियाना (पंजाब)

प्र० : पति-पत्नी एक दूसरे से खुश कब रहते हैं ?

उ० : दोनों हों कंजूस या दोनों होंय उदार,
ऐसा जोड़ा खुश रहे कभी न हो तकरार।

विनय कुमार चाण्डक, सिरसा (हरियाणा)

प्र० : बाहर से रामलीला देखने के बाद जब परदे के अन्दर झांकते हैं तो कैसा लगता है ?

उ० : राम तमाखू खायें, पी रही बीड़ी सीता,
देख दृश्य यह श्रद्धा पर लग जाय पलीता।

राजकुमारी जैन, कानपुर (उ. प्र.)

प्र० : अगर इंसान हर तरह से मजबूर हो जाए तो उसे क्या करना चाहिए ?

उ० : जिस कारण से हो रहे मुद्दत से मजबूर,
दिशा बदल, आगे बढ़ो, करो निराशा दूर।

सुरेन्द्र नारायण अमरेन्द्र कुमार, दुमका (बिहार)

प्र० : एक-एक मिनट, एक-एक वर्ष के समान कब लगने लगता है ?

उ० : टाइम वो दे गई है, हम कर रहे प्रतीक्षा,
इक-इक मिनट गुजरती, इक वर्ष के बराबर।

रमेशचन्द्र राठी, बड़ीबा (राजस्थान)

प्र० : धर्म क्या है, इसका पालन कौन कर रहा है ?

उ० : धर्म का चोगा पहन, पापी मजे करते रहें,
नकली धरम के नशे में, लाठी छुरे चलते रहें।

कृष्ण कुमार गोया, जैसलमेरिया, जोधपुर

प्र० : दुःख के समय मां का नाम ही जुबान पर क्यों आता है ?

उ० : सोए हैं कोख में हम, नौ माह तलक जिसकी,
जब कष्ट पड़े तन पर, आएगी याद उसकी।

रवीन्द्र प्रसाद अकेला, आसनसोल

प्र० : काकाजी, प्रश्नों का उत्तर देते समय आप किस पोजीशन में रहते हैं ?

उ० : काकीजी के हाथ से, गरम पकौड़े खायं,
वे प्रश्नों को पढ़ें, हम उत्तर देते जायं।

विनोद कुमार साहू, रुड़की (सहारनपुर)

प्र० : फूल के टूटने और दिल के टूटने में क्या अंतर है ?

उ० : फूल टूट नीचे गिरे, नई कली उग आय,
दिल टूटे तो नया दिल, कहीं नहीं मिल पाय।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी, ऊषा, विक्रमगंज

प्र० : शांति और सन्नाटा, तूफान आने के सूचक क्यों माने जाते हैं ?

उ० : अधिक समय सुख शांति का होता है सम्मान,
शांति भंग करता तभी ईर्ष्यालू तूफान।

विनोद कुमार शर्मा, करोलबाग नई दिल्ली

प्र० : बचपन, जवानी और बुढ़ापे में क्या फर्क है ?

०० : बचपन नादानी, जवानी दिवानी,
बुढ़ापा परेशानी, यही है जिंदगी की कहानी।

अशोक चांडगोठिया, श्री गंगानगर

प्र० : नेताओं में आजकल सबसे लम्बा कौन है ?

उ० : फीता लेकर जाइए संसद में श्रीमान
नाप-नाप कर देखिए, होजाय पहिचान।

केवल प्रकाश, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : मुसीबत का सामना होने पर क्या करना चाहिए ?

उ० : आए जब मिस मुसीबत, कहदीजे चुपचाप,
शादी मेरी हो गई, लौट जाइए आप।

निखिल जैन, पहाड़ी धीरज, दिल्ली

प्र० : यदि आपके नाम आया हुआ कोई लव लैटर काकी के हाथ लग जाए तो ?

उ० : बुढ़ेपन में ईश्क का चले नहीं चक्करं,
काकी समझेगी उसे फर्जी लव लैटर।

राधेश्याम सोलंकी, अमृतसर

प्र० : पंजाब और असम में जो ऊधम चल रहा है उसका इलाज ?

उ० : कितने दिन तक चलेगी उनकी यह तहरीक,
बेलेगी जब 'चंद्रिका' करदे सबको ठीक।

बाज आए आजादी से

मूल : शौकत थानवी

लोग कहते हैं कि घोड़े बेचकर सोने वाला बड़े मज़े की नींद सोता है। हमने खैर घोड़े तो नहीं बेचे, हाँ श्रीमती जी को नैनीताल पहुंचाकर बच्चों को लेकर लखनऊ जरूर आ रहे थे। वैसे श्रीमतीजी से कुछ दिन के लिए आजाद होना घोड़े बेचने से कम बेफिक्री की बात न थी। अब रात को चाहे बारह बजे घर पहुंचें कोई पूछने वाला नहीं था और न किसी के डर से चोरों की तरह एड़ी उठाये पंजों के बल अपने घर में आने की जरूरत नहीं। अब कोई ब्रिज खेलने पर रोक लगाने वाला भी नहीं। सवेरे कच्ची नींद से झकझोर कर उठाये जाने की मुसीबत भी कुछ दिनों के लिए टल गई थी, हम दिल ही दिल में सोच रहे थे कि घर में दोस्तों का जमघट लगा रहेगा, जश्न होंगे, रंगरलियां मनायी जायेंगी। अरे हाँ, मनुष्य जीवन का क्या ठीक, न जाने कब श्रीमतीजी पहाड़ से लौट आयें। हम ये प्रोग्राम बना ही रहे थे कि मोटर एक झटके के साथ रुक गई और हम देखते हैं तो काठगोदाम आ गया है। न वो ठंडी हवा, न वो बादल और न हरियाली। मजबूर होकर होटल से उतरे, सामान उतारा। बच्चों को उतारा और कुली के साथ प्लेटफार्म पर आ गए। जहां गाड़ी तैयार खड़ी थी। कुली को मजदूरी देने के लिए जेब में हाथ डालते हैं तो बटुवा गायब, जल्दी से दूसरी जेब टटोली, फिर तीसरी, फिर चौथी और सबके बाद फिर पहली जेब से शुरू करके चौथी जेब तक पहुंच गए, और बटुवे का कहीं पता नहीं। हैंडबैग खोलकर देखा, बंधे हुए बिस्तरे को खोल डाला, टिफनकैरियर के एक-एक डिब्बे को देखा, एक-एक पूड़ी निकाल कर झाड़ी, तरकारी में तलाश किया, खूबानी और आड़ू के झाबे में देखा और तौबा कीजिये बटुवा होता तो पता चलता। आखिर सिर पकड़कर बैठ गये और याद करना शुरू किया। एकदम उछले और सरपट भागे मोटर की तरफ। मोटर अभी तक खड़ी थी, और वहां भी बटुआ न मिला। सारी रकम उसी में थी। वापसी के टिकट उसी में थे। और बगैर बटुवे के परदेश में क्या करें समझ में नहीं आ रहा था। गाड़ी छूटने का समय करीब था। कुली जान खाए हुए था कह रहा था, बाबूजी मजदूरी मिल जाती तो और मुसाफिरों को देखते आखिर बाप की इस हालत पर बड़े लड़के को रहम आया उसने पूछा कि आप क्या देख रहे हैं। हमने बेपरवाह से कहा, 'अपना सिर ढूंढ़ रहे हैं, और क्या? नहीं मालूम बटुआ कहां रह गया है।' छोटे लड़के ने कहा, कौन सा बटुआ? वह रुपयों वाला, वह तो आपने मम्मी के पास रखवाया था।'

बड़े लड़के ने कहा, 'जी हाँ! ठीक ही तो है जब आप बिस्तर बांध रहे थे तभी तो रखवाया था।'

ओ हो! बटुआ लेना भूल गय। हमारा हाल यह था न टिकट पास और न कुली को देने के लिए पैसे। आखिर हमने बच्चों की जेबें टटोलीं। दोनों के पास सवा दो रुपये निकले, मगर डूबते हुए को तिनके का सहारा बहुत होता है। कुली को पैसे दिये और हम प्लेटफार्म पर टहल-टहल कर सोचने लगे कि अब क्या करें। सोचा सामान बेचकर घर पहुंचे, फिर सोचा कि चांदी के बटन हैं बेच दें इन्हें दो तीन रुपयों से अधिक कोई नहीं खरीदेगा। और किराये के लगते हैं नौ रुपये, आखिर दिल ने कहा, परमात्मा ने तुम्हें दो-दो बच्चे दिये हैं, उंगली पकड़कर कहेंगे हम मुसाफिर है, शायद कोई दाता मिल जाये। मगर इसमें भी शक नहीं कि लोग दुत्कार देंगे कि शर्म नहीं आती, सुनहरी ऐनक है, रेशमी सूट है और चले हैं भीख मांगने। फिर सोचा हम इज्जतदार आदमी हैं कैसे किसी के आगे हाथ फैलायेंगे। हम पूर्व बातों पर विचार कर ही रहे थे कि गाड़ी ने सीटी दे दी। सामने डिब्बा आया और हम उसमें बैठ गये। रेल कर रही थी छुक-छुक और हमारा दिल कर रहा था धुक-धुक, हर स्टेशन पर मौत का इन्तजार करते थे कि अब टिकट चैकर आता होगा और अब गर्दन में हाथ डाल कर निकालेगा। हमें हर कुली टिकट चैकर मालूम होता था और हर सौदे वाले की आवाज में लगता था कि टिकट दिखाओ। जब खैरियत के साथ स्टेशन निकल जाता था तो अगले स्टेशन का धड़का लगा रहता था कि देखें अब क्या होता है? आखिर हमने यह तरकीब निकाली कि ट्रेन के ठहरते ही डिब्बे से बाहर निकल कर प्लेटफार्म पर टहलने लगते और जब गाड़ी चलने लगती तो गाड़ी में बैठ जाते मगर मौत आप जानते ही हैं भुलावे देकर आती है, सो वही हुआ। टिकट चैकर डिब्बे में आया। ताज्जुब है कि हम चीखे क्यों नहीं, ट्रेन से फांद क्यों न गये। खतरे की जंजीर भी नहीं खींची। अगर आंखों के सामने कुछ अंधेरा आ गया था, दिल धड़कने लगा था और पसीना छूट गया था, हाथ-पैर ठंडे पड़ गए थे। हमने डिब्बे से मुंह बाहर निकाला और ईश्वर को याद करने लगे। इतने में टिकट चैकर ने हमारे कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'टिकट!'

हमने कहा, 'जी क्या फरमाया?'

उसने फिर कहा, 'टिकट, ये बच्चे भी आपके साथ हैं।'

जी हां। हमारा और इनका टिकट इनकी मम्मी के पास जनाने डिब्बे में है।

टिकट-चैकर ने ताज्जुब से कहा, 'जनाने डिब्बे का टिकट मर्दाने डिब्बे में जरूर सुनते थे मगर मर्दाने का टिकट जनाने में आज ही सुना है।'

हमने सोचा वाकई बात तो ठीक है। टिकट चैकर कुछ शरीफ आदमी मालूम देता था कहने लगा, 'अच्छा बरेली जंक्शन पर दिखा दीजिएगा।'

हमने अपने मन में कहा चलो बरेली तक तो छुट्टी हुई। फिर ख्याल आया कि बरेली पहुंचकर जब झूठ खुलेगा तो टिकट चैकर क्या कहेगा। अभी टिकट चैकर गया नहीं था कि छोटे साहबजादे ने कहा, 'जनाने डिब्बे में कौन है, मम्मी तो नैनीताल में हैं?' हमने गड़बड़ा कर पहले तो उसे घूरा फिर कहकहा लगाकर बात टाल दी और बराबर थोड़ी-थोड़ी देर बाद घूरते रहे। मगर टिकट चैकर को कुछ सुबहा हो गया और हमारी तक में लग गया ···हम सोच ही रहे थे कि बरेली पर यदि सहगल साहब न मिले तो ये टिकट चैकर जान लेकर ही रहेगा।
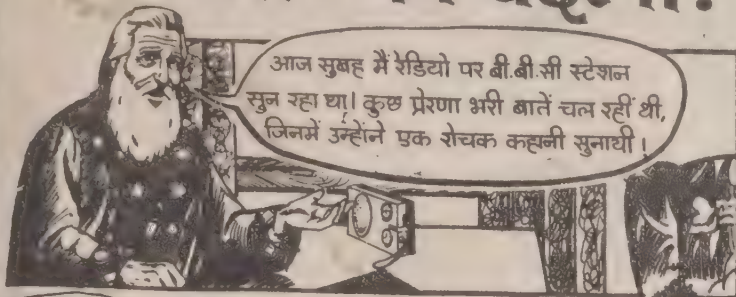
अनुवाद : तरनजीत

संसार को बदलो!

परन्तु वहाँ की ज़मीन सूख गई थी, क्योंकि सूरज की कड़ी धूप से उसे बचाने के लिए वहाँ पेड़-पौधे न थे। लोगों ने इन्हें बुरी तरह काट दिया था, इसीलिए वन्य जीवन भी वहाँ खत्म हो चुका था।

सब बस्तियाँ पुरानी हो गई थीं, और ज़मीन की बुरी हालत के कारण, बस्ती वाले भी वह जगह छोड़ कर चले गए थे।

चित्रकार: ज़ेबुलिन

हाँ, लेकिन इसमें तो ज़माना बीत जाएगा, जब तक कि ये पेड़ बढ़कर आपकी भलाई कर सकेंगे!

सच है! लेकिन किसी न किसी दिन, ये किसी का तो भला ज़रूर करेंगे।....

बीस साल बाद हमारे इसी युवक ने, चालीस वर्ष की उम्र में, इसी इलाके की दुबारा सैर की, और जो दृष्य नज़र आया उससे वह बहुत ही आश्चर्य चकित हुआ।

उसने एक बड़ी घाटी देखी, जो हर प्रकार के पेड़-पौधों से भरी हुई थी, और एक सुन्दर प्राकृतिक वन में बदल गई थी।

युवक एक रात, एक बूढ़े चरवाहे की कुटिया पर आ ठहरा। वह रात उसने वहीं गुज़ारी, और फिर कई दिन वह चरवाहे के साथ रहा।

युवक ने देखा, कि चरवाहा रात के कुछ समय, लालटेन के प्रकाश में बैठकर, बादाम, अखरोट तथा ऐसे ही अन्य बीज छाँटता रहता था।

वह बड़े ध्यान से, बीजों को परखकर, खराब बीज अलग रखता। अन्त में, अच्छे बीजों को अपनी झोली में रख लेता था।
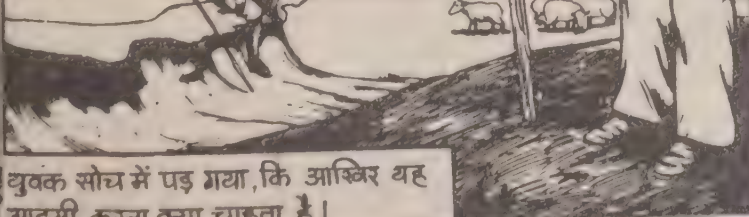
युवक सोच में पड़ गया, कि आखिर यह आदमी करना क्या चाहता है!

वह सोचने लगा कि आखिर उस बूढ़े चरवाहे का क्या हुआ? उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ, कि वह चरवाहा अब भी ज़िन्दा था! अब भी वह अपनी कुटिया में बीज छाँटता था!

सरकार भी इतनी प्रभावित हो गई कि उन्होंने बूढ़े चरवाहे को सरकारी पेन्शन दे दी! अब सारी घाटी जीवित थी, एक व्यक्ति के दृढ़-विश्वास के कारण, जो दिन प्रति-दिन, वही करता रहा, जो एक व्यक्ति कर सकता है।
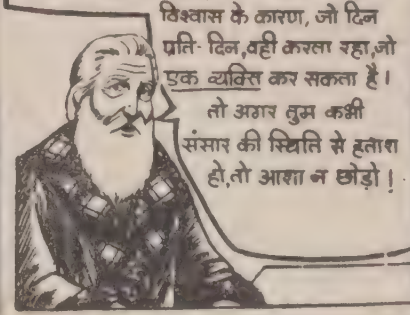
तो अगर तुम कभी संसार की स्थिति से हताश हो, तो आशा न छोड़ो!

क्योंकि अगर तुमने एक भी जीवन को बदला, तो संसार के एक छोटे भाग को बदल दिया है, और सिध्द किया है, कि पूरे संसार को बदलने की भी आशा है!

तो तुम, अपने आपसे ही शुरूआत क्यों नही करते? - तुम्हारे अपने ही दिल से, मन से, आत्मा से और अपने ही जीवन से! आज ही वह दिन है, एक नये जीवन की शुरूआत के लिए! ....यह नया जीवन, ईश्वर के तुम्हारे प्रति, प्यार की एक मुफ़्त भेंट है। ईश्वर के पुत्र येशु को, तुम्हारे दिल में आकर, उनके असीम प्यार से भर देने को कहो, और तुम पूरी तरह बदलकर एक नये व्यक्ति बन जाओगे!

फिर बाहर जाकर, संसार को बदलो! तुम स्वंय अकेले शुरूआत कर सकते हो - दिन प्रति-दिन प्यासे दिलों में ईश्वर के प्यार-भरे शब्दों से, प्यार का वह छोटा बीज बोकर! और सारे संसार में नये जीवन का चमत्कार देखो!

साभार टू कॉमिक्स

जगमोहनदास के कमरे में अभी-अभी कृष्णा और मेहरा साहब आकर बैठे थे . . .सरिता उनके लिए चाय बनाने गई थी . . .कमरे में पारो भी थीं . . .सब के चेहरे पर गहरी खुशी झलक रही थी। मेहरा साहब ने पूछा—

''तो कमल कल सुबह जा रहा है बम्बई ?''

''हां मेहरा।'' जगमोहन ने बहुत खुशी भरे स्वर में कहा, ''भगवान् से प्रार्थना करो . . .उसे यह नौकरी मिल जाए।''

''मैं कमल से इसी बारे में बात करने आया हूं।''

पारो ने कमल को आवाज दी। थोड़ी देर बाद कमल कमरे में आया . . .सुनीता भी उसके साथ थी। दोनों ने अभिवादन किया और मेहरा साहब ने जेब से एक लिफाफा निकालकर दिया। कमल ने आश्चर्य से लिफाफा देखा और उछल पड़ा, फिर मेहरा साहब को देखकर आश्चर्य से बोला—

''यह तो उसी फर्म का लिफाफा है जहां मैं इन्टरव्यू देने जा रहा हूं।''

''हां बेटे . . .उस फर्म का मैनेजर एडवानी मेरा दोस्त है . . .तुम लोगों की शादी का कार्ड भी मैंने उसे भेजा था . . .उसकी स्मृति बहुत तेज है . . .मैंने सोचा था वह इतनी बड़ी फर्म का मैनेजर है, हो सकता है अब मुझे भूल गया हो . . .लेकिन तुम्हारा प्रार्थना-पत्र पढ़कर उसे शादी का कार्ड याद आ गया। तुम्हारा नाम, डिग्री, शहर का नाम देखकर उसने मुझे पत्र लिखा है कि तुम्हारे दामाद को मैंने इन्टरव्यू काल लैटर भिजवा दिया है। अगर कमल से अधिक पोजिशन वाला कोई उम्मीदवार इन्टरव्यू में न हुआ तो शत-प्रतिशत यह नौकरी कमल ही को मिलेगी।''

''हे भगवान्!'' पारो ने खुशी से कलेजा थाम लिया।

''मेहरा . . .।'' जगमोहन ने मूंछों पर ताव देकर कहा, ''तब तो भरोसा रखो . . .यह नौकरी शत-प्रतिशत मेरे बेटे की है।''

''भगवान् जब कोई काम बनाना चाहता है तो साधन स्वयं जुटा देता है।'' कृष्णा ने मुस्कराकर कहा।

''मगर इसका सारा क्रैडिट भाभी को जाता है।'' सरिता ने कहा, ''कहते हैं विश्वास है तो भगवान है, उस दिन अगर भाभी वह नाटक न दिखातीं तो भैया के अन्दर इतना आत्मविश्वास भी न जागता . . .और फिर यह जगह भी तो भाभी ही ने ढूंढ़ी और प्रार्थना-पत्र भिजवाया।''

''सच है . . .।'' पारो ने प्यार से सुनीता को देखकर कहा, ''मेरी बहू साक्षात् लक्ष्मी है।''

सुनीता की नज़रें झुक गईं। कमल ने पत्र पढ़ लिया उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था . . .उसने पत्र मेहरा साहब की ओर बढ़ा दिया तो मेहरा साहब ने कहा—

''इसे अपने ही पास रखो . . .शायद एडवानी को

दिखाने की जरूरत पड़े . . .और हां यह और अपने पास रख लो।''

मेहरा साहब ने नोटों की एक गड्डी निकालकर कमल की ओर बढ़ाते हुए कहा—

''पूरे दो हजार रुपये।''

''दो हजार रुपये—'' कमल ने आश्चर्य से कहा, ''नहीं नहीं पिताजी—मैं यह नहीं लूंगा।''

''बेटे . . .मैंने सुनीता को दहेज नहीं दिया . . .मगर मेरे और कोई सन्तान भी तो नहीं . . .मेरा जो कुछ है सुनीता ही का है . . .बम्बई बहुत बड़ा शहर है . . .वहां तुम्हें किसी समय भी जरूरत पड़ सकती है . . .जरूरत पड़े तो खर्च करना वर्ना पड़े रहने देना . . .खर्च भी कर लोगे तो तुम पर मेरा ऋण रहेगा।''

उनके आग्रह पर कमल को रुपये रखने पड़े।

□

कमल चित बिस्तर पर लेटा हुआ था और उसके सीने पर सुनीता लेटी हुई थी . . .उसकी पलकें नींद से बोझिल हो रही थीं . . .बार-बार वह आंखें फाड़कर नींद भगाती और पहलू बदलकर कमल से जोर से लिपट जाती—कमल काफी देर से चुपचाप छत को तके जा रहा था—सुनीता ने गर्दन उठाई और फिर जरा ऊपर सरक कर उसने अपने घनेरे बाल कमल के चेहरे पर फैला दिए। कमल को ऐसा लगा जैसे भरी धूप में बादलों की ठंडी नर्म छांव चेहरे पर फैल गई हो . . .एक आनन्द दायक-सी सनसनी शरीर में दौड़ गई थी। उसने धीरे से बालों को छुआ और फिर उन्हें होंठों से लगा लिया। सुनीता ने हंसकर कहा—

''देखिए . . .कोई जूं मुंह में न चली जाए।''

कमल ने सुनीता को जोर से अपने ऊपर खींच लिया। अब दोनों की सांसें एक-दूसरे से टकरा रही थीं। सुनीता उसकी आंखों में देखती रही, फिर धीरे से झुककर उसने कमल के होंठ चूम लिए और बोली—

''क्या सोच रहे हैं?''

''तुम्हें नींद तो नहीं आ रही?''

''नींद कोई मेरी सौतन है . . .आज आएगी भी तो भगा दूंगी।''

''मैं सोच रहा हूं, जाने कितने दिनों तक हम एक-दूसरे से अलग रहेंगे?''

सुनीता ने फिर धीरे से झुककर उसके होंठ चूम लिए और बोली—

''आप तो धीरज कर लेंगे . . .मगर मुझसे धीरज कैसे होगा?''

''मैं कैसे कर लूंगा धीरज?''

''सुना है बम्बई बड़ा सुन्दर स्थान है . . .वहां स्त्रियां भी बहुत हैं . . .सुन्दर . . .हर रंग की, हर देश, हर जाति, हर स्वभाव और स्तर की।''

''क्या उनमें कोई सुनीता भी हो सकती है?''

सुनीता ने फिर उसके होंठ चूम लिए और मुस्कराकर बोली—

''मुझे सन्देह भी होता तो आपको बम्बई की ओर जाने भी न देती . . .जीवन के अठारह बरस माता-पिता के साथ गुजारे हैं मगर जो चन्द महीने आपकी बांहों में बीते हैं वही जीवन का सत्य और तथ्य हैं . . .ऐसे लगता है जैसे आपके बिना मैं अधूरी हूं . . .मेरा रोवां-रोवां,

अधूरा है।''

''सुनीता—!'' कमल ने सुनीता को जोर से सीने से लगाकर भींच लिया।

''भगवान के लिए मुझे अपने पास बुलाने में अधिक देर मत कीजिए वर्ना पता नहीं मेरे अन्दर क्या चीज टूट जाए।''

''नहीं सुनीता, मुझे तो स्वयं एक-एक पल तुम्हारे बिना सूना-सूना लगेगा . . .मेरा सबसे पहला यही प्रयत्न होगा कि जितनी शीघ्र हो सके किसी घर का प्रबंध करके तुम्हें बुला लूं।''

''मैं उस सुन्दर घड़ी की प्रतीक्षा में रोज सड़क पर आंखें बिछाए खड़ी रहूंगी।''

कमल ने सुनीता के होंठों पर होंठ रख दिए . . .और सुनीता की आंखों से आंसुओं की दो बूंदें निकल कर कमल की आंखों में समा गईं और कमल का दिल भी भर आया—उसने सुनीता को इस तरह लिपटा लिया जैसे उसे अपने ही शरीर में समा लेगा।

□

नर्म-नर्म गर्म-गर्म और आनन्द दायक-सी अनुभूति से कमल की आंखें खुल गईं . . .सुनीता उसके होंठों पर होंठ रखे उसे जगा रही थी . . .कमल ने उसे बांहों में भर लिया और सुनीता जल्दी से बोली—

''ऊं हूं . . .नो फाउल . . .यह एग्रिमैंट के किसी क्लाज में नहीं—चाय ठण्डी हो रही है।''

'' सुनीता आज तो एग्रिमैंट की यह क्लाज बदल दो . . .पता नहीं फिर कब इस एग्रिमैंट की धाराओं पर अमल हो सके।''

सुनीता की भीगी-भीगी आंखों में मुस्कराहट जाग गई और उसने कमल के होंठों पर होंठ रखकर पूर्ण रूप से आत्म समर्पण कर दिया . . .बड़ा कोमल, मधुर आत्म समर्पण . . .।

सामान तांगे में रख दिया गया था . . .दरवाजे के बाहर पारो, जगमोहन, कृष्णा, मेहरा साहब, सरिता और सुनीता खड़े थे . . .उनके चेहरे पर इस समय गहरी उदासी झलक रही थी। कमल ने एक आध बार कनखियों से सुनीता को देखा था, मगर नजरें भरकर देखने का उसमें साहस नहीं था। उसे लगता था कि वह अपने आंसुओं को नियन्त्रित न कर सकेगा . . .बड़ी मुश्किल से वह आंसुओं को रोके हुए था . . .फिर जगमोहन ने ही भारी आवाज में कहा—

जाओ बेटे . . .गाड़ी का समय हो रहा है।''

कमल ने झुककर माता-पिता और सास-ससुर के पांव छुए और उनकी आंखें भीग गईं . . .फिर उसने सरिता को प्यार किया तो सरिता अनायास रो पड़ी और कमल की आंखें भी भीग गईं . . .सरिता को चिपटाकर वह भर्राई आवाज में बोला—

''पगली . . .रोती है . . .अरे, मैं तो इस योग्य बनने जा रहा हूं कि तेरे हाथों में मेंहदी रचा सकूं।''

''भैया . . .!'' सरिता बिलख पड़ी।

फिर सभी रो पड़े . . .सुनीता के होंठों से भी हल्की-हल्की सिसकियां निकल रही थीं मगर उसने बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभाला और सरिता को अलग करके अपने से लिपटाकर कहा—

''अच्छे काम पर जाते समय रोते नहीं . . .अपने भैया को खुशी-खुशी विदा करो।''

बोलते-बोलते स्वयं सुनीता की आवाज भर्रा गई—और फिर जब कमल तांगे में सवार हुआ तो सुनीता को ऐसा लगा जैसे उसका दिल सीने से निकलकर तांगे की ओर खिंचा चला जा रहा हो . . .कोई चीज अन्दर से मजबूत डोरी द्वारा खिंची चली आ रही हो—और उसने अपने होंठ और भी सख्ती से भींच लिये।

बम्बई सैण्ट्रल स्टेशन के सैकंड क्लास वेटिंग रूम में ही कमल ने नहा-धोकर वह सूट निकाला जो सुनीता ने विशेष रूप से उसे इण्टरव्यू के समय ही पहनने का आदेश दिया था। सूट पहनकर नैक्टाई की गांठ ठीक करके जब उसने कोट की दूसरी जेब में हाथ डाला तो उसमें एक पर्चा रखा मिला। कमल ने पर्चा निकालकर पढ़ा, लिखा था—

''इण्टरव्यू के समय आंखों में निडरता, चेहरे पर आत्म-विश्वास, लगन और जोश की झलक होनी चाहिए। जिनके सामने इण्टरव्यू के लिए बैठो उन्हें एकदम गधा समझना . . .मेरी पूरी शक्ति, प्रार्थना और कल्पना तुम्हारे साथ होगी।''

तुम्हारी ही छवि
सुनीता''

कमल के होंठ खुशी से कांप उठे . . .आंखें भीग गईं—उसने सुनीता की लिखाई को एक बार चूमा और कोट की उसी जेब में रख लिया . . .फिर कुछ देर बाद वह सामान को क्लोक रूम में जमा करवा के टैक्सी में सवार फर्म के दफ्तर की ओर जा रहा था . . .उसकी कल्पना में सुनीता की ही छवि घूम रही थी और होंठ बार-बार मुस्करा उठते थे। सामने लगे शीशे में से टैक्सी ड्राइवर उसे व्यंग्यात्मक ढंग से देखकर मुस्करा रहा था जैसे सोच रहा हो कितना मूर्ख है . . .लोग बम्बई देखने के सपने देखते हैं और यह बम्बई में आकर भी बम्बई नहीं देख रहा।

□

कमल ने अनुभव किया कि टैक्सी ड्राइवर उसे अजनबी जानकर चक्कर दे रहा है . . .वह पता जानते हुए भी अनजान बन रहा है और टैक्सी का मीटर तेजी से चल रहा है। कमल ने जरा गम्भीरता से कहा—

''लगता है तुम मुझे अजनबी समझकर घुमा रहे हो . . .मेरा इण्टरव्यू का समय निकल गया तो उसका जिम्मेदार कौन होगा?''

ड्राइवर ने झट ब्रेक लगाए और नथुने फुला कर पलटकर बोला—

''ऐ बाबू! यह बम्बई है, घास-फूस नगर नहीं . . .किराया दो और रास्ता पकड़ो . . .मैंने ठेका नहीं लिया तुम्हें पहुंचाने का।''

''अरे . . .अरे . . .शिष्टता से बात करो।''

''अरे तुम उतरते हो या नहीं—।''

ड्राइवर तेजी से दरवाजा खोलकर उतरा और कमल हड़बड़ा कर जल्दी से दूसरे दरवाजे से उतर

मदहोश मदहोश मदहोश मदहोश
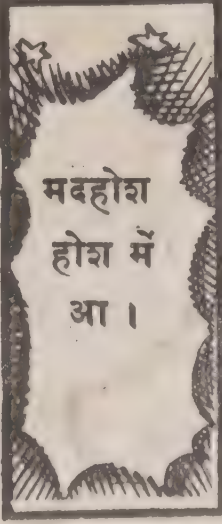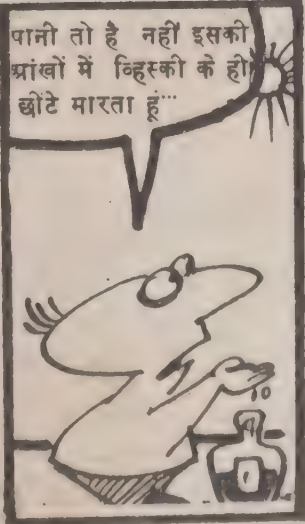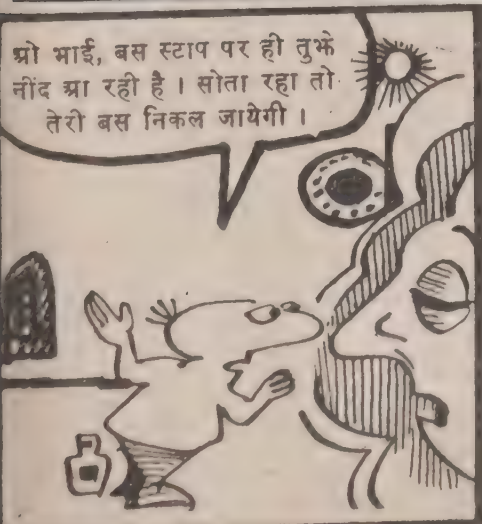
आया . . .फिर उसने जल्दी से जेब में हाथ डालकर बटुवा निकाला और मीटर देखकर उसने बिल दे दिया—ड्राइवर घृणा से उसे देखता हुआ टैक्सी में बैठा और टैक्सी चली गई . . .कमल भौंचक्का-सा रह गया . . .उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था . . .वह सोच रहा था अजीब शहर है, किसी की आंखों में मानवता ही नहीं। एका-एक किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा और कमल उछलकर मुड़ा . . .उसने सामने सस्ती-सी कमीज पतलून और जूते पहने, आंखों पर चश्मा लगाए एक अधेड़ आदमी खड़ा मुस्करा रहा था—

''कहां जाना है आपको ?'' उसने बड़ी शिष्टता से पूछा।

''जी . . .चर्च गेट।

''टैक्सी ढूंढ़ रहे हैं ?''

''जी हां—अभी-अभी बम्बई सैंट्रल से टैक्सी में चला था . . .वह यहीं रास्ते में उतारकर चला गया।''

''पहले घुमाया भी होगा।''

''जी हां।''

''बड़े बदमाश होते हैं यहां के टैक्सी ड्राइवर . . .मुझे भी चर्चगेट ही जाना है, आपके साथ चला चलता हूं।''

फिर थोड़ी देर बाद वह दोनों टैक्सी में बैठे थे। अजनबी ने कमल से बम्बई आने का कारण पूछा। कमल ने उसे बताया कि वह कौन-सी फर्म में इण्टरव्यू के लिए आया है . . .अजनबी शिष्टता से दांत निकाले सिर हिलाता रहा और ड्राइवर को रास्ता भी बताता रहा। टैक्सी फर्म की शानदार बिल्डिंग के कम्पाउण्ड में पहुंचकर रुक गई। अजनबी कमल से पहले उतर गया . . .कमल उतरकर किराया देने लगा . . .और अजनबी बिना उसकी ओर देखे उसी फर्म के दफ्तर में घुस गया जहां कमल को इण्टरव्यू देना था . . .दफ्तर के बाहर बैठे चपरासी ने उठकर बड़ी शिष्टता से उसे सलाम भी किया था और अजनबी झटके से अभिवादन का उत्तर देता चला गया था।

''सात रुपये पचास पैसे . . .।'' ड्राइवर ने रूखे स्वर में कहा।

कमल ने दस का नोट दिया तो ड्राइवर ने बड़े रूखे पन से कहा—

''छुट्टा नहीं है साहब।''

''छुट्टा तो मेरे पास भी नहीं है।''

दूसरी ओर घड़ी ने दस के घंटे बजाने शुरू किए और कमल जल्दी से दस का नोट फैंककर गेट की ओर बढ़ गया। दरबान ने उसे सिर से पांव तक इस तरह देखा जैसे वही फर्म का मालिक हो, और बोला—

''इण्टरव्यू के लिए आए हो ?''

कमल के कानों में सुनीता के शब्द गूंज रहे थे . . .उसने दरबार पर उचटती-सी नजर डाली और अन्दर दाखिल हो गया . . .फिर जब वह हाल से गुजरा तो जो व्यक्ति उसके साथ टैक्सी में आया था, एक मेज पर बैठा था . . .कमल को देखकर उसने साथ वाली मेज पर बैठे एक बाबू ने कहा—

''लोग चीफ एकाउटैंट की पोस्ट के लिए भी टैक्सी में बैठकर इण्टरव्यू देने आते हैं . . .शायद ऊपर से साहब झांक रहे हों . . .उन पर रौब पड़े।''

दूसरे बाबू ने ठहाका लगाया और वह अजनबी व्यक्ति भी कमल की ओर देखे बिना ठहाका लगाकर एक फाइल देखने लगा। कमल को बहुत गुस्सा आया लेकिन उसने अपने भाव का संयत् किया और उस वेटिंग रूम में दाखिल हो गया जहां पहले ही इण्टरव्यू के लिए आए नौजवानों की एक लम्बी पंक्ति लगी हुई थी . . .यह बेरोजगार नौजवान ऐसे तड़क-भड़क वाले सूट पहने और यूं बने संवरे आए थे मानो नौकरी के लिए नहीं बल्कि हीरो बनने आए हों। कमल को उन लोगों ने ऐसे देखा था जैसे उनके अधिकार पर डाका डालने वाला एक और आ गया हो . . .फिर किसी ने धीरे से कहा—

''क्यों भई, आज मैनेजर की पोस्ट का इण्टरव्यू है या चीफ एकाउटैंट की पोस्ट का।''

कुछ ने हल्के-हल्के ठहाके लगाये और कमल के शरीर के पोरों से पसीना रिसने लगा। वह धीरे से बैठ गया और मन में सुनीता के शब्द याद करने लगा—'आंखों में निडरता, चेहरे पर लगन, साहस और उत्साह होना चाहिए' . . .धीरे-धीरे कमल अपने ऊपर नियंत्रण पाता जा रहा था। उस के बराबर बैठे हुए उम्मीदवार ने जेब से लाइटर निकाला और मजाक उड़ाने वाले ढंग में कमल से बोला—

''भाई साहब, आपके पास सिगरेट होगी ? मैं लाइटर तो ले आया, सिगरेट केस घर भूल आया।''

''सॉरी . . .'' कमल ने बड़ी नम्रता से कहा, ''मैं सिगरेट नहीं पीता, हुक्का पीता हूं।''

हल्का-सा ठहाका लगा और लाइटर वाला बुरी तरह झेंप गया . . .कमल ने सन्तोष की सांस ली क्योंकि अब उसकी घबराहट दूर हो चुकी थी। किसी ने कानाफूसी की—

''हाई पावर वोल्टेज मालूम होते हैं।''

कमल ने कोई नोटिस न लिया . . .अब वह सन्तोष-से बैठा घड़ी देख रहा था। एक उम्मीदवार ने कहा—

''बेकार सब लोग परेशान हो रहे हैं . . .भला चीफ मिनिस्टर के पी. ए. के दामाद का सिफारिशी पत्र कहीं बेकार जा सकता है ?''

कमल ने बड़े सन्तोष से बिना उम्मीदवार की ओर देखे हुए कहा—

''केवल एक जगह बेकार गया है . . .जेब में।''

फिर हल्का-सा ठहाका लगा और वह उम्मीदवार भी भाड़े-सा मुंह फाड़े कमल को देखता रह गया। एक उम्मीदवार ने कमल से घनिष्ट होने का प्रयत्न करते हुए पूछा—

''आप कहीं बाहर से आए लगते हैं ?''

''जी हां दक्षिणी अमरीका की राजधानी टिम्बकटू से।''

सब लोग हंस पड़े और उस उम्मीदवार ने झेंपकर कहा—

''मैं गम्भीरता से पूछ रहा हूं।''

''भाई साहब, मैं सात बरस बाद तो इंगलैंड से लौटा हूं ... आक्सफोर्ड से एम. कॉम किया था ... एकाउटैंसी में डिस्टिंक्शन के साथ . . .भाई साहब से झगड़ा हो गया . . .वह भाभी के कहने पर चलते थे . . .मैं बम्बई

शेष पृष्ठ १८ पर

बन्द करो बकवास

पृष्ठ १६ से आगे
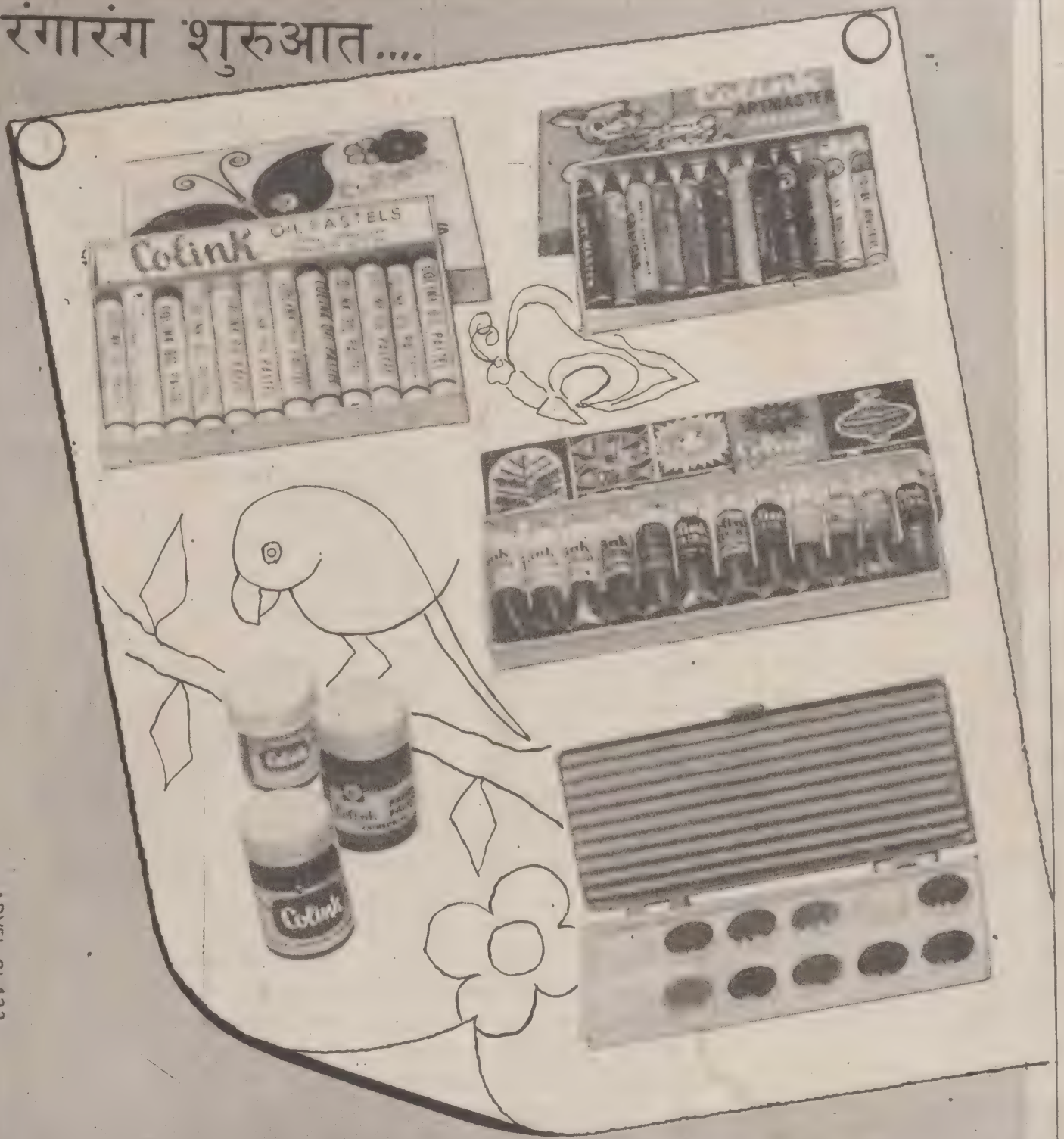
चला आया . . .फादर रिटायर्ड सैशन जज हैं . . .मम्मी कह रही थीं नौकरी के चक्कर में मत पड़ो ... दस पन्द्रह लाख रुपये लगाकर कोई फैक्टरी डाल लो। मैंने कहा कि मैं अपने पैरों पर खड़ा होकर दिखाऊंगा . . .भाई साहब समझते हैं मैं उन पर निर्भर हूं— ''

कमल ने यह सारी बातें इतनी गम्भीरता और शांति के साथ कहीं कि वेटिंगरूम में सन्नाटा फैल गया . . .सब उसकी बातों से प्रभावित नजर आ रहे थे . . .उनके चेहरे फीके पड़ गए थे . . .अब कानाफूसी तो क्या भिनभिनाहट भी नहीं गूंज रही और कमल को ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे उसने मैदान मार लिया है . . .वह इतने आत्म-विश्वास से बैठा था जैसे इस नौकरी के लिए उसे विशेष रूप से प्रार्थना करके बुलाया गया हो . . .और दूसरे भी उसे यूं देख रहे थे जैसे कमल के अतिरिक्त किसी को नौकरी नहीं मिलेगी।

थोड़ी देर बाद इण्टरव्यू आरम्भ हो गए। तीन उम्मीदवारों के बाद जब चौथा उम्मीदवार अन्दर जाने लगा तो दरवाजे पर लटकी चिक गिर पड़ी . . .उम्मीदवार ने जल्दी से चिक उठाकर फिट कर दी। आठवां नम्बर कमल का था . . .जब कमल ने अंदर जाने के लिए चिक उठाई तो चिक फिर गिर पड़ी। कमल ने पलटकर चपरासी को पुकारा—

''ऐ चपरासी . . .चिक लगाओ।''

फिर वह पलटकर बड़े सन्तोष से अन्दर दाखिल हो गया . . .अन्दर बैठे लोगों में से एक गंजे आदमी के होंठों पर भली-सी मुस्कराहट फैल गई। कमल ने सबको सम्बोधित करके बड़े आत्मविश्वास से कहा—

''गुड मार्निंग जेंन्टलमेंन।''

''ही इज अवर बॉस।''गंजे आदमी ने मेज के पीछे बैठे आदमी की ओर संकेत किया।

''बट स्टिल नाट माइन'' कमल कुछ झुककर शिष्टता से बोला—

''बट रेसपैक्टिड फार मी।''

वह लोग मुस्कराये और बास ने कुर्सी की ओर संकेत करके कहा—

''बी सिटिड प्लीज।''

''थैंक्स . . .।''

कमल बड़ी शांति से बैठ गया। बॉस ने उसकी डिग्रियां देखीं और बोला—

''तो आपने डिस्टिंक्शन किया है एम. कॉम में?''

''यस सर . . .?''

''आपने डिग्री शौक के लिए ली थी या नौकरी के लिए?''

''सर, मैंने पढ़ने के कारण डिग्री ली . . .डिग्री के लिए नहीं पढ़ा . . .और जब डिग्री ली है तो उसका प्रयोग भी जरूरी है।''

''हूं . . .आप बता सकते हैं दुनिया में गणतंत्र की नींव किसने डाली?''

''सर . . .जनसाधारण इसे 'कार्ल मार्क्स' की थ्यूरी समझता है . . .मगर वास्तव में यह थ्यूरी उसके गुरु ने न्यूयार्क के एक घटिया से होटल में बैठकर लिखी थी . . .कार्ल मार्क्स तब उसके पांव दबाता था और सेवा करता था . . .परन्तु थ्यूरी से संबंधित पुस्तक 'दास कैपिटल' कार्ल मार्क्स के नाम से छपी और उसे ख्याति मिल गई . . .आई बैग यूअर पार्डन सर . . .हम लोग शायद मूल विषय से बहक गए हैं—मैं चीफ एकाउंटैंट की पोस्ट के लिए इन्टरव्यू दे रहा हूं।''

''हूं—।'' बॉस मुस्कराया, ''आपके पास कोई पहला अनुभव नहीं?''

''सर . . .अनुभव काम करने से ही आता है . . .हर अनुभवी आदमी पहले नया ही होता है।''

''ओ.के. मिस्टर कमल . . .प्लीज वेट आउट साईड . . .।''

''थैंक्स . . .सर . . .।''

फिर जब कमल बाहर निकलकर आया तो उसका दिल खुशी से धड़क रहा था . . .उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे वह सफल हो गया हो . . .फिर वह वेटिंग रूम में आकर बैठा तो बाकी उम्मीदवार उसे आश्चर्य और घबराहट से देखने लगे। एक ने पूछा—
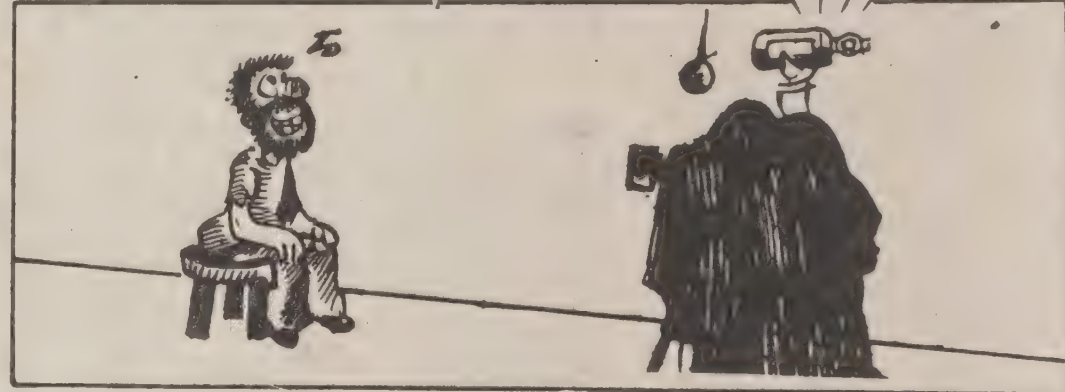
''आप कौन से होटल में ठहरे हैं?''

''अभी तो आफिस ही में ठहरने का आर्डर मिला है।'' कमल ने मुस्कराकर कहा।

सब के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं . . .और उस समय तो सबके ऊपर जैसे बिजली गिर पड़ी जब आफिस का एक चपरासी चाय की प्याली लेकर आया और कमल को बड़ी शिष्टता से सलाम करके चाय देकर चला गया। कई उम्मीदवारों के चेहरों से तो ऐसा लगता था जैसे वह सब अब रो ही पड़ेंगे . . .कमल को उन पर तरस भी आ रहा था।

लगभग दो बजे तक सब उम्मीदवार निबट गए . . .वेटिंगरूम में केवल कमल बैठा रह गया तो हाल में बैठे क्लर्कों की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। जो अधेड़ बाबू कमल के साथ टैक्सी में आया था उसने साथी क्लर्क से झुककर कहा मार ले गया।''

''अरे आपको नहीं मालूम रामचन्द जी—उसका अप्यायंटमैंट लैटर टाइप हो रहा है।''

''माई गाड!'' रामचन्द की आंखें आश्चर्य से फैल गईं।

चन्द क्षण बाद एक चपरासी आया और कमल को बुलाकर मैनेजर के कमरे की ओर ले जाने लगा तो रामचन्द ने कमल को देखकर बड़ी शिष्टता से दांत निकाल दिए और सलाम किया। कमल उत्तर दिए बिना बड़े आराम से चलता हुआ मैनेजर के कमरे में दाखिल हो गया। यह वही गंजा आदमी था . . .शायद यही एडवानी था। कमल ने शिष्टता से अभिवादन किया। एडवानी ने प्रशंसा पूर्ण मुस्कराहट के साथ उसे बिठाया और बोला—

''मुझे खुशी है कि तुम्हारी सिफारिश नहीं करनी पड़ी—वैसे तुमसे बड़ी डिग्री भी किसी और के पास नहीं थी . . .यह भी एक बहुत बड़ा प्लस प्वायंट था।''

''जी—कृपा है आपकी।''

''तुम्हारा एप्वायंटमैंट लैटर टाइप हो रहा है . . .इस फर्म की एक ब्रांच बांद्रा में खुल रही है . . .पहली तारीख से कुछ स्टाफ पुराना जा रहा है कुछ नया। तुम्हारी पोस्टिंग वहीं होगी। तुम्हारे लिए वेतन का स्केल स्वयं बॉस ने बढ़वा दिया है क्योंकि वह तुमसे बहुत खुश हैं—पन्द्रह सौ रुपये महीना तनख्वाह मिलेगी।''

कमल के दिल पर खुशी का एक जोरदार

धक्का-सा लगा मगर उसने अपने चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं आने दिया।एडवानी ने चंद क्षण बाद पूछा—

''तुम्हारे यहां रहने का भी कोई प्रबन्ध है?''

''जी—वह तो अब करूंगा।''

''ओहो . . .बम्बई में यह बड़ी कठिन समस्या है जिस से तुम्हें स्वयं ही निबटना पड़ेगा . . .मैं चालीस वर्ष से इस फर्म का मैनेजर हूं मगर अभी तक अपना फ्लैट नहीं खरीद पाया क्योंकि मेरी फैमिली बहुत लंबी है . . .दो रूम के फ्लैट में सबको एडजस्ट करना पड़ता है.।''

''कोई बात नहीं . . .मैं यह समस्या स्वयं हल कर लूंगा।''

थोड़ी देर बाद चपरासी ने टाइप हुआ अप्वायंटमैंट-लैटर कमल के सामने रख दिया, और जब कमल उस पर हस्ताक्षर कर रहा था तो असीम प्रसन्नता से उसके हाथ-पैर कांप रहे थे . . .वह सोच रहा था जब यह खबर घर पहुंचेगी तो खुशी से क्या स्थिति होगी . . .विशेष रूप से सुनीता के मन की . . .वह तो शायद खुशी से पागल ही हो जाएगी। जब हस्ताक्षर हो चुके तो एडवानी ने हाथ मिलाकर कमल को बधाई दी और चपरासी से बोला—

क्रमशः

मोचू पीचू
सेठ नासपीटा बैंक

कहानी एवं चित्रांकन: रघुबीर सिहँ

मोचू, पीचू, रगडू, और मिसकटर अखबार में इश्तिहार पढ़कर चौंक जाते हैं कि नासपीटा और डा० बोलोराम जो कई महीनों से गायब थे उन्होंने बैंक खोल लिया है और डा० बोलोराम उस बैंक के मैनेजर हैं।
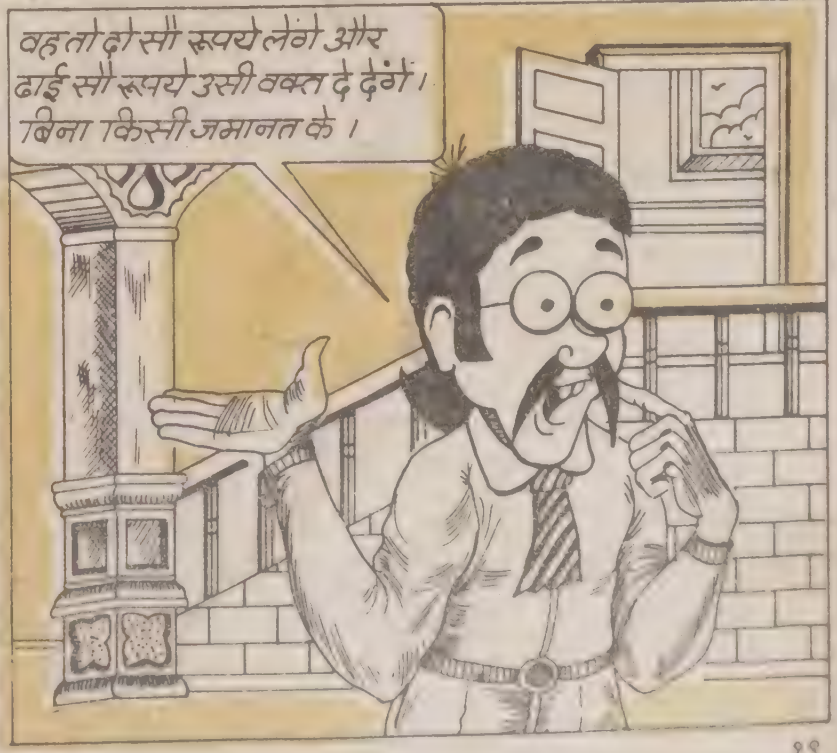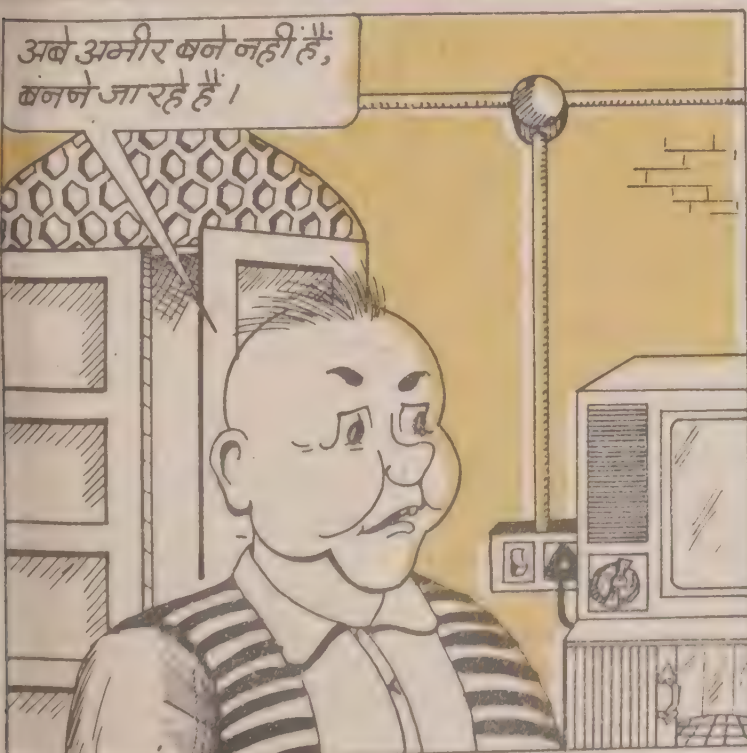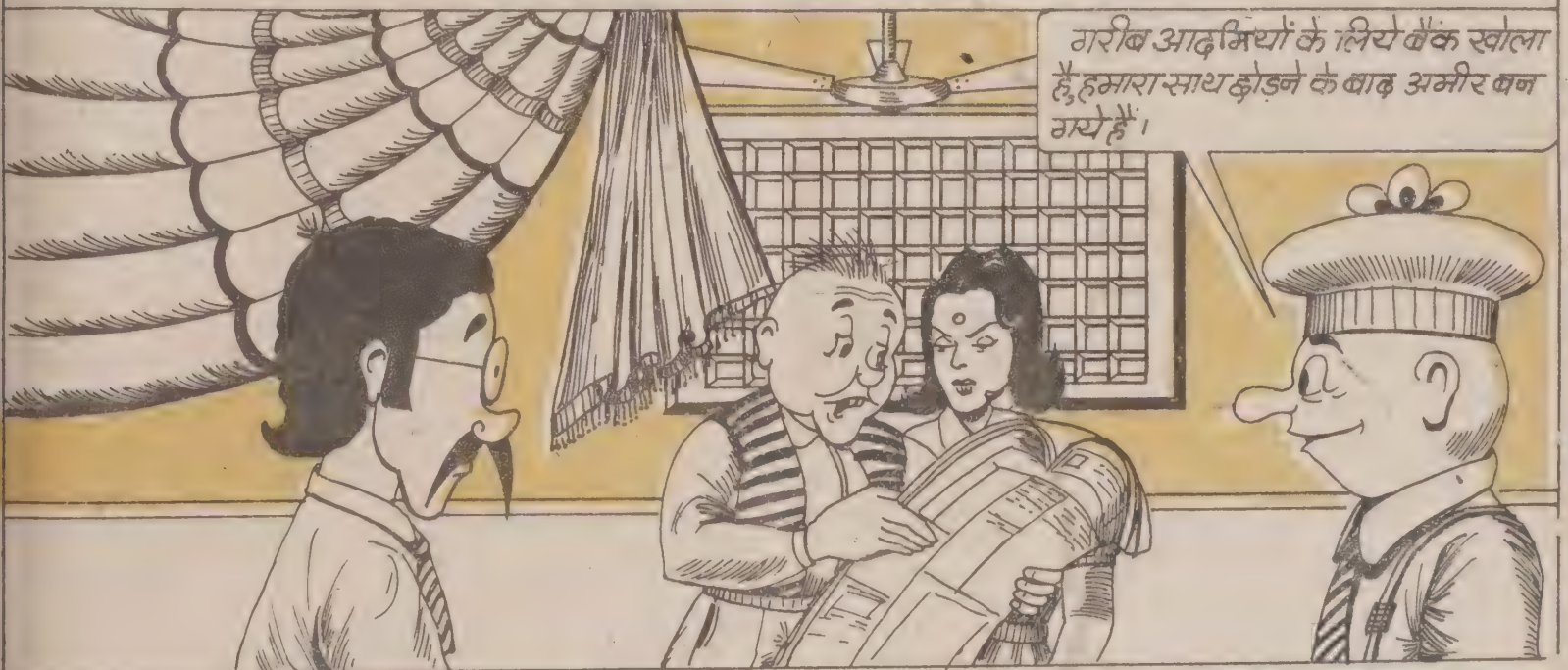
लिखा तो साफ है कि चाहे आप आठ सौ रूपये इस खिड़की में जमा करायें और साथ वाली खिड़की से एक हजार रूपये ले लें।
मुझे तो दाल में कुछ काला लगता है।
मुझे तो सारा ही काला लगता है।
इसका मतलब यह गरीबों की मदद नहीं कर रहे बल्कि लोगों को मोटा रगड़ा देंगे।
यार, हमारे दोस्त कड़की के मारे आज सेठ बन गये हैं।
मैं इनका पूरा प्लान समझ गया हूँ।
चलो हम भी आठ-आठ हजार रूपये जमा करा कर दस-दस हजार रूपये साथ वाली खिड़की से ले आयें।
यदि हमारे पास आठ-आठ हजार रूपये होते तो हम भी उनकी तरह बैंक खोल लेते और लोगों को दो सौ रूपये जमा कराने पर तीन सौ रूपये उसी वक्त दे देते।
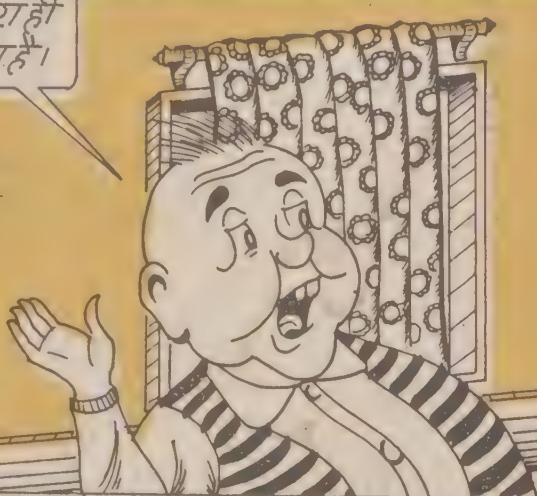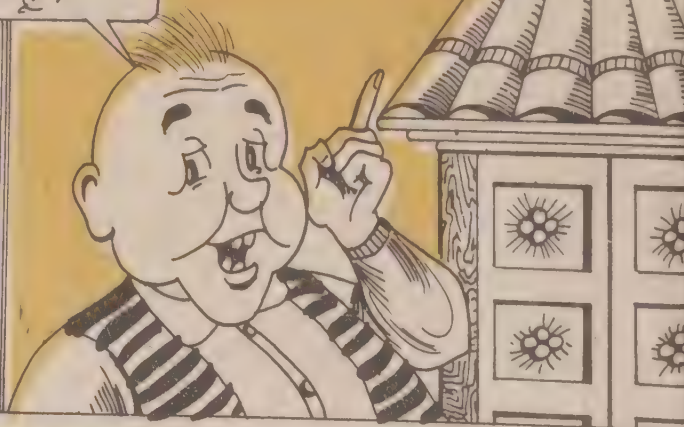
सरी ओर नासपीटा और डा० बोलोराम बैंक में बैठे हैं नासपीटा रूपया जमा कर रहा है, रूपया जमा कराने और लेने वालों की लाईन लगी हुई है ।
भी नासपीटा के पास एक आदमी आकर कहता है–
नासपीटा जी आप मेरा एक लाख ाठ हजार रूपया जमा कर लें और मुझे दो लाख रूपये दे दें ।
देखिये हमने ये बैंक गरीबों की मदद करने के लीये खोला है। सेठों के लीये नहीं ।
यदि आप पैसा जमा कराना चाहते ही हैं तो आप हमारे बैंक के मैनेजर डा० बोलोराम जी से मिल लें ।
वह आदमी डा० बोलोराम के पास जाता है ।
बोलोराम जी राम राम ।
बोलो क्या बात है ?
हुजूर मैं बहुत गरीब आदमी हूँ कृपया आप मेरा एक लाख साठ हज़ार रूपया अपने बैंक में जमा करके मुझे दो लाख रूपया दे दें ।
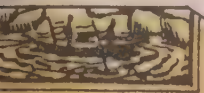
आपका केस बड़ा कमप्लीकेटिड है फिर भी आप रूपये जमा करा दें मैं अगले महीने आपको दो लाख रूपये दिलवा दूँगा क्योंकि इतनी बड़ी रकम के लिये मुझे चेयरमैन और डायरैक्टरों से इजाजत लेनी पड़ेगी।
आप की बहुत, बहुत मेहरबानी, मैं अपना रूपया अभी जमा करा देता हूँ।
गरीबों की मदद करना तो मेरा फर्ज़ है आप जैसे बीस-पच्चीस ऐसे गरीब और हों तो मैं उन्हें भी रूपये दिला कर पुन्य कमा लूँ।
हुज़ूर कल मैं तीस
और लेकर आऊँगा आप
पर भी कृपा करना।
कल दो बजे से पहले-पहले आ जाये मैं सबके खाते खुलवा दूँगा यदि लेट हो गये तो बड़ी मुश्किल होगी क्योंकि कल बड़े खाते खोलने की आखिरी तारीख है।
जी बहुत अच्छा।
तभी एक दिन मान्चू अखबार मे पढ़ कर चिल्लाता है-
सेठ नासपीटा बैंक फेल हो गया है, करोड़ों रूपयों का हेर फेर, मालिक फरार।
दे गये न लोगों को मोटा रगड़ा।
तेज़

अब वो करोड़ पति बन गये हैं। हमें फिर से उनसे दोस्ती कर लेनी चाहिये।
दोस्ती करने के लिये हम उन्हें ढूंढेंगे कहाँ? पूरे हिंदुस्तान की पुलिस तो उन्हें ढूंढ नहीं सकी। हम कहाँ ढूंढेंगे उन्हें?

अभी वो बातें कर ही रहे होते हैं कि वहाँ इंस्पैक्टर घोष आजाते हैं। उन्हें देखकर कटर कहती है-

आईये मि० घोष, आप का स्वागत है।
ये स्वागत का समय नहीं है। मुझे तो इस समय आपकी मदद की जरूरत है।

आप हुक्म कीजिये। हम सब आपकी सेवा के लिये तैयार हैं।

आपके दोस्त नासपीटा और डा० बोलोराम लोगों के करोड़ों रूपये लेकर भाग गये हैं उन्हें पकड़ना है।
आप हमें उनका एडरेस दे दें। हम उन्हें अभी पकड़ लाते हैं।

हाँ मि० घोष, रगडू ठीक कह रहा है। आप सिर्फ इतना काम कर दें बाकी हम सब आपका काम कर देंगे।

पहली बात तो ये है कि आपको खर्चे की कोई कमी नहीं आयेगी। दूसरे, जैसा मैं कहता जाऊँ आप वैसा ही करते जायें।
बहुत अच्छा।

दूसरी ओर नासपीटा अखबार पढ़कर चौंक जाता है और डा० बोलोराम से कहता है –
अरे डा० हम सोचते थे हम ही करोड़पति बन गये हैं पर हमारे दोस्त हमसे भी नम्बर ले गये हैं। अखबार में साफ लिखा है कि माघू, पीचू, रगड़ू और मिस्कटर सेठ दीनानाथ के करोड़ के हीरे लेकर फरार हैं।
अरे फिर तो उनको ढूंढ़ना चाहिये। उनसे हमें कुछ हीरे खरीद लेने चाहियें। वो हमें हीरे सस्ते दामों में दे देंगे। हैं तो आखिर वो सभी बेवकूफ।
बिल्कुल ठीक बात है अगर वो हमें हीरे नहीं देंगे तो हम उन्हें पुलिस की धमकी देंगे।
मगर वो इस वक्त कहाँ होंगे? हम उन्हें ढूंढ़ेंगे कहाँ?
आईडिया!
ये कहते ही नासपीटा तेज़ अखबार वालों को टेलीफोन करता है –
हैलो, जो मि० नासपीटा और डा० बोलोराम लोगों के करोड़ों रूपये लेकर फरार होगये थे वह आजकल दिल्ली शहर में झिलमिल कालोनी के अपने पुराने अड्डे में छिपे हुये हैं।
अबे इससे क्या होगा?
अरे पगले ये खबर अखबारों में छपते ही हमारे दोस्त हमसे जरूर मिलने आयेंगे।
तुम्हारा आईडिया बढ़िया है। दोस्त हमें ढूंढ़े न ढूंढ़े, पर पुलिस हमें जरूर ढूंढ़ लेगी।
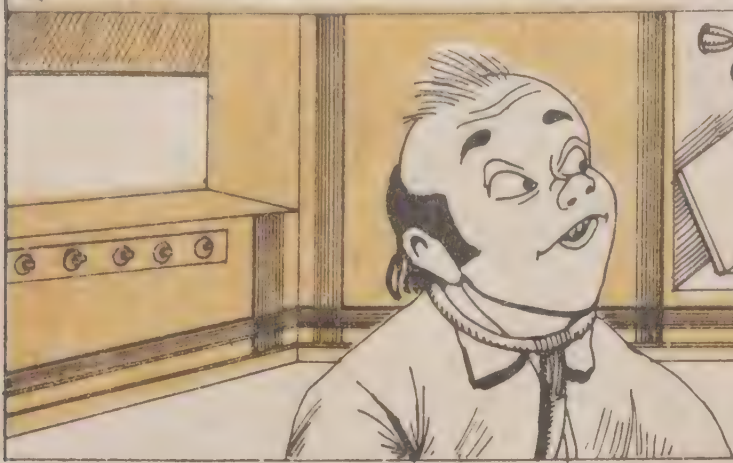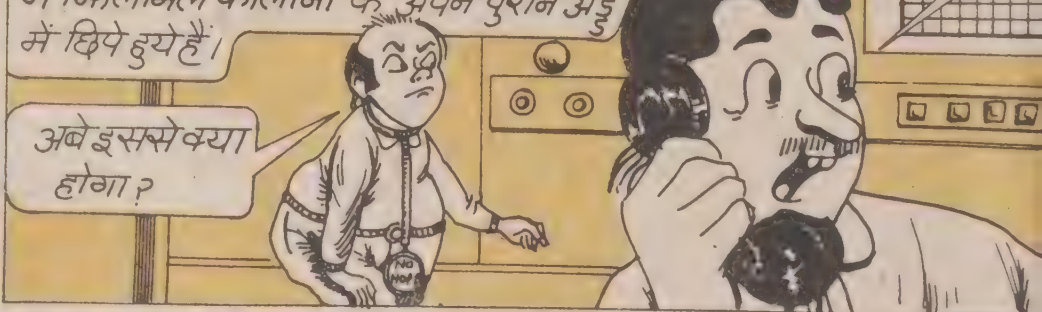
शेष पृष्ठ ३३ पर

प्र० : चांदी रखने से काली क्यों पड़ जाती है ?

उ० : हवा में मिश्रित सलफर या गन्धक जो खाने बनाने या कमरे इत्यादि गर्म करने के लिये जलाये कोयले से वायु में आ जाती है, चाँदी पर धब्बे या कालापन उत्पन्न करती है। चांदी या सिलवर सलफर के साथ मिलकर काली सिलवर सलफाईड बनाती है। यही सिलवर सलफाईड कभी-कभी अंडे की जर्दी के सम्पर्क में आने वाले कांटे और चम्मचों पर दिखाई देती है।

चाँदी एक मूल्यवान वस्तु है जिसे ग्रीक 'शाईनिंग' कहते थे। और धातुओं से काफी कम मात्रा में उपलब्धि के कारण काली हो जाने के बावजूद भी चांदी का उपयोग सिक्के तथा जेवरात बनाने में बहुत लम्बे अरसे से किया जा रहा है, क्योंकि चांदी पर जंग न लगने तथा इसके चमकते सफेद रंग के कारण ही मानव ने इस धातु को अन्य धातुओं से अधिक ऐसे कामों में प्रयोग किया था।

सर्टलिंग सिलवर या ठोस चांदी 92.2 प्रतिशत चांदी और 7.5 प्रतिशत तांबे का मिश्रण होता है। चाँदी में तांबा उसे सख्त बनाने के लिए मिलाया जाता है। इस मिश्रण से मनुष्य के बाल से भी पतला तार बनाया जा सकता है या फिर चांदी को पीट-पीट कर उससे चाँदी की शीट बनाई जाती है जो कि इतनी पतली होती है कि एक इंच ऊंची ढेरी में 100,000 शीट रखी जा सकती हैं, अमरीका और बरतानिया तथा कामनवेल्थ के देशों में इससे स्टेन्डर्ड हाल मार्कड चाँदी के बरतन इत्यादि बनाये जाते हैं, परन्तु हाल ही में कुपरोनिकल तांबे और 'निकल' के मिश्रण ने चांदी के सिक्कों का काफी स्थान ले लिया है।

सिलवर प्लेट करने में, चांदी की एक बहुत पतली परत दूसरी धातु पर चढ़ाई जाती है, चाँदी के अन्य धातुओं के साथ बहुत से मिश्रण उद्योगों में प्रयोग में लाए जाते हैं इनमें विशेष उल्लेखनीय है फोटोग्राफी और इलैक्ट्रीकल इन्डस्ट्रीज, चांदी तड़ित चालक के रूप में भी बहुत उपयोगी है

प्र० : क्या सुगन्ध या गंध हमारे जीवन में कोई महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं ?

उ० : आधुनिक अध्ययन जो बहुत अरसे से नजर-अंदाज सूंघने की शक्ति के विषय में किए गये हैं। औषधि विज्ञापन, पढ़ाई लिखाई तथा सेक्स के लिए विकास के नए द्वार खोलेगी। यह मत उन खोजकर्ताओं का है जिन्होंने आश्चर्य चकित कर देने वाले ढंग प्रचलित होते देखे हैं।

शुरुआत में गंध का खास रोग लक्षण पता लगाने में एक विशेष महत्व उभरता जा रहा है। उदाहरण के लिये गुर्दे की तकलीफ तथा मधुमेह से पीड़ित लोगों के पसीने में बदबूदार दुर्गन्ध आती है। कैंसर के रोगी मरने के करीब पहुंच एक पहचाने जाने काबिल गंध शरीर से छोड़ते हैं। यह बिचार की सूंघ कर नाक को सब मालूम हो जाता है शताब्दियों पहले आरंभ हुआ था। उस समय डाक्टरों का विचार था कि प्लेग के समय शहद जैसी सुगंध आती है, तो स्कारलेट बुखार होने पर गरम डबल रोटी जैसी गंध फैलती है और खसरे की गंध ताजे नुचे परों जैसी तथा पागलपन की गंध चूहों और हिरनों से जोड़ी जाती थी।

आजकल सोवियत वैज्ञानिक गंध द्वारा इलाज करने की सम्भावना पर खोज कर रहे हैं उन्हें आशा है कि वातावरण में विशेष प्रकार की गंध उत्पन्न कर देने से रोगियों की उत्तेजना कम करने, मन में शान्ती उत्पन्न करने, तनाव कम करने तथा सम्मोहित कर उन्हें सुलाने तक में सहायक सिद्ध होगी।

कुछ अमरीकी वैज्ञानिकों का ख्याल है कि गंध बर्ताव तथा मनोवैज्ञानिक संतुलन : ठीक रखने में भी सहायक सिद्ध हो सकती है। छिपे तौर से गंध फैला कर प्रयोग करना बहुत ही प्रभावशाली है। उदाहरण के लिए सुगंध लगे नीचे पहनने के कपड़े बिना सुगंधित से कहीं ज्यादा और अधिक बिकते हैं रेस्तरां और भोजनालय जानबूझकर अपनी दुकान के एगजास्ट फैन भीड़ भरी सडकों की ओर खोलते हैं ताकि भोजन की सुगन्ध से आकर्षित ग्राहक उनकी दुकानों पर आयें।

विशेष प्रकार की सुगन्धों को शीशियों में बन्द कर बेचा भी जा रहा है। इंगलेंड के एक वैज्ञानिक ने शरीर की सुगन्धों को अलग कर लेने का भी दावा किया है। शरीर में उत्पन्न कुछ तत्व, गंध तार के समान कार्य करते हैं जिससे सेक्स की इच्छा, भय या आक्रमण का आभास होता है।

'हेनकिन' का मत है कि पृथ्वी का आरम्भिक जीवन विकास गंध से ही हुआ है। जीवों का आपसी मिलन उन्हें गंध से ही आकर्षित कर हुआ होगा क्योंकि समुद्र में बहुत ही अधिक अन्धेरा था।

प्र० : समुद्र के पानी में उत्पन्न तेज चमक से मछली अपनी आंखों का बचाव कैसे करती हैं ?

उ० : दक्षिण पूर्वीय ऐशियन समुद्रों के पानी में जब सूरज की तेज किरणों का प्रकाश पड़ता है, तब यह प्रकाश वहाँ पायी जाने वाली पफफर मछली के लिए बहुत ही तेज हो जाता है, इस समय यह मछली रसायनिक काले चश्मे का प्रयोग करती है।

दो ब्रिटिश वैज्ञानिक स्टीवन ऐपलबी तथा बिल मुन्टज ने पता लगाया है कि एक इंच लम्बी पफ्फर मछली की आंखें फोटो क्रोमिक लेंस के समान होती हैं जो प्रकाश के साथ-साथ हल्के और गहरे रंग की हो जाती हैं। इन मछलियों की आंखों के कोरनिया तेज प्रकाश पड़ते ही पीले रंग के हो जाते हैं।

जैसे-जैसे प्रकाश की तेजी बढ़ती है क्रोमाटोफोर नामक सैलों द्वारा एक पीले रंग का पिगमैंट आंख के कोनों से छोड़ा जाता है। यह पिगमैंट आंखों की सतह पर फैल जाता है तथा इसकी सहायता से मछली की आंख के भीतरी भाग में रेटीना पर बनी आकृति में सुधार होता है। यह कार्य यह पिगमैंट आंख के भीतर जाने वाले प्रकाश को कम करके करता है। परन्तु धुंधले प्रकाश की रातों में यह पिगमैंट आंखों में से स्वयं ही साफ हो जाता है जिससे मछली कम प्रकाश में बखूबी देख सकती है।

उन लोगों के लिए जो समझते हैं सोचने की रफ्तार बिजली से भी तेज होती है। तेज से भी तेज विचार की रफ्तार 500 किलोमीटर प्रति घंटा होती है जो बिजली की गति से आधी है। साथ ही सबसे धीरे चलने वाला विचार 1.5 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलता है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

यदि मनुष्य के सिर के पीछे तीसरी आंख होती

अगर सचमुच ऐसा होता तो हमारे दैनिक व सामाजिक जीवन में क्या भिन्नता होती ? क्या आसानियां या क्या मुश्किलें होतीं ।

पति-पत्नी एक दूसरे की ओर पीठ करके सो रहे होते तो भी पिछली ओर से एक दूसरे पर नजर रख रहे होते ।

महिलाओं के लिये क्यू में खड़ा होना मुश्किल होता । आगे वाले की पिछली आँख घूरती और पिछली आंख को पीछे वाले की अगली आंखें घूरतीं ।

"मुड़-मुड़ के न देख" जैसे गानों का जन्म ही न हुआ होता क्योंकि मुड़ के देखने की जरूरत ही न रही होती ।

खटमलों की धर-पकड़ आसन होती । जरा सी गर्दन उठाई और पिछली आंख से नीचे का नजारा देख लिया होता ।

महिलाओं के पीछे के बाल लड़कीपन में ही सफेद हो जाते । पीछे की आंख से गिरे आंसू पोंछना आसान न होता और आंखों से गिरा खारा पानी बालों की धारा को सफेद कर देता ।

गाड़ी बैक करने के लिये गर्दन को मोड़ कर ✕ न बनाना पड़ता बस सिर बाहर निकाल लिया ।
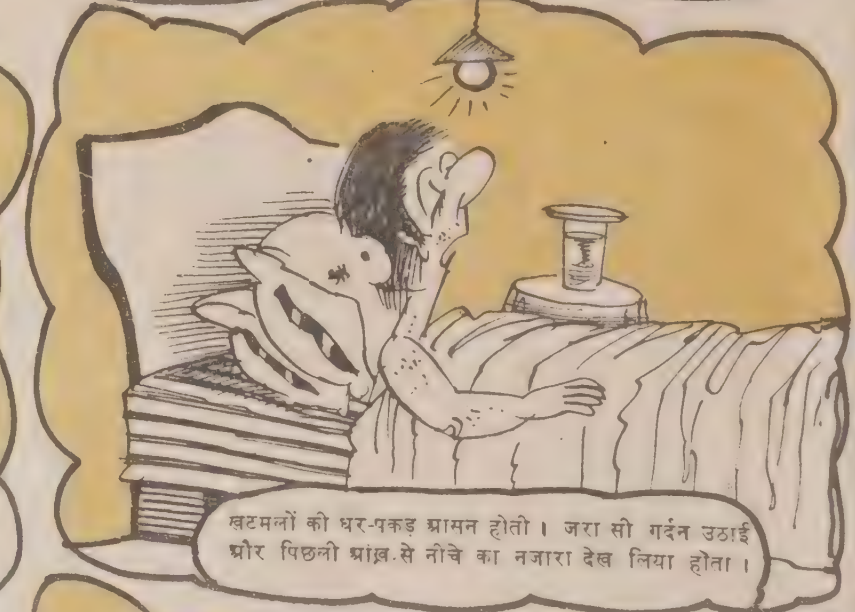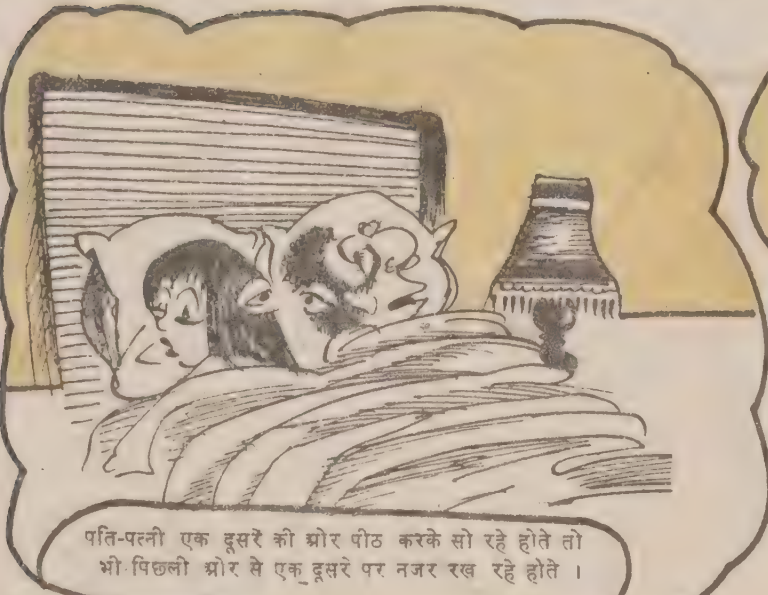
CONG(I)
हाई कमान
दूसरों की पीठ में छुरा मारना अब जैसा आसान न होता ।
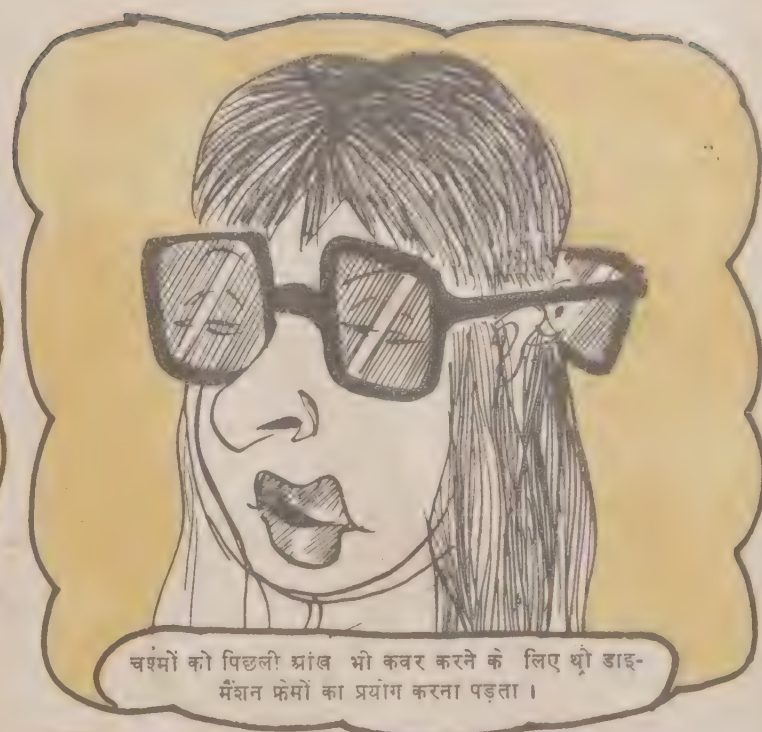
चश्मों को पिछली आंख भी कवर करने के लिए थ्री डाइ-
मेंशन फ्रेमों का प्रयोग करना पड़ता ।

किसी की पीठ पीछे चुगली या हंसी उड़ाना संभव न होता ।
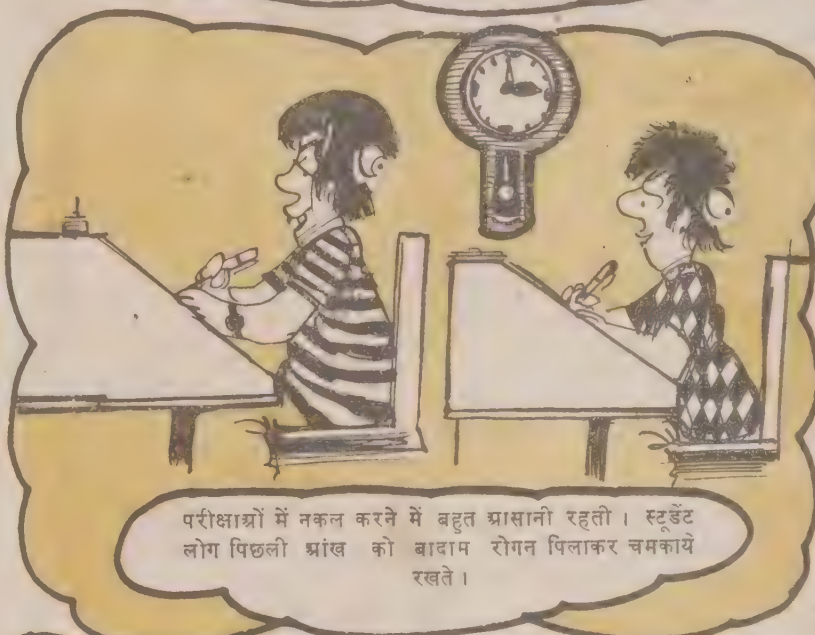
परीक्षाओं में नकल करने में बहुत आसानी रहती । स्टूडेंट
लोग पिछली आंख को बादाम रोगन पिलाकर चमकाये
रखते ।

पीछे एक ही आंख होगी । अतः यह कहना मुश्किल होगा
कि पलक झपक रहा है या आँख मार रहा है ।

NT
BOMK
LSDE
ECGJP
XO
NPT
YSK
आंखों के डाक्टर दो ओर आई टैस्ट चार्ट रख कर एक साथ
जाच करत ।
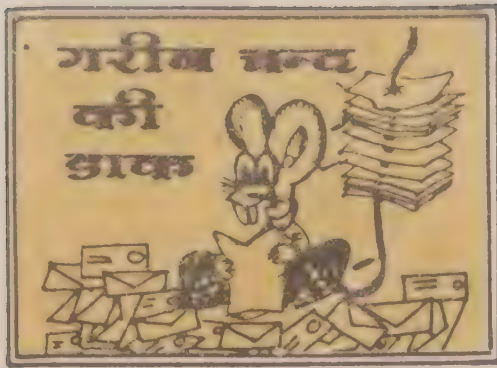
शिवकुमार गुप्ता, तलवाड़ा झील : इमली और निम्बू में से ज्यादा खटाई किस चीज में होती है।

उ० : जो अंगूर पहुंच से बाहर हों उनमें इमली और नीम्बू से भी ज्यादा खटाई होती है।

दीपक गोदीका, तिलक नगर, जयपुर : गरीब चंद जी, समय और पैसे में अधिक मूल्यवान कौन है ?

उ० : इन दोनों कीमती चीजों का सही उपयोग करना जाननेवाली बुद्धि।

रघबीर सिंह साही, नई दिल्ली-27 : 'जिन्दगी तो बेवफा है, एक दिन ठुकराएगी। फिर भी लोग जिन्दगी से इतना प्यार क्यों करते हैं ?'

उ० : बेवफा चीज ही ज्यादा प्यारी लगती है क्योंकि वह एक दिन चली जायेगी। हमेशा रहने वाली चीज की कोई कद्र नहीं होती।

ममताकौर, बेपता : गरीब चन्द जी, अगर मैं आपको आंख मारूं तो ?

उ० : तो मैं बाकी के प्रश्नों का उत्तर देना भूल जाऊंगा।

प्र० : आप जो पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देते हैं मैं इसमें आपको प्रश्नों के उत्तर देने में सहयोग दे सकती हूं ?

उ० : इसमें एक खतरा है। आपका हमारा सहयोग खुद एक प्रश्न का रूपधारण कर सकता है।

प्र० : आप लड़कियों को देखकर कुछ सोचते हैं? क्या कुछ ? यदि हां तो क्या ?

उ० : यदि मैं बता दूं तो सेंसर बोर्ड वाले अपनी कैंची से मेरी पूंछ और कान काट देंगे और मैं अधूरा चन्द रह जाऊंगा। इतना बड़ा जोखिम उठाने को मैं तैयार नहीं हूं।

प्र० : मुझे रात को नींद नहीं आती है क्या करूं ? अगर आती भी है तो सपने आते हैं ?

उ० : यह कोई बीमारी नहीं है। इस उम्र में सबके साथ ऐसा होता है। चिन्ता न करें।

प्र० : मैं बहुत Frank हूं जिसको देखूं तो वह इसका मतलब प्यार समझने लगता है आखिर किस-किसको प्यार करूं ?

उ० : ऐसे सवालों के जवाब बहुत टेढ़े होते हैं। आजमाइश के तौर पर कुछ अरसा आप लोगों को टेढ़ी नजरों से देखकर देखिये क्या होता है।

राजकुमार रंधावा, सीमापुरी : गरीब चंद जी, मैं एक लड़की से दो साल से प्रेम कर रहा हूं शादी भी करना चाहता हूं, मैं क्या करूं ?

उ० : क्या शादी के दफ्तर का एडरैस भी हमें ही बताना पड़ेगा।

जयकिशन चांडक, (अकेला—परदेशी) बम्बई-2 क्या 'वक्त बहुत बेरहम होता है ?'

उ० : चालीस वर्ष की उम्र के बाद आने वाला हर पल बेरहम होता है। शरीर पर बेरहमी की मार से लकीरें पड़ने लगती हैं। बाल सफेद होने लगते हैं या कंघी के साथ रम्भा सम्भा डांस करते हुए चले जाते हैं।

नवनीत तलवार, जयपुर : गरीब चंद जी, क्या आज के जमाने में खुद पर भी भरोसा नहीं करना चाहिए ?

उ० : जी हां शीशे के सामने खड़े होते हुए भी चौकन्ने रहिए। कहीं शीशे की परछाई पाकेट ही न मार ले।

अशोक खुराना स्वीटी, कलानौर : प्यार का लाईसेंस कहां से मिलता है ?

उ० : अंखियों के झरोखों से।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डला : गरीब चंद जी, आज का इन्सान सबसे बड़ी भूल क्या कर रहा है ?

उ० : अपनी छोटी-छोटी भूल करके और उन भूलों का नाम पिंकी, रिंकी, पप्पू, मुन्ना, और गुड्डी रखता जाता है।

टिटू चोपड़ा, गांधी नगर दिल्ली-31 : गरीब चंद जी, क्या आप बता सकते हैं कि लोग साल गिरह पर केक ही क्यों काटते हैं कद्दू क्यों नहीं काटते हैं ?

उ० : कद्दू काटने पर मेहमान बर्थडे गिफ्ट भी प्याज, मूली, या चुकन्दर लायेंगे।

मधुकर निलकंठराव खुटे, देवपुर, (महाराष्ट्र) एक ही पेड़ पर आने वाले फूलों की सुगंध एक जैसी होती है ! मगर एक ही परिवार में जन्म लेने वाले सदस्यों की आदत अलग-अलग होती है क्यों ?

उ० : आपने शायद यह नहीं पता लगाया कि एक परिवार में जन्म लेने वालों के पसीने में बू एक जैसी होती है या नहीं। सुगंध की तुलना आदतों से नहीं की जा सकती।

विनोद पुरी 'रंजु, लुधियाना (पंजाब) : गरीब चंद जी, आंखों के सामने कोई दुर्घटना हो जाए तो क्या करना चाहिए ?

उ० : घटनाक्रम को ठीक से याद कर लेना चाहिए क्योंकि आपको बाद में पुलिस में बयान देना होगा।

अशोक जौहर 'सावरिया' गगन जौहर 'विक्की' देहरादून : यदि नौजवानों के हाथ में देश की सत्ता आ जाए तो ?

उ० : तो अखबारों में सैक्स स्कैंडल भी पढ़ने को मिलेंगे प्रथम पेज पर।

श्याम गगवानी, नरेला : जब सब तरफ हड़ताल हो सकती है तो चांद सूरज व तारे हड़ताल पर क्यों नहीं जाते।

उ० : इनकी घड़ी जरा सुस्त चलती है। लेकिन हड़ताल पर यह जरूर जायेंगे वैज्ञानिकों का कहना है कि सूरज पांच करोड़ वर्ष बाद पूरी तरह हड़ताल पर जायेगा।

गुरमीत सिंह मीता, नई दिल्ली : गरीब चंद जी, क्या सुन्दर नारी खतरनाक होती है ?

उ० : मैडिकल रिपोर्ट तो यही कहती है कि जिन व्यक्तियों की बीबियां सुन्दर हैं वह जल्दी गंजे हो जाते हैं और उनको दिल का दौरा ज्यादा पडता है।

दिनेश कुमार चिटकारा 'शौकीन, फरीदाबाद : गरीब लोग हर वक्त अपनी गरीबी की दुहाई क्यों देते रहते हैं ?

उ० : गरीब लोग अपनी गरीबी को मंदिर के घंटे की तरह प्रयोग करते हैं जब भी मौका मिला घंटा बजा दिया।

अर्जुन अरोड़ा, विक्की, कलानौर : वक्त धोखा कब देता है ?

उ० : वक्त तो कभी धोखा नहीं देता—वक्त अपनी गति से चलता रहता है। धोखा तो आदमी खुद खा जाता है। और बदहजमी का दोष वक्त पर लगा देता है।

गरीब चन्द की डाक

दीवाना पाक्षिक
८ बी, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

सिलबिल-पिलपिल
और पंजाब समस्या

भाई आजकल हिन्दुस्तान में क्या तमास्सा हो रहा है, तुझे कुछ पता नहीं है ? तू तो दिन-रात विभिन्न लाटरियों के रिजल्ट भर पढ़ता रहता है बस, कुछ काम की खबरें भी पढा कर। पंजाब में बम फेंके जा रहे हैं। कत्लेआम हो रहा है। अमृतसर और पटियाला में कर्फ्यू लागू है और पुलिस और मिलोट्री गश्त लगा रही हैं।
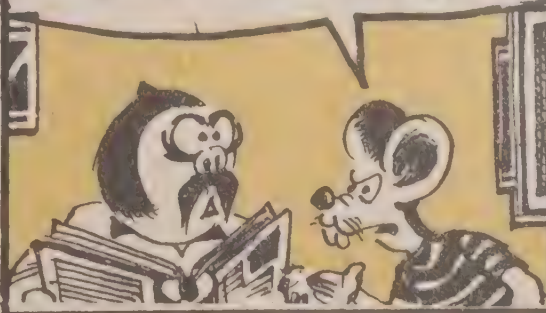
अच्छा! सचमुच ही पंजाब में बम फेंके जा रहे हैं ? कत्लेआम हो रहा है ? दशहरी और लंगड़े आमों का सीजन है भई। कुछ न कुछ तो होगा ही। फिर भी मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूगा पंजाब समस्या का हल खोजने की, मुझे पहले पता नहीं था न।

अब सिलबिल ने पंजाब समस्या का हल खोजने की ठान ली है तो चिन्ता की बात नहीं। देश के, सामने जो भी समस्या आती है उसकी टांग तोड़ने के लिए यह अपना लट्ठ जरूर घुमायेगा। अब तक इसका दिमाग लाटरी गेज पर चल रहा था अब भटिन्डा वाली लायन पर चलेगा।
सब मिल कर तीन बार जयहिन्द बोलो—
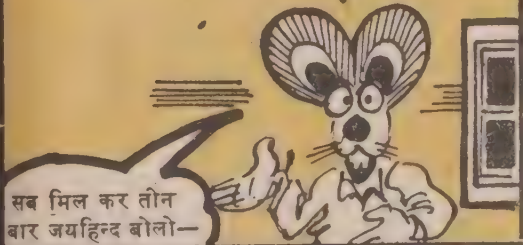
हमें पंजाब समस्या का हल खोजने के लिए युद्ध स्तर पर दिमाग लड़ाना होगा। मैं आज से अखंड विचार के लिए लड़ाई के मैदान में साजो सामान से लैस होकर कूद रहा हूं। मेरे गले में यह कारतूसों की माला नहीं है बीड़ियों की माला है और हाथ में रायफल की जगह माचिस की तोली है। दिमाग की गाड़ी के लिए यह कोयला का काम करेगी अब मुझे डिस्टर्ब न करना।

भारत के सच्चे सिपाही, तूने शायद लड़ाई का साज सामान गलत चुना है। इस युद्ध में बोड़ी-सिगरेट तम्बाकू का प्रयोग वर्जित है।
क्या करने लगा मेरे यार ?
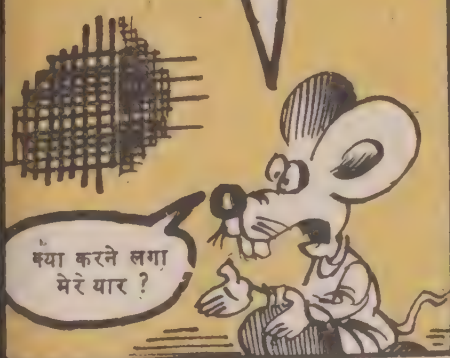
पंजाब समस्या में दल खालसा शामिल है, तुझे पता नहीं है ? वह सिगरेट बीड़ी के सख्त खिलाफ हैं। अगर तूने पंजाब समस्या का सही हल खोज भी लिया और उनको पता लग गया कि हल खोजने में तूने सिगरेट और बीड़ी की मदद ली है तो वह उस हल को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। तुझे तो इसका बिल्कुल उल्टा करना है। पंजाब समस्या का हल खोजने के लिए विचार करने बैठेगा तो उस दौरान बीड़ी सिगरेट कुछ नहीं पीना होगा।

सिगरेट बीड़ी नहीं पीनी पड़ेगी ? तो यह मेरे जीवन की सबसे कड़ी परीक्षा होगी। लेकिन मैं यह कुर्बानी दूंगा। रामचंद्रजी राजपाट छोड़ सकते थे। गांधी जी ने नमक खाना छोड़ दिया तो क्या मैं कुछ घंटों के लिए सिगरेट-बीड़ी नहीं छोड़ सकता ?
समस्या बड़ी विकट है। इतनी आसानी से इसका हल नहीं निकलेगा। यह समस्या सरसों का साग और मक्की की रोटी नहीं है।
इस पर तो बड़ी गहराई से सोच विचार करना पड़ेगा। स्कूबा गोताखोर ड्रेस पहनकर बैठना पड़ता है। इस प्रकार विचारों के लिए सही वातावरण तैयार होता है। मनोवैज्ञानिक रूप से दिमाग को प्रोत्साहन मिलता है। यहीं तो हमारे गृहमन्त्री गलती कर गए।
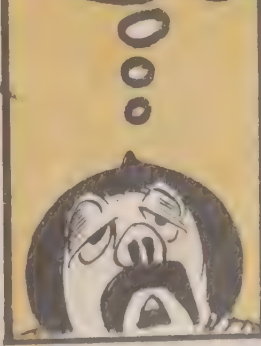
पिलपिल जी, जरा इधर आना, देखो क्या अजीब नजारा है।
क्या हुआ ? सिलबिल ने अण्डा तो नहीं दे दिया।
यह सिलबिल बैठा विचार कर रहा था। अभी-अभी यहां था और अभी-अभी गायब है। उसकी जगह फर्श पर भंवर सा मंडरा रहा है। शायद वह सचमुच ही गहरे विचारों के भंवर में डूब गया है।
ऐंह !

कहीं वह बिल्कुल ही डूब गया तो हम क्या करेंगे ? पुलिस वालों को पूरी बात बतायेंगे तो उन्हें यकीन ही नहीं आयेगा। वह उल्टे हमें पकड़ कर आगरा पागलखाने में भर्ती कर देंगे।
डूबने का डर तो नहीं है—उसने स्कूबा ड्रेस और आक्सीजन गैस मॉस्क पहन रखा था।

अब देखो भंवर ने कितने जोर से चक्रवात का रूप धारण कर लिया है, लगता है इसके विचारों के समुद्र में गहरा मंथन शुरू हो गया है। पंजाब समस्या का मक्खन निकलने ही वाला है।
GURGLE!

इतने जोर की भंवर है कि साफ-साफ नीचे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।
अब तक तो कुछ न कुछ हो ही गया होगा उसके विचारों के समुद्र में। मछली पकड़ने का कांटा लगा कर देखें कि कुछ फंसता है या नहीं—उससे कुछ न कुछ हमें अंदाजा हो जाएगा।
झटका ! कोई चीज कांटे में फंस गई।
झटका!
यह तो पंजाब के मक्खन का विज्ञापन है। अब विचारों के शो में भी एडवर्टाजमैंट आने लग गये ? शायद इसीलिए आजकल के जमाने को विज्ञापनों का युग कहा जाता है—
VERKA
BUTTER

सिलबिल के विचारों का यह अनोखा चित्रण।
थोपाज
कुल्हाड़ा बनाने वाले के सौजन्य से...
मेरी समझ में ही नहीं आ रहा है यह हो क्या रिया है ? पहले फर्श पर भंवर सा पैदा हो गया अब दबादब टी. वी. की तरह एडवरटाइजमैंटस आ रहे हैं। पंजाब समस्या का हल ढूंढते अपना याड़ी खूब पैसे कमा रहा है। उसमें इतनी अक्ल कहां से आ गयी ?
थोपाज वाले एक कुल्हाड़ा देकर उसे टरका देंगे—बाद में उससे वह अपनी टांग काटता फिरेगा।

सिलबिल पिलापेल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये

ऐ! गलतफहमी

गलत फहमियों के कुछ दीवाने स्वरूप

पृष्ठ २४ से आगे
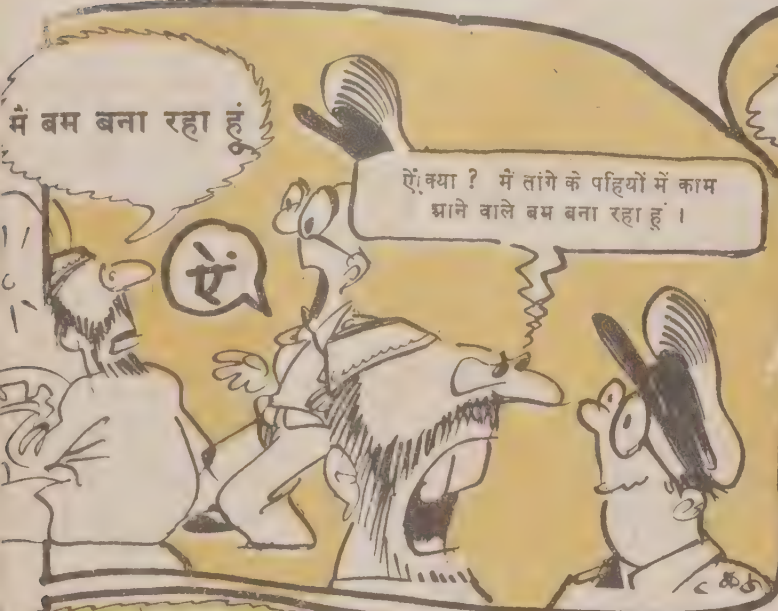
तुम जानते हो हमारा पुराना अड्डा साऊथ दिल्ली के फ्लैट में है और ये कोड वर्ड, पुराना अड्डा हमारे दोस्त समझ लेंगे और वह साऊथ दिल्ली हमसे मिलेंगे। पुलिस हमें झिलमिल में ढूँढती रहेगी।
और हम वहीं पर उनसे हीरों का सौदा कर लेंगे।
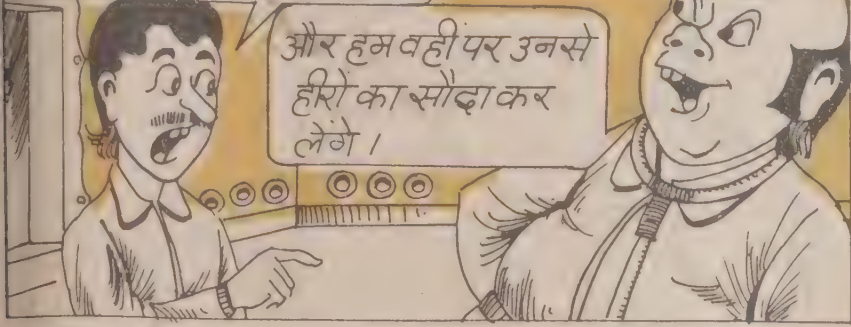
फिर हम कटर को भी अपने साथ रख लेंगे क्योंकि वो हम सबसे तेज है।

अगले दिन नासपीटा के बारे में की सारी खबर अखबार में छप जाती है जिसे इंस्पैक्टर घोष पढ़कर कहते हैं:-

पीचू अब तुम बताओ, ये पुराने अड्डे का क्या मतलब है?
हम अपने दोस्तों से मिलने साऊथ दिल्ली जरूर जायेंगे।
पुराने अड्डे का मतलब है साऊथ दिल्ली में हमने एक फ्लैट ले रखा है जिसे हम पुराना अड्डा कहते हैं और झिलमिल में एक आर्टिस्ट है जिससे हमारी मुलाकात होती रहती है झिलमिल में हमारा कोई पुराना अड्डा नहीं है।
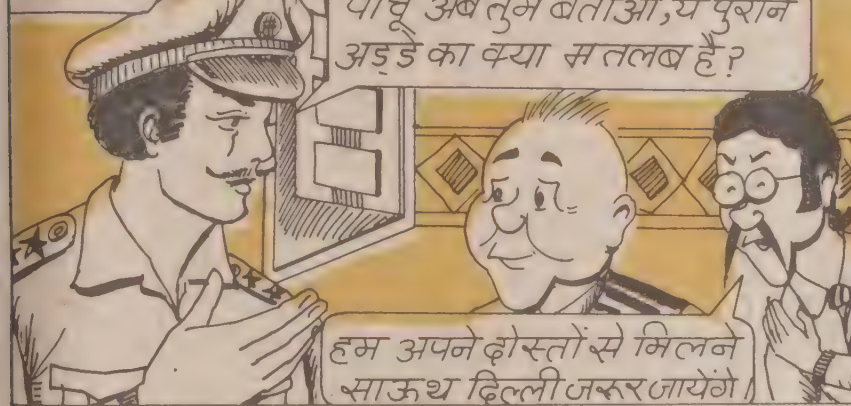
मि० घोष, आप पुलिस का घेरा वहाँ मजबूत करलें। हम उन्हें वहीं रगड़ देंगे।

पर इससे हमारी दोस्ती हमेशा के लिये टूट जायेगी। हम चाहते हैं हमारे दोस्त ठीक रास्ते पर आ जाये। कोई अच्छा काम करें।
हम उनसे कोई बदले की भावना नहीं रखते।
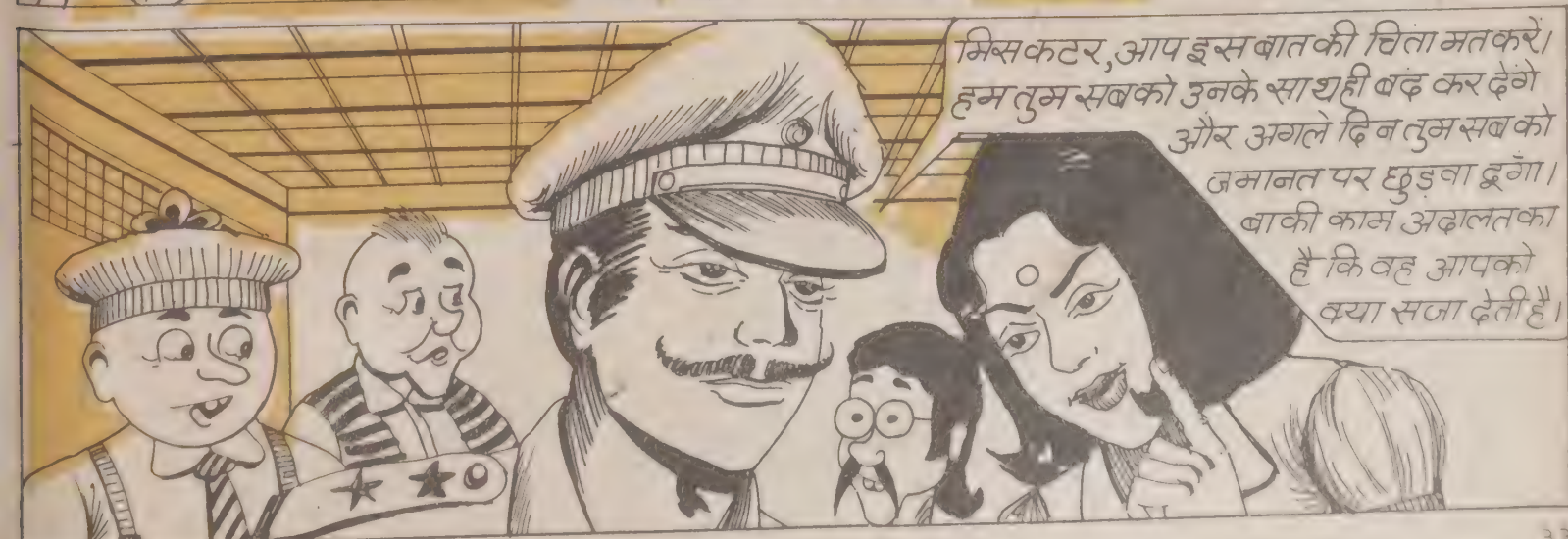
मिस कटर, आप इस बात की चिंता मत करें। हम तुम सबको उनके साथ ही बंद कर देंगे और अगले दिन तुम सबको जमानत पर छुड़वा दूंगा। बाकी काम अदालत का है कि वह आपको क्या सजा देती है।

मि० घोष का प्लान कामयाब करने के लिये सभी साऊथ दिल्ली में अपने फ्लैट में नासपीटे और डा० बोलो-राम से मिलते हैं। उन्हें देखकर डा० रोते हुये कहता है-

मैं आपलोगों से मिलकर कितना खुश हूँ कह नहीं सकता। दोस्तों तुम्हारी जुदाई में न तो मुझे नींद आती थी और न ही खाना खाने को दिल करता था भगवान का शुक्र है हम फिर मिल गये।

ये सच है तुम्हारी याद में हम कई-कई दिन भूखे रहे हैं।

कड़की में रहे होगे।

अब तो मुर्ग-मुस्सलम खाते होगे।

मैंने तुम्हारी याद में ५। दिन खाना नहीं खाया।

वो तुम अपने करोड़ों के नोट तो दिखादो।

खेल खेल में

दारासिंह की कुश्तियां कितनी असली कितनी नकली ?

—नवीन चन्द

कुछ लोग अपनी लोकप्रियता का सिक्का, भले ही वह काफी घिस चुका हो, काफी देर तक भुनाते रहने में माहिर होते हैं। इस कला में लगता है कि दारा सिंह सिद्धहस्त हैं। कोई जमाना था जब वह पहलवान थे और कुश्तियों में उनका नाम व काम था। सिनेमा जगत में जाने के बाद वह हीरो अधिक, पहलवान कम हो गए हैं आयु भी उनकी 55 से ऊपर हो गई है फिर भी किसी दंगल में वह हारे नहीं बल्कि बदस्तूर सरलता से जीतते चले आ रहे हैं।

पिछले दिनों राजधानी दिल्ली में उनकी कई कुश्तियां (या दंगल नाम की ड्रामेबाजी) हुईं। सभी कुश्तियों में खूब टिकटें बिकीं, व्हाइट में भी और ब्लैक में भी। बड़े-बड़े गणमान्य व्यक्ति (राजीव गांधी परिवार समेत) इसे देखने आए। प्रचार माध्यमों का पूर्ण उपयोग किया गया। जिनके पास टिकटें नहीं थीं, वे प्रभाव (?) के बल पर प्रवेश पा गए और जिनके पास टिकटें थी वे बाहर पुलिस की लाठियां खाकर, दिल्ली परिवहन की बसों के शीशे तोड़ कर घर वापस लौट आए।

पहली कुश्ती 15 मई को इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में आयोजित की गयी। 43 वर्षीय इंगलेंड के भूतपूर्व विश्व चैम्पियन (1965 एवं 1971) मैन माउंटेन जैक ने दारा सिंह को ललकारा कि 'दारा में कोई दम नहीं बचा है और मैं उसे हराकर विश्व चैम्पियन की बेल्ट जीत लूंगा।'

इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम की भव्यता से प्रभावित जैक ने कहा—मैंने सारी दुनिया घूमी है पर इतना बेहतरीन स्टेडियम नहीं देखा ! उनके छह बच्चे (पाँच लड़के व एक लड़की) हैं उनका वजन 140 किलो तथा कद छह फुट तीन इंच है। उनके विशालकाय बदन पर लम्बे-लम्बे बाल और दाढ़ी उन्हें डरावना अवश्य बना रहे थे पर साथ ही उनका अंग्रेजी गोरा सफेद रंग सौम्यता की झलक भी देता था।

यह जरूरी तो नहीं कि चेहरे के भाव स्वभाव की प्रकृति से मेल खाते हों। विश्व-बेल्ट जीतने की ललक तथा विशालकाय बदन के कारण जैक ने सब नियमों एवं स्वीकृत परम्पराओं का तिलांजलि दे दी। दंगल के दौरान उसने दारा सिंह के गुप्तांग पर जोर से प्रहार किया जिसके फलस्वरूप दारा गिर पड़ा। इतना ही नहीं, जब दारा सिंह को प्राथमिक चिकित्सा के लिए उठाया जा रहा था तो वह फिर उस पर पिल पड़ा। इस डबल फाउल से जैक को अयोग्य घोषित कर दिया गया। दारा सिंह को बेल्ट रखने का अधिकार पुनः दे दिया।

इस पर जैक को ऐतराज हुआ। उसने फिर चुनौती दी कि मेरे साथ बेइन्साफी हुई है। अगर दारासिंह में दम है तो दुबारा लड़े दारासिंह ने भी चुनौती स्वीकार की—'मैं नही चाहता कि मैन माऊटेन जैक दिल में मलाल लेकर इंगलेंड वापस लौटे। जान की बाजी लगा दूंगा पर विश्व चैम्पियनशिप बेल्ट बाहर नहीं जाने दूंगा।'

अगले रविवार, 22 मई को फिर मुकाबला हुआ फिर वही ढाक के तीन पात। दारासिंह फिर जीत गया लोगों को दाल में काला नजर आया। समाचारपत्रों में दारा के नाम लड़ने की चुनौतियां प्रकाशित होने लगीं। पर दारा सिंह हर ऐरे-गैरे नत्थू खैरे से कुश्ती क्योंकर लड़ सकता है।

दारा सिंह की तीसरी कुश्ती 29 मई को नकाबपोश फ्लैश गार्डन से हुई। इन्डोर स्टेडियम में 35,000 दर्शकों के शोर-शराबे के बीच गार्डन दोनों हाथ जोड़ता हुआ (हार मानता हुआ) अखाड़े से भाग गया।

इसी दिन एक अन्य दंगल में अमेरिका के रिपन दी डेस्ट्रायर ने भारत के वासन को पराजित कर दारा को फाइनल कुश्ती लड़ने के लिए ललकारा।

दारा ने यह चुनौती भी स्वीकार कर ली। समाचार-पत्रों में विज्ञापनों के माध्यम से प्रचार किया गया कि यह दारा सिंह की अन्तिम कुश्ती होगी। इसके बाद दारासिंह अवकाश प्राप्त कर लेंगे।

सबको मालूम है कि दारासिंह-जब तक उन्हें पैसा मिलता रहेगा—कुश्ती लड़ते रहेंगे। दो वर्ष पूर्व भी उन्होंने कुश्ती से संन्यास ले लिया था।

इन ड्रामाई कुश्तियों का इतिहास 1953 से शुरू होता है। जब किंगकांग जैसे पहलवान भारत आए और दारा सिंह ने पहली बार हरबंस सिंह को हराकर 'रुस्तमे हिंद' का खिताब प्राप्त किया था। उसके बाद से इन पहलवानों ने कुश्तियों से चांदी बनाने की कला (या व्यापार ?) सीख ली। कुछ पहलवान मुखौटा पहनकर मैदान में उतरने लगे। वे सचमुच में पहलवान नहीं होते बल्कि किसी लम्बे-तगड़े वजन के आदमी को मुखौटा पहना कर नकली नाम से उतार देते हैं। इनके नाम पैदा करने वाले होते हैं, कहीं किसी का नाम तूफान, भूत, निडर, पर्वत (माऊंटेन), पिचाश (टैरर) या फिर मिस्टर अमेरिका, मिस्टर यूरोप, इत्यादि होते हैं।

प्रश्न यह है कि जब यह कुश्तियां मिली-भगत होती हैं तो फिर इतने लोग इतने उत्साह के साथ इन्हें देखने क्यों जाते है ? इसका उत्तर सीधा सा है। फिल्मों में हीरो द्वारा विलेन की पिटाई भी तो पूर्व-नियोजित होती है और सब दर्शकों को पता भी होता है फिर भी वे ताली बजाकर विलेन के पिटने पर खुशी जाहिर करते हैं। जबतक पब्लिक को ऐसी कुश्तियों में आनन्द आता रहेगा, यह पहलवान मुफ्त में पैसा बटोरते रहेंगे।

अब लगे हाथ कुछ पुराने पहलवानों की शक्ति का भी जायजा ले लिया जाए। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में क्रोटोन में 'माइलो' नामक एक पहलवान रहता था। उसकी खुराक इतनी थी कि वह पूरा बकरा या बछड़ा या छोटी गाय एक बार में खा जाता था। एक बार उसे ज्यादा खाने के लिए उकसाया गया तो वह एक पूरी भैंस खा गया और गलियों में दौड़ने लगा। वह इतना शक्तिशाली था कि लोग उसका सामना करते घबराते थे। उसके बारे में प्रसिद्ध था कि वह अपने सिर पर रस्सा बांध कर माथे की नसों को फुलाकर उसे तोड़ डालता था अनार को वह अपनी हथेली में छुपा लेता और कई लोगों को अनार छीनने के लिए अमंत्रित करता। कई लोग एक साथ पिल पड़ते पर अनार नहीं छीन पाते। बाद में जब वह मुट्ठी खोलता तो अनार उसमें सुरक्षित होता।

कहते हैं इस राक्षसी पहलवान की मृत्यु भी अजीब ढंग से हुई। जंगल में एक लकड़हारे ने वृक्ष को बीच में से काटकर एक खपची फंसा दी थी कि धीरे-धीरे पूरे वृक्ष को वह कुल्हाड़ी से दो तीन रोज में काट लेगा। कुदरत का खेल कि उस ओर से माईलो निकला उसने वृक्ष में फंसी खपची देखी तो वृक्ष को

शेष पृष्ठ ४९ पर

हास्य व्यंग

एक गधे का निवेदन

'गोविन्द नारायण मिश्र

प्रिय पाठकगण! चीपों...चीपों...

'देवी वाहन विरद बड़ नाम डुबोता सर्वथा।
निरा गधा है क्या कहें, यथा नाम गुण तथा ॥

किसी सुनामधन्य कवि ने हमारी प्रशस्ति में लिखा है। यह सही है कि हम जीव जगत के एक मशहूर प्राणी हैं। हमें देवी का वाहन बनने का सौभाग्य प्राप्त है। जीव जगत में हमारा नाम डूबता जा रहा है, क्योंकि इंसान स्वयं अपने जाति भाइयों को गधा कहने लगे हैं। मुझे इंसान के गधा बनने और गधा कहलाने पर घोर आपत्ति है। गधा तो मैं हूं, भारत का सर्वाधिक प्राचीन पशु हूं, यही नहीं हमारी भारतीयता स्वयं सिद्ध है। अपने भारतीय होने की गरिमा धारण करने के कारण ही 'गधा' कहलाने का अधिकारी हूं। भारत में हमारी घोर उपेक्षा हो रही है। हमारी मूल जाति की जनसंख्या दिनोंदिन घटती जा रही है। यहां तक कि यदि सरकार ने अविलम्ब ध्यान न दिया, तो भारत से हमारा नाम मिट जाएगा।

कहते हैं कि गधों में अक्ल नहीं होती, गरचे इंसान के समान अकलमंद दूसरा कोई जीव नहीं होता। इंसान में अक्ल इतनी कूट-कूट कर भरी होती है कि अपने सामने दूसरे की अक्ल को कूड़ेदान समझने लगते हैं और फरमाते हैं—'वह तो निरा गधा है।' यही कारण है कि आज हर घर में दो चार 'गधा' पदवी धारी व्यक्तियों का मिल जाना, कोई अचरज की बात नहीं है। दूसरों को गधा कहने वाला व्यक्ति यदि किसी अन्य से अपने लिए वही संबोधन सुनता होगा तो सोचिये, उस पर क्या गुजरती होगी, या तो वह दुलत्ती झाड़ना शुरू कर देगा, अथवा आजिजी से फरमायेगा (वह भी हंसते हुए) 'जी बजा फरमाते हैं, मैं ही नहीं मेरे बाप दादा भी एसे ही थे।'

तो जनाब। 'गधा-बाहुल्य' भारत भूमि में कोई जमाना था जब हर गली कूंचे में गधे ऐसे पाये जाते थे जैसे जनतंत्र में नेता। वे दिनरात चौबीसों घन्टे ऐसे रेंका करते थे, जैसे बिन-माइक के छुटभैये नेता। और दुलत्ती झाड़ने में अपनी सानी नहीं रखते थे। मगर आज उनकी जाति भारत से ऐसे लुप्तप्राय होती जा रही जैसे असम से वहां के मूल निवासी। असम समस्या, अकाली समस्या तथा महंगाई की भीषण समस्याओं से जूझते भारत में 'गधा समस्या' की गम्भीरता पर किसी का ध्यान ही नहीं गया था।

धन्यवाद के पात्र हैं, राजस्थान के माननीय वनमंत्री महोदय, जिन्होंने गंभीर समस्याओं में घिरे होने के बावजूद 'गधों की समस्या' पर अपना ध्यान केंद्रित किया। पिछले दिनों मंत्री जी ने बड़े खेद पूर्वक बताया कि 1946 में गणना करके गधों की संख्या 5000 बताई गई थी जबकि हाल में हुयी गणना के अनुसार यह संख्या मात्र 750 रह गयी है। यह प्राणी धीरे-धीरे विलुप्त होता जा रहा है राज्य सरकार ने राज्य का करीब 5000 वर्ग कि मी. रकबा गधों के लिए 'अभयारण्य' घोषित करते हुए कहा है कि जैसे भी होगा प्रान्त में गधों की रक्षा की जायेगी।

यह समस्या केवल राजस्थान राज्य की नहीं पूरे देश की है। सभी राज्य सरकारों/केन्द्रीय सरकार को गधों की गंभीर समस्या पर ध्यान देना चाहिए। आखिर भारत की जनसंख्या आजादी के बाद चार गुनी अधिक बढ़ी है। फिर हमारी संख्या में यह भीषण कमी क्यों हो गई है? हमारी उपेक्षा तथा असुरक्षा का क्या कारण है? गधा बहुल्य देश के अकलमंद गधे कहां चले गए? आदि ऐसे ज्वलन्त प्रश्न हैं जिन पर राजनीतिज्ञियों, समाजशास्त्रियों, शिक्षाशास्त्रियों तथा देश के बुद्धिजीवी वर्ग का ध्यान अपेक्षित है।

कहीं ऐसा तो नहीं है कि भारत के प्रतिभावान वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों के समान गधे भी विदेशों को पलायन कर, वहीं बसे जा रहे हों। भारत से बन्दरों के समान गधों का भी निर्यात चोरी छुपे आज भी तो जारी नहीं है। गधों की मूल जाति को नष्ट करने का विदेशी शक्तियों द्वारा कोई षड़यंत्र तो नहीं चलाया जा रहा है जिनकी जानकारी भारत सरकार को न हो? गधा जाति को विनष्ट करने में सी. आई. ए., गेस्टापो अथवा चीनी जासूसों का हाथ तो नहीं है? भारत सरकार का जासूसी विभाग 'रा' क्या इतना अक्षम और नाकारगर है कि इन बातों का पता नहीं चला सकता? भारत सरकार को शीघ्र ही एक जांच आयोग का गठन करना चाहिए। भारतीयता की गरिमा धारण करने वाली संपूर्ण गधा जाति को सचेत होकर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। भारत की एक मात्र ऐतिहासिक शाकाहारी, शांतिप्रिय, कठोर परिश्रमी, अहिंसक (बिना पूंछ सींग की) मूल जाति, जिसका भारत की कला, साहित्य, संस्कृति और समाज में महत्वपूर्ण स्थान रहा है, आज पूर्णरूप से विनष्ठ करने की साजिश का शिकार है।

देश के सारे गधों एक हो जाओ। मजदूर एकता जिन्दाबाद। दुनिया के सारे गधे भाई-भाई। सारे गधे मिलकर एक स्वर में नारा लगाओ-चीपोंचीपों! 'सारा हिन्दुस्तान हमारा है। 'हमें राष्ट्रीय पशु का दर्जा दो।'

'सारा देश गधा अभयारण्य बनाओ।'

'जो सरकार ध्यान न देगी, वह सरकार निकम्मी है।' भारत की समस्त राजनीतिक, विरोधी पार्टियों के नेताओं से हम अपील करते हैं कि वह हमारी रहनुमाई करे। हमारा देश की जनता से करबद्ध निवेदन है कि हमारी जाति को समूल नष्ट होने से रोकने के लिए यथा संभव सभी प्रकार से सहयोग करें। सरकारों की आगामी बैठक में विरोधी नेता प्रश्नों की ऐसी बौछार करें कि 'काम रोको' प्रस्ताव पास हो जाये और हमारी ज्वलंत समस्या पर सबसे पहले विचार विमर्श किया जाये। यदि सरकार फिर भी उपेक्षा करती है तो राष्ट्रपति एवं राज्यपालों के भाषणों का बहिष्कार किया जाये। गधों की समस्या हल करने के लिए तत्काल एक आयोग बैठाया जाय।आयोग की रिपोर्ट मिलने तक गधा जाति के प्रसार संवर्धन और पौष्टिक आहार के लिए 150/- रु. प्रतिमाह प्रति गधे की दर से अन्तरिम रिलीफ प्रदान किया जाय।

राजस्थान के वन मंत्री महोदय हमारे महान नेता है। उनके महान आदर्शों एवं संकल्पों पर चलकर ही हम अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकते है। हम सब उनको साधुवाद देते हैं। हमारी समस्यायें हल हो जाने पर यानि कि सारा भारत अभयारण्य घोषित हो जाने पर, हम सब आगामी सरकार से प्रार्थना करेंगे कि उन्हें 'भारत रत्न' की उपाधि से विभूषित किया जाय। संसद और विधान सभाओं में हमारे नुमाइन्दों के लिये सीटें आरक्षित की जायें। हमारी मांगों के पूरा न होने पर निश्चय ही हम भी अकालियों की तरह एक स्वतंत्र प्रभुत्ता संपन्न गधा राज्य की स्थापना के लिए आंदोलन करने हेतु बाध्य हो जायेंगे।

शेष पृष्ठ ४९ पर

हंसना मना है

बम्बई में बीयर की एक बार में एक ग्राहक को अपने बीयर के ग्लास में एक मक्खी दिखाई दी। उसने वेटर को बुलाया और होशियारी से मक्खी चम्मच से बाहर निकाल कर, ग्लास बदल कर लाने को कहा।

उसी मेज पर दूर को एक और ग्राहक बैठा था जिसने अपनी आधी बीयर पी ली थी, धीरे से उससे बोला 'क्या मैं आपकी वह मक्खी उधार ले सकता हूं ?'

●

फ्रेंक और लिली की सगाई टूटने पर मित्र अचम्भित थे परन्तु फ्रेंक के पास पूरी सफाई थी।

वह बोला, 'क्या तुम किसी ऐसे से विवाह करोगे जो आदतन बेवफा हो, बात-बात पर झूठ बोले, स्वार्थी, निकम्मा और मजाक उड़ाने वाला हो ?'

'बिलकुल नहीं।' एक सहानुभूति प्रगट करते मित्र ने कहा 'ठीक है' फ्रेंक बोला, 'लिली भी नहीं करेगी।'

●

'जब कभी भी मुझे जुकाम होता है, मैं उसके लिए एक बोतल व्हिस्की खरीदता हूं, और कुछ ही घंटे में वह गायब हो जाता है।'

'अच्छा, जुकाम गायब करने में काफी कम समय लगता है तुम्हें।'

'नहीं, गायब जुकाम नहीं व्हिस्की होती है।'

●

छोटे लड़के ने अपनी मां का कीमती 'फर' कोट देख कर कहा, 'उस बेचारे जानवर को तुम्हारे इस कोट के लिए कितनी तकलीफ हुई होगी।'

'चुप' उसकी मां ने डांटा, 'अपने पिता के बारे में ऐसे मत बोलो।'

●

एक छोटा सा लड़का एक सेक्सी नंगी स्त्री की तस्वीर वाला पोस्ट कार्ड चुन रहा था। एक औरत ने उसे इस कार्ड को चुनते देख पूछा,'क्या ऐसी तस्वीर वाला कार्ड खरीदने के लिए तुम अभी छोटे नहीं हो ?'

'ओह, यह मैं अपने लिए नहीं खरीद रहा डैडी के लिए ले रहा हूं। यह मैं अपनी रिपोर्ट कार्ड के लिफाफे में रख दूंगा ताकि डैडी रिपोर्ट पर दस्तखत करते हुए यह न देखें, वो क्या साइन कर रहे हैं।'

●

एक व्यक्ति ने डाक्टर से कहा कि वह साफ-साफ बता दे कि उसकी परेशानी क्या है ?

'अच्छा', डाक्टर साहब बोले, 'तुम बहुत ज्यादा खाते हो, बहुत ज्यादा पीते हो और निहायत सुस्त हो।'

'धन्यवाद' रोगी ने उत्तर दिया, 'डाक्टर साहब, क्या यही सब आप अपनी डाक्टरी भाषा में मुझे लिख कर दे देंगे ?' तब तो मैं दफ्तर से एक सप्ताह की छुट्टी ले, आराम कर सकता हूं।'

●

एक मोटर चालक को जुर्माने की रसीद दी गई। 'मैं इस रसीद का क्या करूंगा ?'

पुलिसमैन—'इसे रख लो, ऐसी दस रसीदें इकट्ठी होने पर तुम्हें साईकिल मिल जायेगी।'

●

एक व्यक्ति ने भिक्षु बनने का फैसला किया और भिक्षुओं की एक ऐसी संस्था में शामिल हुआ, जहां का सबसे कड़ा नियम चुप रहना था। दस साल के बाद उसे हैड भिक्षु ने बुलाया और कहा—

'अच्छा, अब तुम अपने दो शब्द बोल सकते हो', आदमी ने उत्तर दिया,'खाना ठंडा' और दफ्तर से चला गया।

दस साल और बीत गए और इस बार उस व्यक्ति ने कहा,'पलंग सख्त'।

दस वर्ष और बीत जाने के बाद उसे फिर उच्च भिक्षु के दफ्तर में बुलाया गया 'मैं जा रहा हूं' उच्च भिक्षु ने उत्तर दिया,'मैं पहले ही जानता था, जब से तुम आये हो तभी से असंतोष जाहिर कर रहे हो।'

टीना द्वारा भंडा फोड़

राजेश खन्ना के सहारे टीना मुनीम के नये पर निकल आये है। आजकल वह बहुत से अन्य स्टारों के साथ अपने सम्बन्धों पर विचार प्रकट कर रही है जिनमें संजय दत्त भी शामिल है। वैसे संजय को तो वह बचकाना कह कर एक तरफ कर देती है।

परन्तु उसके देव आनन्द के बारे में प्रकट विचार वाकई हैरान कर देने वाले हैं। देव को टीना ने सदा ही अपने पिता या बड़े भाई का दर्जा दिया है, पर टीना के अनुसार देवानन्द के इरादे कुछ अलग ही थे तथा उन्होंने टीना को फुसलाने की भी पूरी कोशिश की थी, अन्त में वह इतनी परेशान हो गई कि वह देव का कैम्प छोड़ कर भाग उठी।

क्या ख्याल है देव !

●

इमरान तथा जीनत पर नई रौशनी

अब सब कुछ साफ-साफ कहा जा सकता है लाहौर टैस्ट मैच के दौरान इमरान पर हमला, तथा उसके होटल के कमरे के बाहर हल्ले गुल्ले से जीनत अमान का गहरा सम्बन्ध था।

कुछ समय पहले शरजाह के होटल में जहां इमरान एक दिन का क्रिकेट मैच खेलने गए थे, इमरान के एक प्रशंसक यूनाईटेड अरब एमिरेटस के अजहर अली खां ने इमरान और जीनत की कुछ प्रेमभाव पूर्ण फोटो खींची थी।

अजहर इमरान से मिलना चाहता था इसलिए उसने इमरान के कमरे का दरवाजा खड़काया, भीतर सरफराज नवाज और इफतिखार अहमद बैठे थे। इमरान अजहर पर बिना सोचे समझे झपट पड़ा, उसका ख्याल था अजहर उसे उन फोटो के सहारे ब्लैक मेल करने आया है। अजहर को पुलिस हिरासत में रहना पड़ा था पर वह शीघ्र ही छूट गया। उसने बताया कि फोटो तो उसके पास हैं परन्तु उसका इरादा सिर्फ इमरान से मिलने ही का था क्योंकि वह इमरान का फैन है।

●

अमिताभ और शशि के बीच रेखा की दीवार

शशी और अमिताभ 'दीवार' में साथ थे परन्तु अब रेखा उनके बीच दीवार बन गई है, अमिताभ के स्वयं को रेखा से कतई काट लेने के बाद यहां तक कि उसके भेजे फूल भी अस्वीकार किये जाने पर तथा ऐसी किसी भी जगह न जाने पर जहां रेखा को उसकी झलक भी दिखाई दे। रेखा ने अपनी पूरी कोशिश शशी कपूर के करीब आने में लगानी शुरू कर दी है।

यहां तक कि इंगलैंड में हुए विजेता के चार प्रीमियरों पर भी फरवरी 12, 13, 14, 15 को रेखा ही शशी कपूर के साथ थी, लगता है शशी ने भी अमिताभ से ज्यादा रेखा को ही अपना साथ देने को चुना है क्योंकि अमिताभ रेखा से सम्बन्ध रखने वाले हर व्यक्ति से कन्नी काटते हैं, लगता है, रेखा शशी से निकट सम्बन्ध ही इसका कारण है कि शशी की किसी फिल्म में अमिताभ दिखाई नहीं दे रहे। याद है अमिताभ शशी की फिल्म 'उत्सव' से समय की कमी के कारण अलग हो गए थे परन्तु तुरन्त ही उन्होंने अन्य तीन फिल्में साईन की थीं।

रेखा अपने अतीत में दोबारा जीना चाहती है

एक विख्यात ज्योतिषी के रेखा को यह बताने के बाद कि वह पिछले जन्म में एक राजकुमारी थी, उन्होंने इस पर विश्वास ही कर लिया है। और अपने रहन-सहन के तौर तरीके ही बदल लिए हैं। रेखा ने संजय के

समय पहने जाने वाले अपने माड कपड़े पहनने बन्द कर दिये हैं इनके बजाए अब वह वापिस मुगल स्टाईल पर आ गई है, वह अपने घर को भी मुगल स्टाईल में ही सजा रही है उनके चोर बजार के चक्कर भी पुरानी चीजें ढूंढ़ने के लिए बढ़ते जा रहे हैं वह अपना बाकी जीवन मुगल शहजादी की तरह बिताने पर आमदा हैं।

संदीप पाटिल फिलम जगत में

हालांकि संदीप पाटिल के वेस्ट इन्डीज के क्रिकेट टूर में शामिल होने की खास वजह थी उसकी पहली फिल्म विजय सिंह की 'कभी अजनबी थे' पर साथ ही उसकी कुछ निजी समस्यायें भी थी जैसे अपनी तलाक कार्रवाई पूरी करवाना इत्यादि।

लगता है उसे फिल्मी कीड़े न गलत जगह काटा है। क्योंकि फिल्म में काम करते समय युनिट के अन्य सदस्यों की क्रिकेट के मैदान में बैठे दर्शकों से तुलना नहीं की जा सकती। संदीप को जान लेना चाहिए यहां जमीन काफी फिसलनी है हर बार जब संदीप कोई शाट देते है तो तालियों की अपेक्षा करते हैं मानो उन्होंने क्रिकेट के मैदान में कोई चौका ठोका हो। लेकिन यहां उनके उलटे-सुलटे हाथ पैर हिलाने पर युनिट के सदस्य उन पर सिर्फ हंसते है।

संदीप फिल्म में बाउंडरी हिट करने में कई साल लग जाते हैं !

●
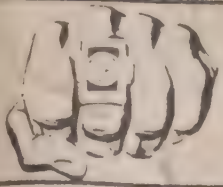
फैण्टम - जंगल शहर

ठक ठक···
अन्दर आओ।
मैं अन्दर हूं।

तुम्हें क्या चाहिए ?
एक छोटी-सी बात का फैसला करना है, तुम्हारी है, तुम्हारी मुझे जहर देने की कोशिश की।
© 1981 King Features Syndic... World rights reserved

जहर देना, नहीं कसम से सिर्फ बेहोशी की दवा थी।
मैं जहर की गंध जानता हूं··· और मेरा भेड़िया भी जानता है।
तुम इसे साबित नहीं कर सकते, कोई सबूत नहीं।
FALK & BARRY 3/20

तुम ज़हर साबित नहीं कर सकते
मैं वकील नहीं हूं, मान लो तुम्हारे कहे अनुसार वह ज़हर नहीं बेहोशी की दवा थी।
FALK & BARRY 3/21

वो भी बहुत बुरी बात है,साथ ही तुम्हारा बदमाश ठगगुरु से नाता इसकी सजा में तुम सैलून को एक महीने बंद रखोगे।

२९ साल से दिन रात खुला ब्लू ड्रैगन बन्द कर दूं? मेरा बहुत नुकसान होगा, कभी नहीं।
मि० वौंग तुम अभी बन्द करोगे।
जी श्रीमान !
क्रोधित फैन्टम की आवाज चीते का खून भी जमा देती है प्राचीन जंगल कहावत।

सब लोग बाहर निकल जाओ हम एक महीने मरम्मत के लिए बन्द कर रहे हैं।
ब्लू ड्रैगन बन्द हो रहा है ?
WHAT? HUH? WHY?
FALK & BARRY 3/23

मि० वौंग ब्लु ड्रैगन को मरम्मत की जरूरत नहीं है।
हो जाएगी, अगर बन्द नहीं किया।
किसने बन्द करने को कहा ?
उसने कहा था।

मोती···सोना सब गया ?
'गुरू' तुम झूठ बोलते हो, कौन ले गया उसे ?
तुम सब अपने जबड़े पर देखो वह अपना निशान छोड़ गया है।
? ?
FALK & BARRY 3/24

फैन्टम ! तुम उसका पीछा करना चाहते हो ?

पुलिस ! तुम्हें गिरफ्तार किया जाता है।
किस लिए ?

तुम्हें लूटपाट करने के लिए गिरफ्तार किया जाता है··· ओबांगी के मोती और तेज़ का सोना।
अच्छा ? सबूत दो, तुम्हारा प्रमाण कहां है ?

कर्नल बोरुबू तुमने कहा था प्रमाण यहीं मिलेगा।
मुझसे कहा गया था मिलेगा

सेफ में नकली तला है, यह रहा सबूत, ओबांगो का लाल मोती, तेज की एक सोने की कान की बाली। (वह छोड़ गया इन्हें)।
चलो गुरू !
TALK & BARRY 3/25

फैंसले के लिये वापिस जंगल।
!
!
कहावत है कि 'ऐसा भी समय होता है जब फैन्टम शहर की सड़कों पर चलता है।

मोती और सोना जो तुमने छीना था।
एक आम आदमी जैसे।'

TALK & BARRY 3/26
यह वैसा ही एक समय है।

जाकाल वह कौन है ?
मुझे··मुझे पक्का नहीं मालूम
TALK & BARRY 3/27

यहीं रूको।
??

चलते-फिरते भूत नमस्कार।
!!
अब इन्हें मालूम हो गया।

चलते-फिरते भूत तुम्हें देख कर मुझे खुशी हुई।
धन्यवाद टोमा, अब हम जाते हैं।
!!

हमें भूख लगी है खाना दो।

तुम जंगल में पले हो, यहां रसभरी और नटस लगे हैं, तोड़ कर खालो।
'बदमाशों के साथ फैन्टम कठोर है' प्राचीन जंगली कहावत।
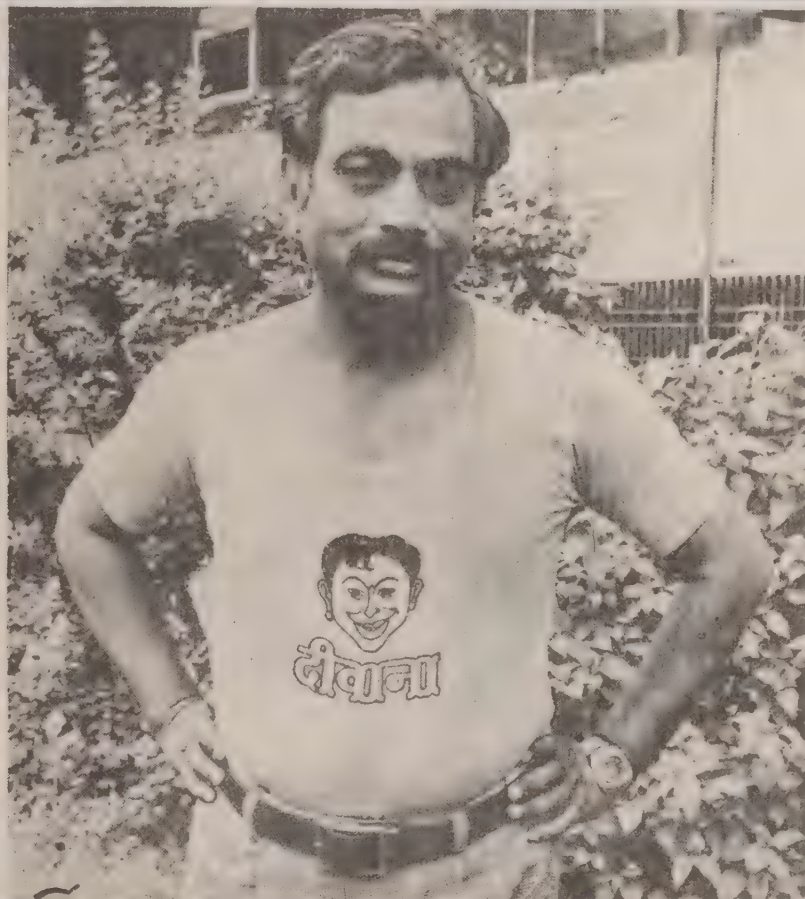
ताएक्वोन्डो

यह है ताएक्वोन्डो का एक और रोमांचकारी भाग जिमि जगतियानी द्वारा जिनके कई स्कूल देश के कई भागों में हैं तथा जिन्हें स्वयं ब्रूसली से शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त है।

चोंग-गुल-डियोगी एलगुल मक्की (ऊंचाई से धक्का देने की मुद्रा)

मुद्रा में खड़े होओ, दायें हाथ को आगे बढ़ाकर विद्रोही की आंख तक ऊंचा लाओ—सिर पर लाठी से हमला शुरू होने पर दायें हाथ से सिर की रक्षा करो। साथ ही बायें हाथ से लाठी का निचला सिरा कस कर पकड़ उसे तेजी से दूसरी दिशा में घुमा विद्रोही का सन्तुलन खराब कर दो।

अपचा पुसुगी (पाठ-5 के) विद्रोही के चेहरे पर प्रहार करो, अगले ही क्षण, लाठी छीन ली जाती है। इस प्रकार सुरक्षा पूरी कर आक्रमण बेकार कर दो।

X 3

X

X 1

X 2

पाठ १२ पिस्तौल से सुरक्षा

हमलावर अचानक सामने आकर हमला किए जाने वाले के हाथ ऊपर करवा लेता है (Pic-y) सुरक्षात्मक हमला बिजली की फुर्ती से शुरू होता है। हमलावर के दोनों हाथ कमर के पीछे पकड़ लिए जाते। हथियार वाला हाथ पूरी तरह बेकार कर दिया जाता है। दायें हाथ की हथेली से नीचे की ओर दबाव डाला जाता और बचाव करने वाले का बायां हाथ हमलावर की कोहनी को बाहर की तरफ मोड़ता है जैसा कि तस्वीर में दर्शाया जा रहा है। (y-1) बचाव करने वाला एक अन्तिम कदम आगे को लेता है जिसमें पिस्तौल वाले हाथ पर नीचे की ओर दबाव डाल, हमलावर का सन्तुलन बिगाड़ उसे नीचे गिरने पर मजबूर कर देता है जैसे कि Y-2 तस्वीर में दिखाया गया है। हमलावर जमीन पर गिर जाता है तथा बचने वाला हमलावर की गरदन पर एक तेज प्रहार करता है या गला घोटने की पकड़ का प्रयोग करता है जैसाकि (Pic y-3) में दिखाया गया है।

Y

Y-1

Y 2

Y 3
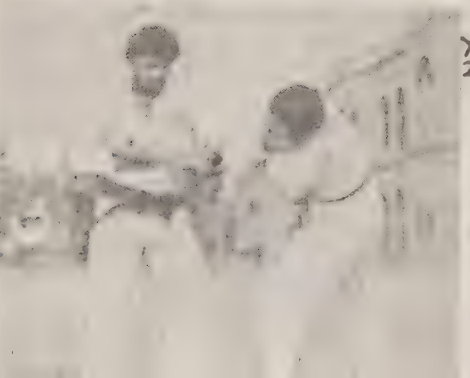
दीवाना कार्ड मोड़कर देखिये

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये

सीमेंट कंक्रीट जंगल

हर शहर व राजधानी में सरकारें अपने कर्मचारियों के लिये सीमेंट के डिब्बेनुमा क्वार्टरों की लायनें पर लायनें जोड़ती जा रही है। जिन्हें देखने में नयनों को सुख नहीं मिलता और रहने वालों के लिये सुविधाओं का अभाव। गर्मियों में तो यह डिब्बे भट्ठी की तरह तप जाते हैं। सारे लोग शाम व सुबह बाहर निकल गली या पार्क में बिताने पर मजबूर हो जाते हैं। दिल करता है काश यह ब्लाक इसके होते—क्या पृष्ठ मोड़ मोड़ कर देखें

पेड़ लगाइये हंसिये हंसाइये

... जीवन में पेड़ों का बहुत महत्व है । हमारे वेद पुराणों ... पेड़ों को मां-बाप का दर्जा दिया गया है । पुराने जमाने में हर व्यक्ति पांच पेड़ लगाता था व जीवन भर उनकी देखभाल करता था पुत्र समझकर/। हमारे जीवन की और खुशहाली की नींव यह पेड़ हैं । आप भी सुस्ती छोड़कर पेड़ लगाइए । आप एक राष्ट्रीय कर्तव्य कर रहे हैं । पेड़ों के महत्व पर आपको बहुत सा साहित्य मिलेगा, उसे पढ़िए– हम यहां आपको बताना चाहते हैं कि पेड़ लगाने पर आपको हंसने हंसाने का मौका भी मिलेगा, कई लाभ होंगे, पेड़ों का दीवाना महत्व हम समझाते हैं कि पेड़ क्यों लगाने चाहिएं?! तो शुरु हो जा शुरू।

पेड़ आपको फल देगा । आपकी नजर तेज है तो उस फल के सहारे आप और कई तरह के फल पा सकते हैं ।

आपके लगाये पेड़ पर सावन में लड़कियां झूला डाल कर झूलेंगी तो आपको ऐसा आनन्द प्राप्त होगा मानो कोई आपके गले में ही बांहों का झूला झूल रहा हो । पेड़ आपको अपना ही अंग लगेगा ।

पेड़ आपको रोमांटिक वातावरण पैदा करके देते हैं । रोमांस तीसरे स्टेज पर पहुंचने पर पर्दे का काम भी करते हैं ।

यदि कोई ऋषि या मुनि गुस्से में आकर आपको श्राप देकर बन्दर बना दे तो आपको भटकना नहीं पड़ेगा । आपका अपना लगाया पेड़ आपका घर बन जायेगा ।

पेड़ आपको गर्मी में छाया प्रदान करेगा । पेड़ों के नीचे छाया मिलती है ।
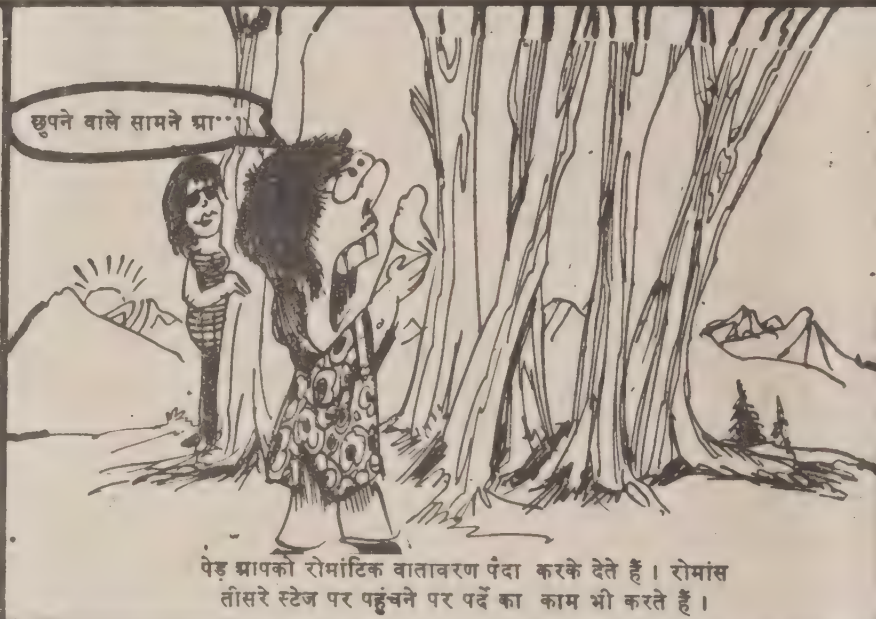
आपके लगाये पेड़ को कोई छेड़ेगा तो आपको गुस्सा आयेगा और आपको लड़ने का सुनहरा मौका मिलेगा। आपने जो जूड़ो कराते सीख रखा है उसे आजमाने का यही समय है।

पेड़ आॅक्सीजन छोड़ते हैं। आपकी खिडकी के सामने आपका लगाया पेड़ होगा तो आॅक्सीजन भरपूर मिलेगा और आप मियां बीबी बिना सांस चढ़े अधिक समय तक तू-तू मैं-मैं कर सकते हैं। पड़ौसियों पर रौब बैठेगा और वह आपसे लड़ाई मोल लेने से कतरायेंगे।
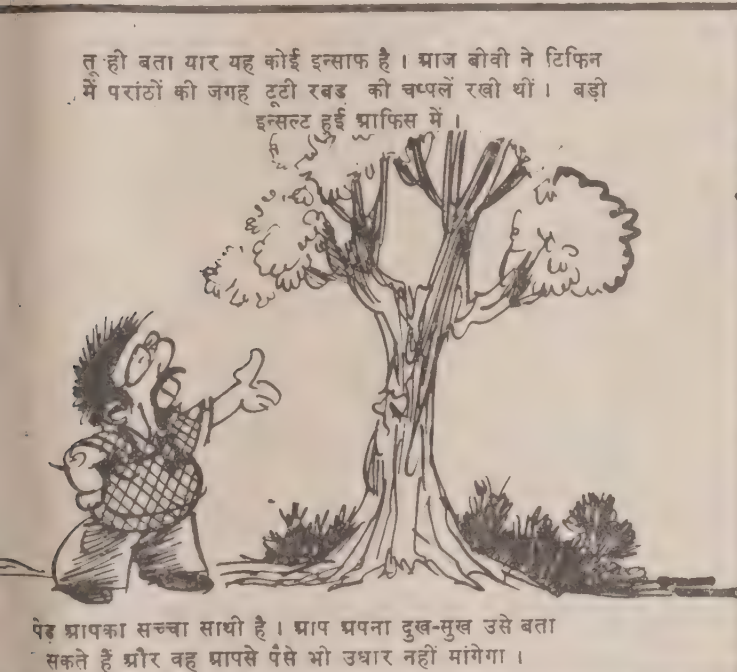
पेड़ आपका सच्चा साथी है। आप अपना दुख-सुख उसे बता सकते हैं और वह आपसे पैसे भी उधार नहीं मांगेगा।
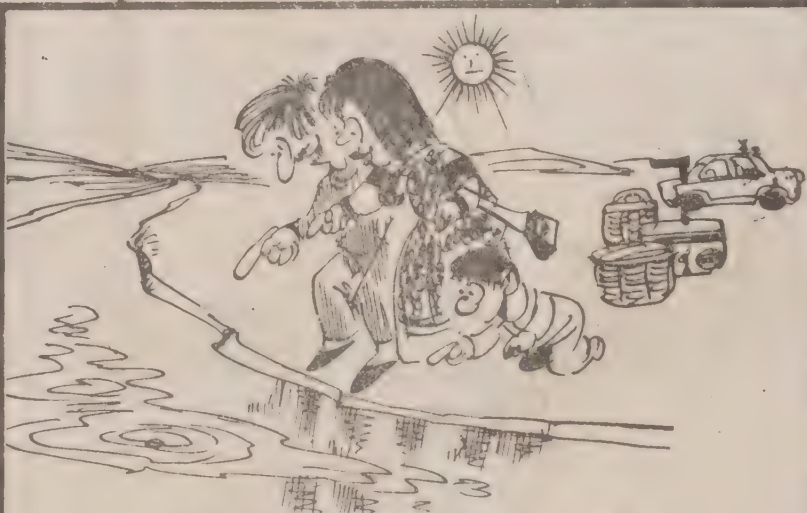
पेड़ जमीन का कटाव रोकते हैं। पेड़ अधिक होंगे तो मिट्टी नहीं बहेगी और नदियां साफ होंगी। आपकी जेब से पानी में चवन्नी अठन्नी गिर जाये तो नजर आएगी। कोई स्नान कर रही होगी तो पिक्चर ज्यादा क्लीयर नजर आयेगी।

आप अपने पेड़ की चोटी पर अपने टी वी. का एंटेना लगा सकते हैं। आपके टी. वी. में सबसे ज्यादा अच्छी शार्प पिक्चर आएगी। हो सकता है काबुल, ल्हास और झुमरी तलैया के प्रोग्राम भी आय।
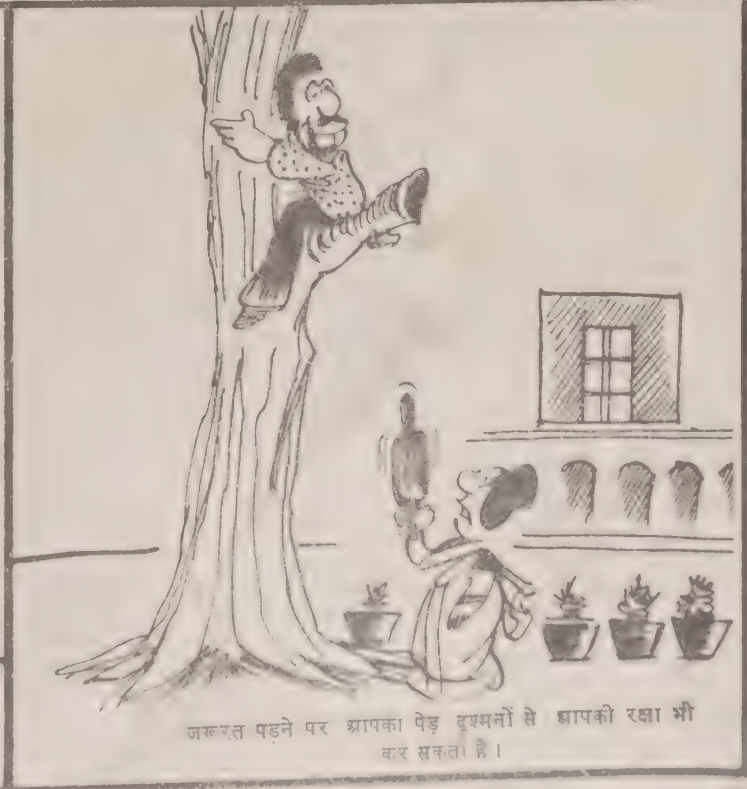
जरूरत पड़ने पर आपका पेड़ दुश्मनों से आपकी रक्षा भी कर सकता है।
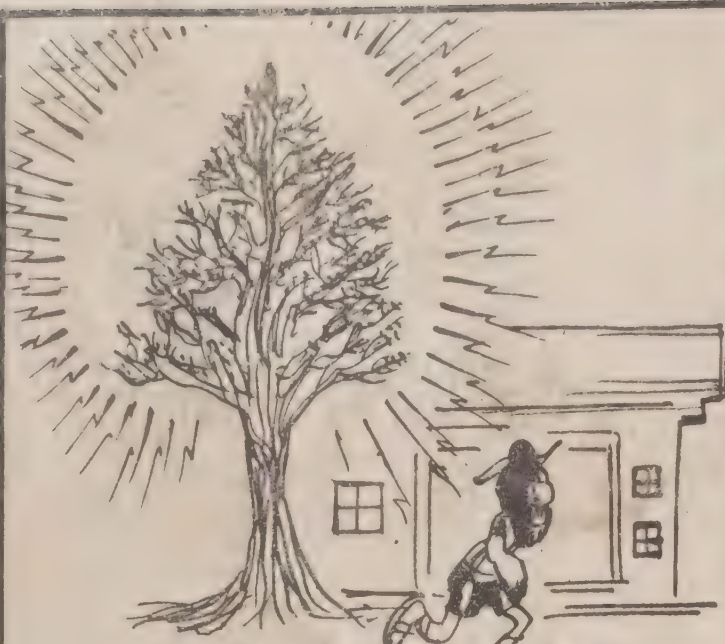
आपका लगाया पेड़ घर के पास ही है तो आपको घर में एलार्म घड़ी रखने की जरूरत नहीं। रोज सुबह साढ़े चार बजे पेड़ पर रहने वाली चिड़ियों का शोर आपको जगायेगा। आप सैर करने जा सकते हैं और सेहत बना सकते हैं।
पेड़ आपको कई तरह के लुभावने सीन देखने में सहायता कर सकता है। आपको अपनी मंजिल के और निकट ला सकता है।
अपने पेड़ों को देख आपके दिल में कविता लिखने की इच्छा जागेगी। आप कवितायें लिख-लिखकर सम्पादकों को भेज सकते हैं। आपकी कविता के घटियापन को देख अधिकतर सम्पादक सन्यास धारण कर लेंगे। नये सम्पादकों को अवसर मिलेगा जिसका सारा श्रेय आपको व आपके पेड़ों को होगा।
आपके पेड़ ने आपके घर को कवर कर रखा है तो आपको सफेदी करवाने की जरूरत नहीं। पेड़ पर बैठने वाले पक्षियों की बीट निरन्तर सफेदी करती रहेगी।
आपका घर ताजमहल की तरह चमकता रहेगा।
हाय ! मुझे क्या पता था तुम कद्दू की सब्जी से इतनी नफरत करते हो।
आप जीवन में हर तरफ से निराश हो चुके हैं तो अपने लगाये पेड़ की डाल पर ही फांसी लगाकर सब दुखों से मुक्ति पा जाइए।
मरने के बाद उसी पेड़ की लकड़ियां आपका दाह संस्कार कर सकती हैं। कटे पेड़ के ठूंठ पर आपके नाम की तख्ती या प्लेट चिपका कर उसे स्मारक का रूप दिया जा सकता है। आपने देखा कि पेड़ ने मरते दम तक आपका साथ निभाया।
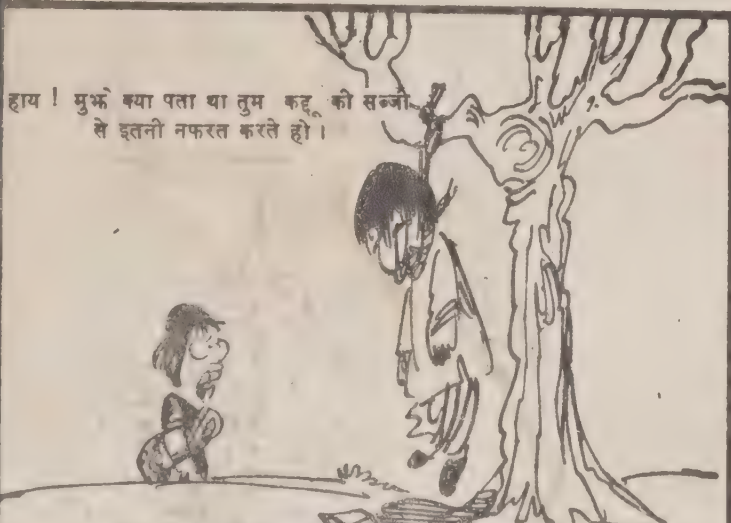
प्रवेश निःशुल्क
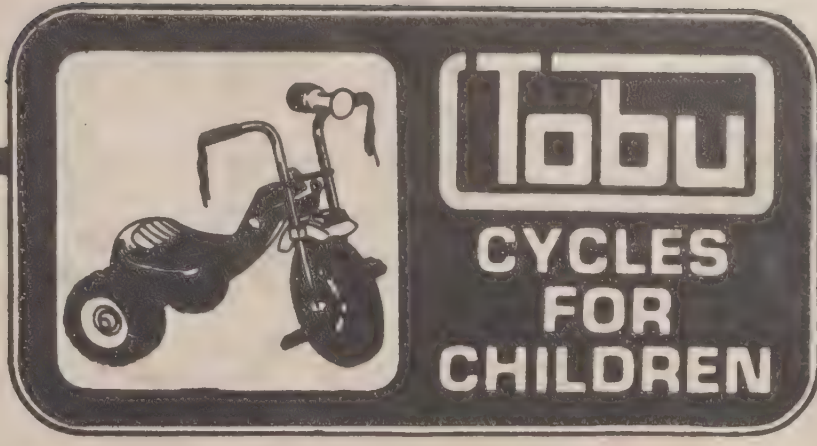
रंग भरो प्रतियोगिता- १ अंतिम तिथि - १३-८-८३

इस प्रतियोगिता में १५ वर्ष की आयु तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं, ऊपर दिये चित्र में अपने मन चाहे रंग भरिये और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये। जिस चित्र में सबसे सुन्दर रंग भरे होंगे उसे प्रथम पुरस्कार के रूप में एक ट्राईसिकल दिया जायेगा और उससे कम सुन्दर चित्र को एक आटोमैटिक खिलौना पुरस्कार स्वरूप दिया जायेगा। सम्पादक का निर्णय अन्तिम और सर्वमान्य होगा। इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा।

पताः दीवाना ८ बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

नीचे दिया कूपन साफ अक्षरों में केवल हिन्दी में भरिये।

नाम .... उम्र ....

पता ....

....

दीवाना वर्ग पहेली

20 रु. इनाम जीतिये

इस वर्ग पहेली में १ व ३ ऊपर से नीचे फिर २-व ४ बायें से दायें पढ़ने पर ऐक कहावत बनेगी।

संकेत

जरा वह कारज हाँडी बेची चाप में से अनावश्यक माल निकालो और कहावत बनाओ।

अन्तिम तिथि-२३-८-८३

	1
2	
	3
4	

नाम ———————————

———————————

पता ———————————

———————————
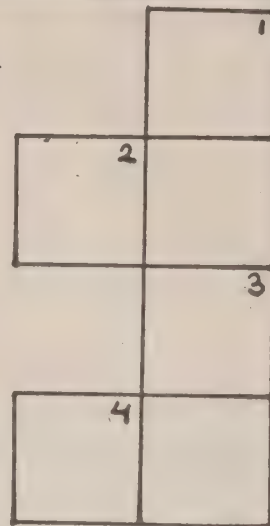
तीन कटपीस

—राजेन्द्र चंचल

वह बोले—
'पत्नी के सामने
मैं तो
कुछ भी नहीं
सकता बोल
क्योंकि मेरा है
(इस घर में)
चमचे का रोल !

सभी वादों में
बढ़िया वाद—
धन्यवाद !

वो
हरदम
हैं यही गाते
—हम बैठे-बैठे
कुर्सी पर
मर क्यों नहीं जाते।'

पृष्ठ ३५ से आगे

पने हाथ से तोड़ देने के ख्याल से उसने खपची र जोर से हाथ मारा तो खपची तो उछलकर नकल गयी पर उस वृक्ष में उसका हाथ फंस या। वह जोर लगाता रहा पर वृक्ष का तना तना मोटा था कि न वृक्ष टूटा न ही उसका ाथ निकला। चार पांच दिन बाद जब कड़हारा वहां आया तो उसने देखा वहां एक स्थिपिंजर पड़ा है जिसका बाजू अभी तने में फंसा है। दरअसल भूखे भेड़ियों ने उसे नोच नोच कर खा डाला था।

यूनान में पेंक्रेशन की प्रतियोगिताएं इतनी वीभत्स होती थीं कि कुश्ती लड़ने के बाद पहलवानों को उनके करीबी मित्र और यहां तक कि घरवाले भी न पहचान पाते। इसी प्रतियोगिता में एक अद्भुत घटना घटी। एरेंचियन नामक यूनानी पहलवान इतना शक्तिशाली था कि उसका सामना करने कोई भी मैदान में नहीं उतरता था। उसकी ललकार को सुनकर रोम के पहाड़ों से एक दैत्याकार प्रतियोगी मैदान में उतर आया जिसका शरीर इतना बलिष्ठ था कि लोग उसे देखते ही सिसकार उठे। दोनों में युद्ध शुरू हुआ।

कई घण्टों तक उठा-पटक होती रही लेकिन कहीं से भी कोई परिणाम नजर नहीं आया। दोनों की शक्लें घूंसों से इस कदर बिगड़ चुकी थीं कि उन्हें पहचान पाना असम्भव हो गया था। एरेंचियन ने अंतिम दाब लगाकर दैत्याकार प्रतियोगी की टांगों को अपनी टांगों से जकड़कर कड़कड़ा शुरू कर दिया तो उसके प्रतियोगी ने एरेंचियन की गर्दन को पकड़ लिया। दोनो के दाव इतने सशक्त थे कि दोनों अपने आप को मृत-प्राय: समझने लगे। दैत्याकार प्रतियोगी की सांस उखड़ने लगी तो हाथ उठाकर अपनी हार मान ली किन्तु जब निर्णायक पास आये तो उन्हें पता चला कि एरेंचियन कैसे हाथ उठाता वह तो मर चुका था। पर फिर भी उसे मरणोपरान्त विजयी घोषित कर दिया गया क्योंकि उसके प्रतियोगी ने जीतकर भी हाथ उठा दिया था पर एरेंचियन मरता मर गया लेकिन हार नहीं मानी।...

आइए, अब जरा महिला पहलवानों की शक्ति का भी जायजा ले लें। पिछले वर्ष पंजाब के सामाना जिले में महिला पहलवानों का एक दंगल आयोजित किया गया था इसमें महिलाओं की तीन जोड़ियों ने हजारों दर्शकों की भीड़ (स्त्री-पुरुष, बूढ़े-नौजवान सभी मौजूद थे) के समक्ष जिस प्रकार के करतब दिखाये वह अश्लील तो थे पर रोचक और अभूतपूर्व थे।

दंगल के लिए एक बुजुर्ग व्यक्ति को रेफ्री बनाया गया था। महिलाएं लड़ते-लड़ते उसे पीट देती थीं और कई बार उसका पाजामा भी उतार देती थीं (इससे दर्शकों को भरपूर मजा मिलता था)। ●

पृष्ठ ३६ से आगे

देश के बुद्धिजीवी वर्ग तथा विद्यार्थियों से अपील है कि वे गधों के ऐतिहासिक सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक महत्व पर खोजकर उसे प्रचारित प्रसारित कर हमें अनुगृहित करें। देश के साहित्यकारों को यह भूलना चाहिये कि गधों ने साहित्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कृष्ण चन्दर 'एक गधे की आत्म कथा, तथा 'गधे की वापसी' नामक कृतियों की रचना करके ही प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचे है। पुराणों में वर्णित 'गर्दभ स्तोत्र' तथा 'गर्दभ मंत्र' का सामूहिक रूप से उसी प्रकार पाठ करना चाहिए जैसे रामायण और भजनों के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में शिक्षा स्तर की कमी तथा फेल होने वाले विद्यार्थियों की बढ़ती हुयी जमात का मुख्य कारण हमारी घोर उपेक्षा है। विद्यार्थियों को चाहिए कि प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में 108 बार गर्दभ मंत्र 'ओम् गर्दभः जयहि का विधि पूर्वक पाठ करें, दुनिया की कोई ताकत उन्हें फेल नहीं कर सकती। यह योग स्वानुभूत है। शोधार्थियों को पी० एच० डी० करने के लिए गधों पर विषयों का चुनाव करना समीचीन होगा। उनके मार्ग दर्शन के लिए मैं अपनी 'आनरेरी' सेवायें समर्पित करता हूं। अंत में मैं पुनः अपने सभी जाति भाइयों-यथा

जो गलियों में डोले वह कच्चा गधा।
जो कोठे पर बोले वह सच्चा गधा,
जो खेती में दीखे वह फसली गधा,
जो माइक पर चीखे वह नकली गधा,
जो जनता में व्यापे वह असली गधा

सभी से अनुरोध करता हूं कि एक जुट होकर सारे देश को गधा अभयारण्य बनाने के लिए कृत्य संकल्प हो जायें। जय भारत, जय वैशाख नंदन। ●

चीनी मैरेज ब्यूरो—

चीन में नये-नये खुले ब्यूरो वालों ने अविवाहित लड़कियों द्वारा विवाह के लिए चुने जाने वाले युवक के सब गुणों को अन्तिम रूप दे दिया है।

युवक की आयु 25-30 वर्ष की होनी चाहिए, उसके पास विश्वविद्यालय की डिग्री होनी चाहिए। साथ ही उसकी लम्बाई 1.70 मीटर (5 फु. 7 इन्च) से अधिक बिलकुल नहीं होनी चाहिए।

इसके विपरीत पत्नी के इच्छुक पुरुष विशेष नखरे नहीं रखते, वे केवल चाहते हैं कि लड़की सुन्दर हो और 26 वर्ष से कम आयु की हो।

डैंटोज रंग भरो प्रतियगिता नं० २ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—आराधना गुप्ता, पंचकुईन हस्पताल, पंचकुईन आगरा-2 (उ. प्र.)
द्वितीय पुरस्कार—दर्शन सिंह ताड़ियाल पी. एण्ड टी. क्वाटर्स, बी-22, सेवानगर नई दिल्ली

दीवाना के अक ९ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

पा[1]	कि	स[2]	ता	न[3]
द	■	त	■	य
री[4]	ते[5]	ज	य	न
■	व[6]	पा	■	ता
बै[7]	र	न	सु	ख

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता—हरिओम गुप्ता, 33/318-सी, बीचला पाल, अजमेर (राज०)

आगामी अंक मानसून अंक

अपनी का
आज ही अ
एजेन्ट से सुरक्षि
करा लीजिये।

विशेष आकर्षण

- वर्षा ऋतु और हास्य का छाता
- बरसातों में हुई कुछ न भुला पाने वाली दीवानी घटनाएं।
- वर्षा में कुछ और वर्षा !

साथ में **सभी स्थाई स्तम्भ**

दिलीप कुमार द्वारा श्री आर. पी. सिंह, सदर प्रखंड मोतिहारी 18 वर्ष, शतरंज खेलना।
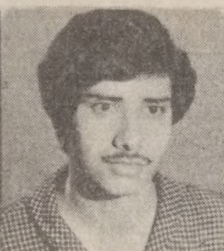
अशोक बोहरा, गढ़ हिम्मतसिंह सवाई माधोपुर, 20 वर्ष, क्रिकेट, संगीत तथा दोस्ती करना।
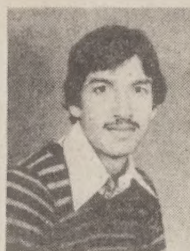
एस. शर्मा द्वारा एस. डी. ओ. आई. सो. एच. ई. जी. 15, आदर्श नगर, भिवानी, 20 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

रमेश मुदगल मैसन कोर्ट, सरकुलर रोड, रोहतक, 23 वर्ष, प्यार करना, डांस करना।
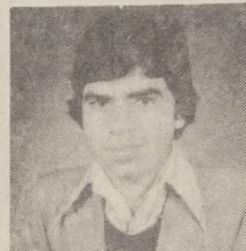
विनोद शर्मा, हरियाणा ग्रामीण क्षेत्रीय बैंक, कितलाना भिवानी, 23 वर्ष, बड़ों का आदर करना।

एम. के. मितिलिसना, वाई. नं. 7 वायहील मैजवहाल, काठमांडो नेपाल, 13 वर्ष, पत्र-मित्रता।

पवन कुमार स्टाल, बरपे असम, 16
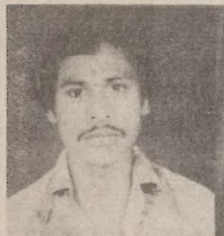
सतीश कुमार, (मा०) द्वारा पूनम नावल स्टोर, बराही मोहल्ला, हापुड़, 22 वर्ष, डिस्को डांस करना।

विद्यासागर पाटिल, सड़क नं. 2 बी, 21, ब्लाक सेक्टर-6 भिलाई नगर (म. प्र.) 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।
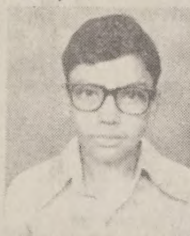
सुनील कुमार सखूजा, 93 डाडी पुर मौहल्ला देहरादून, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

शंकर ममतानी, 5-5-81 गोशा महल हैदराबाद, 18 वर्ष, चित्रकला।
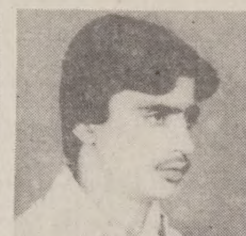
मुहम्मद हसन बारसी मौहल्ला कोट गर्बी सम्भल (उ. प्र.) 19 वर्ष, क्रिकेट खेलना।
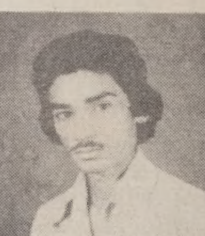
दिनेश चन्द्र कुमरावत, रणजीत चौक, बड़वानी, (म. प्र.) 20 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

सुरेश बा. बिल्डिंग, सी 20 वर्ष, दी
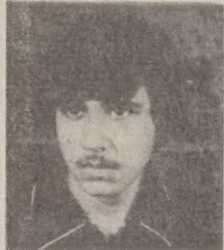
लक्ष्मण रोमू, स्वास्तिका फर्टिलाजर, बहादुर गढ़, पटियाला, 16 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।
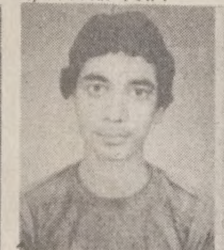
बलविन्दर कुमार धींगड़ा, 28/11, विष्णु पुरी, रामपुर रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) 17 वर्ष, संगीत करना।
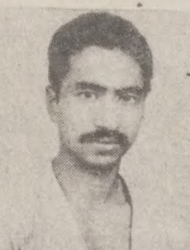
सुनील आनन्द, 675 रघुबीर नगर नई दिल्ली-27, 20 वर्ष, रेडियो श्रोता।

तरुण शर्मा, त्यागी मोड़, पुण्य भवन, देहरादून, 15 वर्ष, डाक टिकटसंग्रह करना।
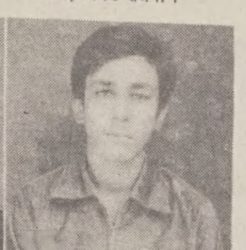
राजेश कुमार अरोड़ा, इन्दिरा कालोनी, पठान कोट (पंजाब) 15 वर्ष, क्रिकेट, तैराकी।

कपिलमुनि ताम्राकार, 7/831, मरुटोल, काठमाडौं (नैपाल), 22 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

किशोर गोस्व मालवीय गंज 18 वर्ष, फि
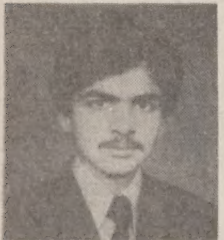
प्रताप कपूर, जवाहर नगर रोहतक, 19 वर्ष, समाज सेवा, रेडियो सुनना आदि।
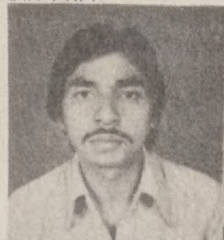
वीरेन्द्र चौहान, 148 मदरसा मामन रोड बुलन्दशहर, 23 वर्ष, अभिनय गायन।

नवनीत तलवार, बी-5, डाकतार कालोनी, जयपुर, 14 वर्ष, कवितायें लिखना।

हेल्थ रंजित प्रकाश, हेल्थ रंजित मनियार, काठमाड़ो (नैपाल), 16 वर्ष, बाक्सिंग।
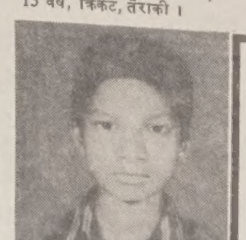
संजय कुमार सिन्ध, गोपालगंज (बिहार), 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना, साईकिल चलाना।
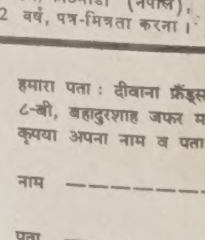
हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ

नाम ————————

पता ————————

————————

आयु ———— शौक ——

————————

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे जीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें.

तेज प्रेस, नई दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

GET THEM RIGHT AWAY FIGHTING-T-SHIRTS FROM SUN

They're here now, a great new line in T-Shirts from SUN, the magazine that has always given you action. This is our Martial Arts T-Shirts series and each design is a breath-taking, super-charged affair.
You can order these mind-stopping T-Shirts by post or collect them personally from the SUN office in New Delhi. Each T-Shirt is Rs. 25/- only and those who would like them by mail should add Rs. 5/- for postage (i.e. send us Rs. 30/-).
We have following combinations to offer in 34" and 36" size, round neck

Design	Description	Code
1 DRAGON	Black on Red	D/BR
	Black on Yellow	D/BY
2 KUNG FU	Red on Yellow	KFU/RY
	Black on Yellow	KFU/BY
	Black on Blue	KFU/BB
	Black on Red	KFU/BR
3 TIGER CLAWS	Red on Yellow	TC/RY
	Black on Red	TC/BR
	Black on Blue	TC/BB
	Black on Yellow	TC/BY
4 SIDE KICK	Black on Red	KAR/BR
	Black on Yellow	KAR/BY
5 KARATE	White on Dark Blue	K/WB

5 KARATE
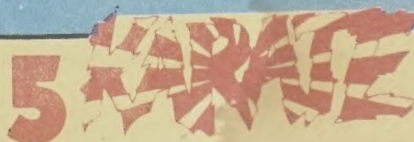
Write with your remittance to:

SUN MAIL ORDER DEPARTMENT
8-B BAHADURSHAH ZAFAR MARG NEW DELHI 110002.

NO VPP PLEASE!

Postal Orders/Demand Drafts to be drawn in favour of SUN PUBLICATIONS, and mailed to ve address. Please indicate code number of the T-Shirt and the size you want when you order.

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82

जीवन और हनु की बातचीत

संचारण के बारे में

आप जैसे नवयुवक अपने जीवन में संचार के महत्व को समझें, इसीलिये, 1983 को सभी जगह 'विश्व संचार वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। पर संचारण होता क्या है ?

यह दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया है । यह इस समय भी, जबकि आप इसे पढ़ रहे हैं, हो रही है : जीवन और हनु आपके साथ सम्पर्क कर रहे हैं ।

जीवन जहां है, किसी न किसी रूप में संचारण होता ही है, भले ही वह कितने भी अपक्व तरीके

से होता हो । मामूली कीड़े-मकौड़ों, सभी तरह के पेड़-पौधों व जानवरों से ले कर सबसे अधिक विकसित जीवधारियों तक सभी....एक दूसरे से संचार व सम्पर्क करते हैं । और आवाज, इशारे, चेष्टाएं, खुशबू, स्पर्श, रंग—यहां तक बिजली के करंट तक को प्रयोग में लाया जाता है ।

सच तो यह है, एक व्यस्क जानवर के पास अपने भाव प्रकट करने के 15 से 35 तक विभिन्न तरीके हो सकते हैं ।

मध्य अमेरिका का चीखने वाला बन्दर नौ विशिष्ट तरह से चीख सकता है । एक चीख अपनी जातिवालों को सम्भावित हमले या आक्रमण की चेतावनी देती है । दूसरी का, अर्थ होता है, "भोजन के लिये इधर आओ" । किसी नर बन्दर के राजी न होने पर शोर मचता है और झगड़ा होने लगेगा ।

उल्लू अपनी चोंच से टर्राकर, पंखों को साथ-साथ फड़फड़ाकर यहां तक गा कर संकेत देता है । उल्लू का गाना, जोर से घुघुआने से लेकर चीं चीं करने, सीटी बजाने व गिटकिरी के रूप में होता है । खतरा आने पर जब वह छिप जाता है तो रैटल (अमरीकी) सांप की तरह सावधान करने के लिये भिनभिनाता है । जंगल में प्रेम जताते समय उल्लू झुककर नमस्कार सा करते हैं, नाचते हैं और ऊपर नीचे कूदते हैं । बचाव के लिये अपने शरीर को हिलाते और चोंच से टर्राते हुए अपने डैनों को थोड़ा सा फैलाकर अपने पंखों को फुला लेते हैं ।

मधु-मक्खी के नाचने पर दूसरी मक्खियों को भोजन की नयी जगह के बारे में पता चल जाता है । अगर मधु-मक्खी मग्न होकर देर तक नाचती रहे तो यह बढ़िया भोजन का संकेत होता है पूंछ हिलाते हुए घूम घूम कर घेरे में नाच का अर्थ है खाना नजदीक ही है । 10 चक्कर लगाने का मतलब है खुराक 100 मीटर की दूरी पर है जबकि 1 चक्कर लगाने पर दूरी 10,000 मीटर समझ ली जाती है । यदि खाना सूर्य की दिशा में होता है तो मधु मक्खी ऊपर की ओर पूछ हिलाकर नाच करती है शहद के छत्ते के विपरीत इसके शरीर का ज कोण होता है उससे उड़ान की दिशा पता चल है । इस तरह का नाच 'मधुमक्खी स्काउट' नये स्थल के मिल जाने पर करती है ।

जानवर व पक्षी भले ही बोल नहीं पाते हैं–फि भी वे एक दूसरे को अपने मन की बातें भली भांति समझा देते हैं ।

जीवन बीमा आपके भविष्य को सुरक्षित रखने का सबसे विश्वसनीय तरीका है । इसके बारे में और जानकार हो जाइये ।

भारतीय जीवन बीमा निगम

1983 WORLD COMMUNICATIONS YEAR